



75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

क्षितिज

आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक : 2021 - 22



इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी
फुसतगंज - अणेठी



शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेंले ।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय उच्चन अकादमी
का अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति कृतज्ञता से पूरित

शत - शत वन्दन और नमन।

जय हिन्द जय भारत।

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



क्षितिज

आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक : 2021 - 22



संरक्षक

श्री कृष्णेन्दु गुप्ता

निदेशक, इगुआ

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी

फुर्सतगंज - अमेठी

विशेषांक : 2021-22

क्षितिज

आज़ादी का अमृत महोत्सव विशेषांक : 2021 - 22

सलाहकार एवं सम्पादन मण्डल

मुद्रक एवं तकनीकी सलाहकार

श्री डी.के. मल्होत्रा

सलाहकार सिमुलेटर अभियन्ता

विशेष सहयोग

ग्रुप कैप्टन संदीप पुरी (से.नि.)

(प्रशासनिक अधिकारी)

श्री संजय बिसारिया

(वरिष्ठ रेडियो अभियन्ता)

श्री विनय सिंह (केम)

श्री अरुण तिवारी (वायुयान अभियन्ता)

मुद्रक सहयोग

श्री मृदुल कुमार

श्री संजय कुमार जैन

श्री वेणु गोपाल

श्री गोपा कुमार एस

श्री मानस चौधरी

श्री रमेश यादव

श्री संजय शर्मा

श्री सुभाष

श्री अशोक गिरि

सम्पादन मण्डल

श्री महेश सिंह भदौरिया

श्री तेज बहादुर सिंह

श्री शिवविलास तिवारी

श्री चन्द्रभूषण शर्मा

श्री दिलीप कुमार पाण्डेय

श्री अरुण कुमार मिश्रा

श्री नीरज त्रिपाठी

श्रीमती रेखा नरेश

श्री सुनील कुमार

श्रीमती रेशमा बेगम

श्री शिव कुमार

श्री धर्मेश कुमार गिरि

श्री आदित्य सिंह गढ़वाल

प्रधान सम्पादक

राम किशोर द्विवेदी



मिशन

गुणवत्तापूर्ण तकनीकी एवं वैमानिक उड़ान प्रशिक्षण
के लिए,

वैश्विक पटल पर उभरते उड़डयन तकनीक के क्षेत्र में
उत्कृष्ट संस्थान के रूप में पहचान बने।

उड़डयन बुद्धिमत्ता के मूल स्रोत के रूप में
व्यवसायिकता में उत्कृष्टता और नेतृत्व में

गुणवत्ता प्राप्त करने में प्रयासरत,
इग्रुआ विश्व स्तरीय पायलट उत्पाद

एवं

उड़डयन संवर्ग जो व्यवसायिक कुशलता
तथा सामाजिक व नैतिक संवेदनशीलता

के साथ विस्तृत

दृष्टिकोण को अपनाते हुए

समस्याओं के समाधान हेतु

कुशलता से आवेष्टित हो,

ऐसा लक्ष्य है।

प्राक्कथन



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी की हिंदी पत्रिका **क्षितिज** का आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक 2021–22 आप के हाथों में है। यह संस्थान वायुयान उड़ान प्रशिक्षण के लिये भारतीय उप महाद्वीप ही नहीं अपितु दुनियां के तमाम देशों में अपनी गुणवत्ता, क्रिया शीलता, अनुशासन व समय बद्ध उड़ान लक्ष की पूर्णता के लिये जाना जाता है। मुझे इस संस्थान का दायित्व संभाले तीन वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। निश्चय ही इस काल खंड में अकादमी ने उत्तरोत्तर प्रगति की है। स्वाभाविक भी है। इन वर्षों में अकादमी के सुरक्षा सहित प्रशिक्षण उड़ान के स्तर को और बढ़ावा मिला है। फुरसत गंज एयर फील्ड के अलावा बिरसी एयर पोर्ट में वर्ष भर नियमित प्रशिक्षण उड़ान के कार्य को अंजाम देकर सुयोग्य पायलटों की उत्पादकता को बल मिला है। फलतः संस्थान ने वित्तीय वर्ष (2021–22) में 19111 घंटे प्रशिक्षण उड़ान एवम 117 घंटे एक दिन में प्रशिक्षण उड़ान का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इगुआ के वैमानिक बेड़े में जल्दी ही पाँच वायुयान शामिल होने वाले हैं।

हम आत्म निर्भर भारत के सिद्धांत पर संस्थान की आत्म निर्भर योजना के तहत एक स्वदेशी उपक्रम एफ एस टी सी के साथ करार करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं जिसके अंतर्गत इगुआ से निर्गत प्रशिक्षित पायलट अपेक्षा कृत कम खर्च में कामर्शियल उड़ानों हेतु एयर लाइंस के वायुयानों पर टाइप रेटिंग कर सीधे वाणिज्यिक पायलट बनने में समर्थ हो पायेंगे।

इगुआ बोइंग कम्पनी के साथ मिलकर सी बी टी ए कार्यक्रम के तहत सेफटी और स्किल को पायलट प्रशिक्षण प्रोग्राम में समाहित कर आज के वैश्विक स्पर्धा के मद्देनजर अपने को श्रेष्ठतर बनाने के लिये आगे



नागर विमानन सचिव श्री राजीव बंसल व श्री पी.के. ठाकुर उप महानिदेशक मोका के साथ निदेशक इगुआ श्री कृष्णेन्दु गुप्ता



नागर विमानन सचिव श्री राजीव बंसल व श्री पी.के. ठाकुर उप महानिदेशक मोका जी का स्वागत करते हुए निदेशक इगुआ श्री कृष्णेन्दु गुप्ता

बढ़ रहे हैं।

रीजनल कनेक्टिविटी योजना के अंतर्गत उड़ान स्कीम इगुआ भी शामिल होने जा रहा है, जिसमें फुरसतगंज एयरफील्ड से सीधे अन्य शहरों के लिये उड़ाने सम्भव होंगी, यहा शीघ्र ही एयरपोर्ट टर्मिनल बनने वाला है। इगुआ शीघ्र ही अपने तयार पायलटों के लिये कैम्पस कराने जा रहा है जिसमें विभिन्न एयर लाइंस संस्थानों से वार्ता चल रही है।

स्वदेशी और आत्म निर्भरता का यह पथ निश्चय ही इस संस्थान को प्रसार देगा। इस पथ के पथिक अर्थात संस्थान के समस्त पायलट प्रशिक्षकों थल अनुदेशको एटीसी अधिकारियो, वायुयान अभियंताओं, तकनीकी स्टाफ एवं सभी कार्मिकों का हम अभिनंदन करते हैं। यह सर्व विदित है कि आने वाले समय मे देश दुनियां को उड़ान कौशल मे निपुण पायलटों की अत्यंत आवश्यकता है। समयावधि मे कुशलतम वायुयान चालक उपलब्ध कराना हमारी प्रतिबद्धता है। वायुयान उड़ान के साथ ही उड़ानसुरक्षा इसके मूल मे है जिसका निस्तारण पूरी तरह निष्पन्न होता है। इन सबके पीछे अकादमी का आत्मानुशासन है जो संस्थान से जुड़े जन जन को अपने अपने कर्तव्य के प्रति अभिप्रेरित करता रहता है। संस्थान के विकास के आयाम के रूप मे वायुयान अनुरक्षण अभियांत्रिकी स्कूल बहुत जल्दी शुरू होने वाला है। आधुनिक तकनीक से सज्जित ड्रोन उड़ान प्रशिक्षण कार्यक्रम इगुआ से सम्बद्ध होकर अन्तर्राज्यी विस्तार पा रहा है। हम अपने मूल कर्तव्य सुरक्षा सहित उड़ान प्रशिक्षण के निस्तारण के साथ राज भाषा, जनसूचना, स्वच्छता एवं पर्यावरण व अन्य भारत सरकार से निदेशित दायित्वों का निष्ठा पूर्वक एवं समयबद्ध अनुपालन सुनिश्चित करते है। सम्प्रति उड़ान अकादमी उत्तरोत्तर विकास के चर्मोत्कर्ष को प्राप्त करें। ऐसी हमारी प्रतिबद्धता है।

कृष्णन्दु गुप्ता
निदेशक



राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

- व्यक्ति के विचार ही उसके चरित्र को गढ़ते हैं इसलिए हम जैसा सोचते हैं, वैसे ही बनते जाते हैं।
- अगर आपका कोई एक काम भी किसी को सुख पहुंचा सकता है तो वह प्रार्थना में झुके कई हजार सिरों से बेहतर है।
- जीवन में कई बार ऐसा समय भी आता है, जब आपको अपने किसी विरोधी से सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में कोशिश यह रहे कि उसे प्यार से जीतने का प्रयास हो।
- इस दुनिया में सन्मुख में शांति लानी है तो युद्ध के खिलाफ एक वास्तविक युद्ध की आवश्यकता है, इसकी शुरुआत हमें अपने बच्चों के साथ करनी होगी, तभी वास्तविक शांति हो सकती है।
- जीवन को ऐसे जिएं जैसे कि आपको हमेशा-हमेशा के लिए इसी धरती पर रहना है।
- वह स्वतंत्रता किसी काम की नहीं, जिसमें आपको गलती करने की ही स्वतंत्रता न हो।
- ताकत शारीरिक क्षमता से नहीं बल्कि अदम्य इच्छा शक्ति से आती है।
- आपको तब तक किसी का महत्व नहीं समझ आता, जब तक कि आप उसे खो नहीं देते। इसलिए महत्वपूर्ण व्यक्ति के महत्व को समझें।
- कुछ भी करने से पहले विचार करें, आप कितनी भी कोशिश कर लें लेकिन कभी नहीं जान सकते कि आपके कार्यों का क्या रिजल्ट होगा इसलिए सिर्फ काम करने पर ही फोकस करें।
- किसी के स्वामिमान हानि से बड़ी कोई हानि नहीं होती, इसलिए स्वामिमान की रक्षा स्वयं करें।



आजादी का अमृत महोत्सव व स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भाषण देते हुए निदेशक



उपस्थित जन

नम्र निवेदन

नमस्कार,

भारत वर्ष अपनी आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष मना रहा है। हम सभी देशवासी भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले, स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में अपने जीवन का दीर्घ काल खण्ड यातनागृहों एवं जेलों में बिताने वाले लाखों बाल, वृद्ध, युवा और नर नारी अपने अपने हिस्से का संघर्ष करने वाले, जाति, धर्म, मजहब, भाषा, लिंग और वर्ग भेद को भुलाकर भारत माता को स्वतंत्र कराने में लगे रहे। अंततः भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। क्षितिज का एकादश संस्करण 2021-22 उन्ही अमर शहीदों की याद में है। उन सभी परमपूज्यों प्रातः स्मरणीय देश के शहीदों और सेनानियों के चरणों में क्षितिज के किंचित शब्द पुष्प अत्यन्त श्रद्धा एवं भाव से समर्पित हैं।



निवेदन है कि क्षितिज पत्रिका ने अपने गौरव पूर्ण प्रकाशन के एकादश वर्ष पूर्ण किये हैं। काल के कपाल पर यह शब्दों का मायाजाल मात्र है। जीवन में कर्म ही मान्य है। कर्म, कर्म के लिए ही करना है। कर्म की फल श्रुति उसके पूर्णतः मनोयोग से करने में और कर्म का फल त्याग करने में है। अतः मुझे नहीं पता मेरे द्वारा किया कर्म कितना अच्छा या बुरा है। फल दायी है या फल शून्य है। निन्दा या स्तुती का हेतु है। हमें कर्म ही करना है, इसका रस कर्तव्य पालन करते रहने में है। पत्रिका का शब्द समायोजन और संपादन एक कर्तव्य है जो राज भाषा के निमित्त है। राजभाषा जो देश की अस्मिता है। उसकी वाणी है। राष्ट्र की पहचान है।

इस वर्ष सूत्र गुजरात में आयोजित राष्ट्रीय राज भाषा सम्मेलन में मा0 निदेशक इग्रुआ के साथ मुझे भी सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिसमें मा0 गृह मंत्री भारत सरकार का राजभाषा विषय पर कालजयी भाषण सुनने को मिला। मा0 अमित शाह जी ने कहा भारत को एक राष्ट्र में बांधे रखने के लिए एक भाषा जरूरी है वह है हिन्दी। इसी के साथ उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण बात कही। उन्होंने कहा कि हिन्दी के साथ देश के सभी राज्यों में बोली जाने वाली भाषाओं का पूर्ण आदर हो। मा0 मंत्री महोदय ने कहा हिन्दी सरल और सहज हो और देश के सभी राज्यों में बोली जाने वाली भाषाओं के प्रचलित शब्द राज भाषा में सम्मिलित हो। सम्मेलन में बहुत सारे नेता, उच्चाधिकारी और देश भर से आये राज भाषा अधिकारी सम्मिलित हुए।

सम्प्रति मैं संस्थान के विद्वान लेखक, लेखिकाओं, कविओं और व्यंग्यकारों, सुधी मुदक सहयोगियों, कर्मठ सम्पादन मण्डल एवं पत्रिका से जुड़े सभी प्रबुद्ध जनों तथा पत्रिका के प्रकाशक श्री मोहित अग्रवाल, अग्रवाल प्रेस, रायबरेली का धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

निश्चय ही श्रीमान् राजीव बंसल जी, मा0 सचिव, नागरिक उड्डयन मंत्रालय व राजभाषा विभाग के उच्चाधिकारियों का क्षितिज सम्पादन मण्डल उनके कृपा पूर्ण आशीर्वाद एवं व्यापक दिशा निर्देशों का आभारी है।

अन्ततः यह 'अकिंचन' क्षितिज के सम्पादन कार्य में संरक्षण एवं आशीर्वाद के लिए श्रीमान् कृष्णन्दु गुप्ता जी मा0 निदेशक इग्रुआ का आभार व्यक्त करता है और आप सभी ज्येष्ठ, श्रेष्ठ एवं बुद्धि वरेण्य विद्वतजनों से निर्मल मति का आशीर्वाद चाहता है।
सादर!

- राम किशोर द्विवेदी



उपस्थित अधिकारी गण व प्रशिक्षणार्थी



उपस्थित प्रशिक्षणार्थी

जीवन के लिए आवश्यक जल

जीवन पाँच तत्वों से बना है धरती, जल, अग्नि, गगन और वायु। निश्चय ही यह पाँच तत्व ईश्वर की अपार देन है। संसार में न दिखाई देने वाला ईश्वर हम सभी की आस्था के अनुरूप अनेक नामों से हम सभी प्राणिमात्र की आस्था में व्यापत है। इन पाँच तत्वों में जल, जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है जितना की शेष सभी तत्व। हम सभी जनों का कर्तव्य है कि उसकी एक एक बुँद का संरक्षण करें। उसका अनावश्यक दुरुपयोग न करें। नीचे जल संचय करने के साधनों पर वर्णन किया गया है।



जल संचयन में घर की छतों, स्थानीय कार्यालयों की छतों या फिर विशेष रूप से बनाए गए क्षेत्र से वर्षा का एकत्रित किया जाता है। इसमें दो तरह के गड्ढा जिसमें दैनिक प्रयोग के लिए जल संचय किया जाता है और दूसरे का सिंचाई के काम में प्रयोग किया जाता है। दैनिक प्रयोग के लिये पक्के गड्ढे को सीमेंट व ईट से निर्माण करते हैं और इसकी गहराई सात से दस फीट व लंबाई और चौड़ाई लगभग चार फीट होती है। इन गड्ढों को नालियों व नलियों (पाइप) द्वारा छत की नालियों और टोटियों से जोड़ दिया जाता है, जिससे वर्षा का जल साधे इन गड्ढों में पहुंच सके और दूसरे गड्ढे को ऐसे ही (कच्चा) रखा जाता है। इसके जल से खेतों की सिंचाई की जाती है।

ग्रामीण क्षेत्र में वर्षा जल का संचयन वाटर शेड को एक इकाई के रूप लेकर करते हैं। आमतौर पर सतही फैलाव तकनीक अपनाई जाती है क्योंकि ऐसी प्रणाली के लिए जगह प्रचुरता में उपलब्ध होती है तथा पुनर्भरित जल की मात्रा भी अधिक होती है। ढलान, नदियों व नालों के माध्यम से व्यर्थ जा रहे जल को बचाने के लिए इन तकनीकों को अपनाया जा सकता है। गली प्लग, परिसेखा बांध (कंटूर बंड), गेबियन संरचना, परिस्रवण टैंक (परकोलेशन टैंक), चैक बांध/सीमेन्ट प्लग/नाला बंड, पुनर्भरण शाफ्ट, कूप डग वेल पुनर्भरण, भूमि जल बांध/उपसतही डाईक, आदि।

ग्रामीण क्षेत्रों में छत से प्राप्त वर्षाजल से उत्पन्न अप्रवाह संचित करने के लिए भी बहुत सी संरचनाओं का प्रयोग किया जा सकता है। शहरी क्षेत्रों में इमारतों की छत, पक्के व कच्चे क्षेत्रों से प्राप्त वर्षा जल व्यर्थ चला जाता है। यह जल जलमृतों में पुनर्भरित किया जा सकता है व जरूरत के समय लाभकारी ढंग से प्रयोग में लाया जा सकता है। वर्षा जल संचयन की प्रणाली को इस तरीके से अभिकल्पित किया जाना चाहिए कि यह संचयन/इकट्ठा करने व पुनर्भरण प्रणाली के लिए ज्यादा जगह न घरे। इस प्रकार से वर्षा जल का हम उपरोक्त तरीके से भण्डारण कर सकते हैं जो पीने के पानी की कमी को दूर करेगी और किसानों के लिए खेतीहर भूमि को अच्छी फसल उगाने के लिए सिंचाई में मदद करती है।

ग्रुप कैप्टन संदीप पुरी (से.नि.)

प्रशासनिक अधिकारी



नागर विमानन सचिव श्री राजीव बंसल व श्री पी.के. ठाकुर उप महानिदेशक मोका को स्मृति चिन्ह देते हुए निदेशक इग्रुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता



नागर विमानन सचिव श्री राजीव बंसल व श्री पी.के. ठाकुर उप महानिदेशक मोका के साथ निरीक्षण करते हुए निदेशक इग्रुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता



इगुआ के विजटिंग रजिस्टर पर हस्ताक्षर करते हुए नागर विमानन सचिव श्री राजीव बंसल के साथ निदेशक इगुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता



नागर विमानन सचिव श्री राजीव बंसल व श्री पी.के. ठाकुर उप महानिदेशक मोका के साथ मेस में भोजन करते हुए निदेशक इगुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता

अनुक्रमणिका

1. वायुयान अनुरक्षण के 75 सूत्र	कृष्णेन्दु गुप्ता	2
2. देश की स्वतंत्रता के प्रातः स्मरणीय अमर शहीद व सेनानी	क्षितिज की प्रस्तुति	6
3. अस्सी/बीस का सिद्धान्त	सी पी रनदेव	18
4. वायुयान	राजेश यादव	19
5. प्रदूषण	महेश सिंह भदौरिया	20
6. समय पर किये जाने वाले सुबह के नाश्ते का महत्व	रेखा नरेश	22
7. आकर्षण का सिद्धान्त	विजय कुमार यादव	24
8. फेमिनिज्म अथवा नारीवाद—क्या इसकी आवश्यकता है?	विद्या	27
9. ओणम – सुशासन की आशा	गोपा कुमार	29
10. भारत में वायु परिवहन के ऐतिहासिक तथ्य	तेज बहादुर सिंह	31
11. पन्नाधाय के बलिदान की कहानी	सिराज अहमद	33
12. संकल्प शक्ति	डी के मल्होत्रा	34
13. “जिन्दगी”	सुनील भटनागर	35
14. बेटा बेटा एक समान	शिव करन सिंह	36
15. योग की उपचार शक्ति	रवि कुमार सोनकर	37
16. ध्यान	राकेश सिंह	38
17. सेवाभाव – मनुष्यत्व का प्रथम लक्षण	योगेश चन्द्र भट्ट	39
18. शिक्षा	सरस्वती	40
19. आजादी	प्रीती सिंह	41
20. “श्री कृष्ण की 46 कलाएं”	डी०के० पाण्डेय	42
21. भारत का प्रथम नोबेल और अनुवाद	आदित्य सिंह गढवाल	44
21. कोरोना—काल का जीवन	अजय पाण्डेय	45
22. अग्निशमन सप्ताह महोत्सव 2022	सुनील कुमार	46
23. मेला मुझे बुलाता है।	रजनीश शुक्ल	47
24. तन के साथ मन का स्वस्थ होना जरूरी	सूबे.मे.शिवबरन पाण्डेय	47
25. सतर्कता विभाग के संक्षिप्त कार्यों के बारे में एक लेख	मृदुल कुमार	48
26. हाइपोक्सिया	संजय चक्रवर्ती	50
27. पायलटों के जीवन में योग का महत्व	ए.का० विनोद कुमार मिश्र	52
28. अभ्यासेन दक्षः	अभिनव तिवारी	53
29. गजल/गीत (हिमांचलपुरी)	लाल बहादुर यादव	54
30. मनोदैहिक पदार्थों का उपयोग और एविएटर्स.....	गु.कै. वी.के. सिंह	55
31. हँसो भी हँसो .. दिल खोलकर हँसो....	अवधेश कुमार गोस्वामी	57
32. सुविचार पुष्प	चन्द्रभूषण शर्मा	58
33. पैसे का महत्व	अरूण कुमार मिश्रा	59
34. मानव जीवन को श्रेष्ठ कैसे बनायें?	धर्मेश कुमार गिरी	60
35. भारत की डिजिटल वित्तीय प्रणाली की स्वर्णिम.....	सुनील कुमार	62
36. धर्म क्या है	एस.बी. तिवारी	63
37. इगुआ गान	कैप्टन जे.पी. शर्मा	64

वायुयान अनुरक्षण के 75 सूत्र

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उडान अकादमी के निदेशक श्री कृष्णेंदु गुप्ता जो संस्थान के मुख्य अभियंता भी हैं, उन्हें तीस वर्ष से अधिक वायुयान अनुरक्षण अभियांत्रिकी का अनुभव है। वे देश के मूर्धन्य वायुयान मैकेनिकल अनुरक्षण अभियंताओं में से एक हैं। उन्होंने विदेशों में वायुयान प्रौद्योगिकी से जुड़े प्रशिक्षण प्राप्ति हेतु यात्रायें की हैं तथा देश में विभिन्न आयोजनों, सेमीनारों व वेबीनारों के माध्यम से तद्विषयक व्याख्यान देने का उन्हें अवसर प्राप्त होता रहता है। आजादी के अमृत महोत्सव यानी आजादी के पचहत्तर वर्ष के समय सुरक्षा सहित उडान की थीम के अंतर्गत उक्त प्रौद्योगिकी व आधुनिक तकनीक से जुड़े विषयों पर वैमानिक शिल्प एवम वायुयान अनुरक्षण विषयक ध्यान व प्रयोग में लाने हेतु उनकी पचहत्तर बातें वर्णित हैं, जो निम्न वत हैं। – प्रधान सम्पादक

स्वयं की सुरक्षा

1. वायुयान से जुड़े कार्य के प्रति अनुशासन रखें।
2. वायुयान में कार्य करते समय जूते पहन कर काम करें।
3. वायुयान में कार्य करते समय ढीले कपड़े नहीं पहनने चाहिए, केवल चुस्त यूनिफार्म होनी चाहिए।
4. वायुयान में कार्य करते समय घड़ी, टाई, चौन और बेल्ट आदि नहीं पहनना चाहिए।
5. जिस वायुयान के विषय में आपको जानकारी नहीं है, उस पर बिना अनुमोदन प्राप्त अभियंता अथवा सुयोग्य टक्नीशियन के संरक्षण में ही कार्य करना चाहिए।
6. इंजिन चलते समय इंजिन सम्बंधित कार्य को अत्यंत सावधानी पूर्वक योग्य अभियंता के निर्देशन में बहुत सम्भल कर कार्य करना चाहिये।
7. वायुयान में कार्य करते समय यदि चश्मा लगाते हों तो अवश्य ही लगाये होना चाहिये।
8. वायुयान में कार्य करते समय किसी साथी के साथ बिना मतलब बातचीत अथवा हंसी-मजाक बिल्कुल नहीं करना चाहिए।
9. चालू वायुयान के इंजन के नीचे बिना बताये, काम करने के लिए नहीं प्रवेश करना चाहिए।
10. वायुयान के बाहर खड़े कर्मचारी को कॉकपिट में बैठे अभियंता या अन्य वरिष्ठ कार्मिक की ओर ध्यान देना चाहिये।
11. कॉकपिट में बैठे कार्मिक द्वारा दिये निर्देशों का तुरंत और सही अनुपालन सुनिश्चित किया जाये

औजारों (टूल्स) की सुरक्षा

12. वायुयान पर कार्य करने से पूर्व उपयोग में लाये जाने वाले औजारों (टूल्स) को इस्तेमाल करने से पहले यह सुनिश्चित करें कि सभी औजार डीजीसीए से अनुमोदित लैब से कैलीब्रेटेड हों और उनका समयावधि कार्ड टूल्स स्टोर में उपलब्ध हों और उनकी कैलीब्रेशन अवधि वैध हो।
13. वायुयान में काम करने से पहले सभी औजारों के बारे में पूरी तरह जानकारी होनी चाहिए।
14. नापने वाले (मीजरिंग टूल्स) या फिर काटने वाले (कटिंग टूल्स) औजारों को एक साथ नहीं रखना चाहिए।
15. औजारों को उपयोग में लेने से पहले और बाद में उन्हें अच्छे तरीके से साफ करके रखना चाहिए।

16. औजारों को ग्रीस और तेल इत्यादि नहीं लगाना चाहिए।
17. यदि किसी औजार की जरूरत नहीं है, तो उसे टूल बाक्स में रख देना चाहिए।
18. बिना हैंडल वाले औजारों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
19. खराब औजारों का प्रयोग नही करना चाहिये
20. वायुयान के निरीक्षण और परीक्षण हेतु इंस्पेक्शन सेज्यूल में जितनी संख्या हो उतने टूल्स अवश्य ही होने चाहिये ।
21. रिगिंग टूल्स और मापक टूल्स को अत्यंत सावधानी पूर्वक इस्तेमाल करे ।
22. वायुयान में कार्य पूर्ण होने के उपरांत औजारो को गिन कर वापस टूल्स स्टोर अथवा टूल्स किट में रखे।
23. जिस औजार से जो काम लिया जानाहो उस औजार से वही कार्य ले।
24. कार्य करते समय कोई औजार खरब होजाये तो उसकी लिखित सूचना तुरंत सम्बंधित अभियंता को दे ।
25. वायुयान पर कार्य करते समय अत्यंत सावधानी का पालन करे कोई नट, बोल्ट, स्क्रू वाशर, टूल्स आदि वायुयान में न गिरे इसका ध्यान हमेशा रखे ।
26. वायुयान पर कार्य करते समय कोई भी चीज टूल्स अथवा एफ ओ डी वायुयान में रह जाये अथवा गिर जाये तो उसकी सूचना निर्भयता पूर्वक सम्बंधित अभियंता को दे ।

मशीन की सुरक्षा

27. जिस टेस्टर या मशीन अथवा कैलीब्रेटर को टेस्ट के लिये उपयोग में लाना है वह नियमित अनुमोदित लैब से कैलीब्रेटिड हो तथा उपयोग कर्ता पूर्ण रूप से उसको ऑपरेट करने में दक्ष हो।
28. वर्कशॉप में रखी हुई मशीनोंव उपकरण को प्रतिदिन साफ करे ताकि वह सुरक्षित रहे और खराब नहीं हो।
29. जिस मशीन को लुब्रिकेशन की आवश्यकता है, उसके लुब्रिकेशन का पूरा ध्यान रखे और जिस मशीन में कूलिंग की आवश्यकता है, उसमें कूलिंग का ध्यान रखे।
30. बिना जरूरत मशीन को नहीं चलाये।
31. चालू मशीन को छोड़कर नहीं जाये।
32. जिस मशीन में से आवाज आती है। या फिर कोई नट बोल्ट लूज है, तो उसे आवश्यकतानुसार टाइट करे।
33. मशीन पर कार्य करते समय यह पता होना चाहिए की मशीन सही से कार्य कर रही है या फिर नहीं और अगर नहीं कर रही तो उसकी मरम्मत कराये।
34. आवश्यकतानुसार मशीन पर डेजर(खतरा) लिखा होना चाहिए ।
35. कार्यशाला में लगे टेस्टरो/मशीनों पर सुरक्षा कवच लगा रहे।
36. मशीनो टेस्ट इक्विपमेंट और इसके समकक्ष मशीनो को खास तौर से वायुयान से जुड़े परीक्षण बिना मैनुअल के उपयोग में न लाये जाये ।

विद्युत संबंधी सावधानियां

37. कटी हुई वायरिंग पर इनसूलेटिड टेप लगा दे।
38. यदि कही पर वायरिंग में लूज कनेक्शन है, तो उसे टाइट कर दे।
39. बिजली से संबंधित कार्य करते समय मेन स्विच बंद कर दे।
40. वर्कशॉप में कार्य करते समय यदि जरूरत हो तो अनावश्यक स्विच को बंद कर दे।
41. बैटरी को हमेशा चार्जिंग रूम में ही चार्ज करे।
42. मशीनों के मूविंग पार्ट्स के नजदीक से निकले हुए तार को सही तरीके से दबाना तथा बांध दे। ताकि तार मशीन में आकर कटे नहीं।
43. सभी इलेक्ट्रॉनिक मशीनों को अर्थ कर दे ताकि कोई करंट का झटका महसूस न हो।

सामान्य सुरक्षा

44. कार्यस्थल पर नीचे गिरे हुए किसी भी सामान को हटा देना चाहिए।
45. वर्कशॉप में रखी हुई गाड़ियों के टायर के पीछे बुडन ब्लॉक लगा देना चाहिए, ताकि गाड़ी आगे पीछे ना खिसके।
46. प्राथमिक उपचार करने के तरीके वर्क शॉप की दीवार पर लिखवा दे।
47. यदि कभी कोई दुर्घटना होती है तो रोगी को इस प्रकार आश्वासन देना चाहिए, कि वह रोगी घबराए नहीं।
48. रोगी की चोट का पता लगाना चाहिए। उसको कहां पर और किस प्रकार की चोट लगी है।
49. खून बहने की स्थिति में खून को रोकने की व्यवस्था करनी चाहिए।
50. दुर्घटनाग्रस्त रोगी को गर्म दूध या चाय आदि उपलब्ध हो तो उसे देनी चाहिए। पानी अथवा नशीले पदार्थ का सेवन नहीं कराना चाहिए।
51. रोगी को जरूरत पड़े तो उसके कपड़े गीले कर देना चाहिए।
52. यदि कोई रोगी जली हुई अवस्था में है तो उसे कंबल ढक देना चाहिए।
53. रोगी के आसपास अनावश्यक भीड़ इकट्ठी नहीं होने देना चाहिए।
54. दुर्घटनास्थल से उठाकर रोगी को आरामदायक स्थान पर ले जाना चाहिए।
55. टूटी हुई हड्डी के स्थान पर दबाव नहीं डालना चाहिए, ओर उसके हिलने नहीं देना चाहिए।

बॉन्डिड स्टोर की सुरक्षा

56. बॉन्डिड स्टोर और क्वारन्टाइन स्टोर एकदम अलग होना चाहिये।
57. आद्रता और ताप लिखित रिकॉर्ड होना चाहिये।
58. धूल और गंदगी बिल्कुल ही न रहने पाये।
59. रबर आइटमों का ध्यान रखा जाये।
60. जहाज के इंस्ट्रूमेंट को जहा रखा जाये वे एल्मीरा और रैक्स की उचित अर्थिंग हो।
61. वायुयान में लगने वाले टायर्स को निश्चित आवर्त यानी अवधि में घुमाना चाहिये।
62. जब भी रेडिओ के उपकरण बॉन्डेड स्टोर से वायुयान अथवा वायुयान से बॉन्डिडस्टोर ले जाना हो तब उसे उचित थैली में लपेट कर रखे।

रेडिओ लैब व इंस्ट्रुमेंटलैब की सुरक्षा

63. अनुमोदित रेडिओलैब की साफ सफाई इस स्तर की होनी चाहिये जो सी ए आर के अनुरक्षण नियमों का पालन करे ।
64. लैब में इस्तेमाल होने वाले टेस्टर और मीटर गेज आदि डीजीसी ए के दिये गये गाइड लाइंस के आधार पर अनुरक्षित और कैलीब्रेटेड होना चाहिये ।
65. ताप मान और अद्रता का नियमता पालन हो ।
66. किसी आकस्मिक दुर्घटना के समय आपात कालीन दरवाजा हो ।
67. लैब में किसी खाली और खुली जगह पर अग्नि शमन बॉटल हो जिसका प्रयोग करने के विधि का सभी को ग्यान हो ।

कारपेंटर शॉप की सुरक्षा

68. कारपेंटर शॉप में कार्य रत कर्म चारी को हर तरह की लकड़ी का ग्यान हो ।
69. कारपेंटर अपने औजारों में धार लगवा कर इस्तेमाल करे और लकड़ी को गीला होने से बचाये ।
70. लकड़ी के बुरादे का उचित निस्तारण करे ताकि वातावरण प्रदूषित न हो ।

फ्यूल स्टेशन की सुरक्षा

71. फ्यूल स्टेशन बहुत सम्वेदशील जगह होती है अतएव ऐसा वहा किसी प्रकार से कभी भी पूरे प्रतिषिद्ध क्षेत्र में अलाव आदि न जलाये ।
72. फ्यूलस्टेशन के आस पास सूखी पत्तिया, घास और लकड़िया कागज के टुकड़े आदि जो आग पकड़ते हो न रहने दे ।
73. अर्थिंग व्यवस्था बिल्कुल नियमता हो अर्थ पोस्ट का कैलीब्रेशन नियमानुसार हो ।

बैटरी शॉप की सुरक्षा

74. बैटरी शॉप में प्रयोग किये जाने वाले तेजाब का सही मात्रा में प्रयोग हो । डिस्टिल्ड वाटर का उचित संरक्षण व प्रयोग किया जाये । जहाज में बैटरी लगाते अथवा उतरते समय मैनुअल में लिखी सावधानियों का बर्ताव करे ।

टार्मक की सुरक्षा

- 75 टार्मक को कंकड व एफ ओ डी से तथा अनावश्यक वेजीटेसन से साफ रखे । टार्मक में जाने के पहले नियमानुसार मार्शलिंग जैकेट पहन कर जाये । मार्शलिंग करते समय सजग रहकर वायुयानों की गति विधियों पर नजर रखे । टार्मक पर फायरेक्स, चॉक्स और टो बार आदि वस्तुओं पर नजर रखे और ये सब चीजे यथा स्थान रहे । टार्मक एरियामें अनावश्यक वाहन अथवा कोई व्यक्ति प्रवेश न करे इस पर मार्शलर्स नजर रखे ।

ये सावधानिया अनुभव के आधार पर बतलायी गयी है । हालाकि वायुयान के मैटीनेंस में हर समय हर कार्य मैनुअल के सहारे ध्यान देकर करना होता है फिर भी उपर्युक्त सावधानिया सम्बंधित कार्मिकों के लिये बेहद जरूरी है ।

देश की स्वतंत्रता के प्रातः स्मरणीय अमर शहीद व सेनानी

आपने सन 1919 में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड के बारे में तो सुना ही होगा, उस हत्याकांड के चश्मदीद गवाह कम उम्र के वीर बहादुर जी थे. जिन्होंने अपनी आँखों से उस हत्याकांड को देखा जिसमें हजारों लोगों की मृत्यु हुई थी. इस हत्याकांड का जिम्मेदार डायर ने जिस क्रूरता से यह हत्याकांड कराया था, उसे इन्होंने अपनी आँखों से देखा और फिर उन्होंने संकल्प लिया कि 'आज से उनके जीवन का केवल एक ही संकल्प है डायर की मृत्यु'. इसके बाद वे क्रांतिकारी दलों के साथ शामिल हुए और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी नेताओं की पद चिन्हों पर चलते हुए इन्होंने अपना योगदान दिया और फिर अल्पायु में ही उनकी मृत्यु हो गई.

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद इस आजादी की कीमत हमारे देश के अमर शहीदों ने यौवन काल में अपने सारे सुखों को त्याग कर मेरा रंग दे बसंती चोला गीत गा कर अपने प्राणों की बलि देकर देश को आजाद कराया। इस आजादी पर हम सभी भारत वासियों को बहुत नाज़ है। हर साल हम सभी 15 अगस्त को झंडा फहराते हैं और देशभक्ति के गीत गाकर आजादी का उत्सव मनाते हैं। हम सभी उन अमर बलिदानियों का वंदन और स्मरण करते हैं जिन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इन महान हस्तियों को हम बदले में कुछ नहीं दे सकते हैं, पर हम उन्हें इस आजादी के दिन याद तो कर सकते हैं, उनके बारे में जान तो सकते हैं.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे लाखों वीरों के नाम स्वर्ण अक्षरों से लिखे हैं, जिन्होंने अकेले ही अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई शुरू की। हमारे देश में ऐसे वीर योद्धा थे, जिन्होंने अपनी युवावस्था में सब कुछ त्याग कर देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे। आज हमारा कर्तव्य है कि हम सभी भारतवासी उन अमर बलिदानियों के विषय में जाने।

1. रानी लक्ष्मी बाई

रानी लक्ष्मी बाई के नाम को भला कौन नहीं जानता। वह भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई की प्रथम वीरंगना थी। वह झांसी की रहने वाली थी। उनका जन्म महाराष्ट्रीयन परिवार में हुआ था। वह विधवा थी उस समय का शासक डलहौजी था। उसने ऐसा नियम बनाया था कि जहाँ का राजा पुरुष नहीं हो वहाँ का राज्य अंग्रेज हड़प लेते। उनका दत्तक पुत्र था जिसका नाम दामोदर था। रानी ने अंग्रेजों के छवकें छुटा दिये और अंत में वीर गति को प्राप्त हुईं भारत की हर नारी को उन पर गर्व है।

2. बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक स्वतंत्रता संग्राम के चमकते सितारे थे। स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे." पहली बार यह नारा बाल गंगाधर तिलक जी ने ही बोला था. बाल गंगाधर तिलक को तत्कालीन सरकार में उन्हें अशांति का अपदूत कहा जाता था. लेकिन एजुकेशन सोसाइटी की इन्होंने स्थापना की थी, जहाँ भारतीय संस्कृति के बारे में पढ़ाया जाता था, वे स्वदेशी के काम से जुड़े रहे. बाल गंगाधर तिलक पूरे भारतवर्ष में घूम घूम कर लोगों को आजादी की लड़ाई में साथ देने के लिए प्रेरित करते थे. इनकी अंतिम यात्रा में महात्मा गाँधी के साथ लगभग हजारों लोगों के साथ स्वयं गांधी जी भी थे।

3. लाला लाजपत राय

वे तत्कालीन स्वतंत्रता सेनानी की प्रसिद्ध लाल बाल पाल की तिकड़ीके सदस्य थे. लाला लाजपत राय जी पंजाब केसरी नाम से प्रसिद्ध थे. भारतीय नेशनल कांग्रेस के लाला लाजपत राय बहुत प्रसिद्ध नेता

और भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे. ये तीनों कांग्रेस के मुख्य और प्रसिद्ध नेता थे. 1914 में वे ब्रिटेन भारत की स्थिति बताने गए थे, लेकिन विश्व युद्ध होने की वजह से वे वहां से लौट ना सके. 1920 में जब वे भारत आये, तब जलियाँवाला हत्याकांड हुआ था, उन्होंने इस कारण अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेदा उन्हें लाठी चार्ज में घायल होकर जीवन से हाथ धोना ।

4. मंगल पांडेय

भारत के इतिहास में स्वतंत्रता सेनानियों में सबसे पहले मंगल पांडे का नाम आता है. 1857 की लड़ाई के समय से इन्होंने आजादी की लड़ाई छेड़ दी और सबको इसमें साथ देने को कहा. मंगल पांडे ईस्ट इंडिया कंपनी में सैनिक थे. उस दौरान ऐसी खबर फैली की ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जो बंदूके इस्तेमाल की जा रही थी और उन्मे जो कारतूस लगाया जाता था उसमें गाय और सुअर की चर्बी का इस्तेमाल होता है, इसे चलाने के लिए कारतूस को मुह से खीचना पड़ता था, जिससे गाय की चर्बी मुह में लगती थी, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के खिलाफ था. जिससे सेना में बगावत हो गयी थी उन्हें गदर के समय का शहीद कहा जाता है

5. भगत सिंह

भगत सिंह को शहीद कहा जाता है । युवा नेता भगत का जन्म 27 सितम्बर 1907 को पंजाब में हुआ था. इनके पिता और चाचा दोनों स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल थे, जिससे बचपन से ही इनके मन में देश के प्रति लगाव था और वे बचपन से ही अपने देश के लिए कुछ करना चाहते थे. 1921 में इन्होंने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया , लेकिन हिंसात्मक सिद्धांत होने के कारण भगत ने यह छोड़ नौजवान भारत सभा बनाई. जो पंजाब के युवाओं को आजादी में हिस्सा लेने के लिये प्रेरित किया अपने साथी चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर इन्होंने आजादी के लिए बहुत से रांति कारी कदम उठाये 1929 में इन्होंने अंग्रेजों को चुनौती देते हुए संसद में बम फेंक दिया, अंतत इन्हें 23 मार्च 1931 को राजगुरु और सुखदेव के साथ फांसी की सजा दी गई.

6. दुर्गावती देवी (दुर्गा भाभी)

ब्रिटिश राज के खिलाफ ये महिला उस समय खड़ी रही जब देश में महिलाओं को घर से बाहर तक निकलने की इजाजत नहीं थी. भगत सिंह जब ब्रिटिश ऑफिसर को मार कर भागते है, तब वे दुर्गावती के पास मदद के लिए जाते है. दुर्गावती भगत सिंह व राजगुरु के साथ ही ट्रेन में सफर करती है, जहाँ दुर्गावती इन्हें ब्रिटिश पुलिस से बचाती है. दुर्गावती भगत सिंह की पत्नी बन जाती है, जिससे किसी को शक ना हो. इनके पति का नाम भगवतीचरण बोहरा था, जो भगत सिंह के साथ ही आजादी के लड़ाई में खड़े हुए थे. उनकी पार्टी के सभी लोग इन्हें दुर्गा भाभी कहा करते थे. दुर्गावती नौजवान भारत सभा की मेम्बर भी थी.

7. बेगम हजरत महल

वे अवध (अउध) की बेगम के नाम से भी प्रसिद्ध थीं और अवध के नवाब वाजिद अली शाह की दूसरी पत्नी थीं । उन्होंने 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह किया । इनका जन्म फैजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था ।

8. महात्मा गाँधी

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात में हुआ था. अहिंसावादी महात्मा गाँधी ने अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई पूरी सच्चाई और ईमानदारी से लड़ी. वे अहिंसा पर विश्वास रखते थे और कभी किसी अंग्रेज को गली भी नहीं दी. इस वजह से अंग्रेज उनकी बहुत इज्जत भी करते थे. सत्याग्रह आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, साइमन वापस जाओ, नागरिक अवज्ञा आन्दोलन

और भी बहुत से आन्दोलन महात्मा गाँधी ने शुरू किये. वे सबको स्वदेशी बनने के लिए प्रेरित करते थे और अंग्रेजों के सामान को उपयोग करने से मना करते थे. महात्मा गाँधी के प्रयासों के चलते अंग्रेजों ने 15 अगस्त 1947 को देश छोड़ दिया. 30 जनवरी 1948 को नाथू राम गोडसे ने गोली मार कर इनकी हत्या कर दी थी.

9. राम प्रसाद बिस्मिल

स्वतंत्रता सेनानी थे, उनका नाम मैनपुरी व काकोरी कांड में सबसे ज्यादा प्रख्यात है. ब्रिटिश शासन के वे सख्त खिलाफ थे, वे बहुत बड़े कवी भी थे, जो अपने मन की बात कविताओं के जरिये सब तक पहुंचाते थे. ये हिंदी उर्दू भाषा में लिखा करते थे. 'सरफरोशियों की तम्मना' जैसी महान यादगार कविता इन्हीं ने लिखी थी.

10. सुखदेव थापर

सुखदेव देश के स्वतंत्रता संग्रामी में से एक थे, उन्होंने भगत सिंह व राजगुरु के साथ दिल्ली की असेंबली में बम फोड़ा था, और अपने आप को गिरफ्तार करा दिया था. इसके पहले उनका नाम ब्रिटिश अफसर को गोली मारने के लिए भी सामने आया था. सुखदेव भगत सिंह के अच्छे मित्र भी थे, इन्हें भगत सिंह के साथ ही अंग्रेजों से लगातार 2 हफ्ते तक युद्ध किया जो वो हार गई थी. इसके बाद वे ग्वालियर चली गईं जहाँ एक बार फिर उनका युद्ध अंग्रेजों से हुआ. 1857 में हुई लड़ाई में रानी लक्ष्मी बाई का विशेष योगदान था. इनका नाम भारत के स्वतंत्रता सेनानी में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

11. जवाहरलाल नेहरू

पंडित जवाहरलाल नेहरू को आज बच्चा बच्चा जनता है. ये भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे. इनके पिता मोती लाल नेहरू एक बैरिस्टर और नेता थे. 1912 में नेहरू जी विदेश से अपनी पढाई पूरी करने के बाद भारत में बैरिस्टर की तरह काम करने लगे. महात्मा गाँधी के संपर्क में आने के बाद वे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े, और भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष बन गए. आजादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने. आजादी की लड़ाई में वे महात्मा गाँधी के साथ मिल कर अंग्रेजों के खिलाफ खड़े रहे. बच्चों से उन्हें विशेष प्रेम था इसलिए आज भी हम उनके जन्म दिन को बाल दिवस के रूप में मनाते हैं. दिल्ली में उनका निधन हो गया.

12. सुभाषचंद्र बोस

वास्तविक अर्थ में यदि कोई नेता था तो वह नेता जी सुभाषचंद्र बोस ही थे | इनका जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में हुआ था. 1919 को वे पढाई के लिए विदेश चले गए, तब उन्हें वहां जलियाँवाला हत्याकांड की जान कारी मिली | जिससे उन्ही अत्यंत पीडा हुई वे 1921 को स्वदेश लौट आये . भारत आकर इन्होंने भारतीय कांग्रेसकी सदस्यता ग्रहण की और नागरिक अवज्ञा आन्दोलन में हिस्सा लिया. अहिंसावादी गाँधी जी की बातें उन्हें उल्टी लगती थी। वे अडोल्फ हिटलर से मदद मांगने के लिए जर्मनी गए। उन्होंने अपने निजी प्रयास से आजाद हिंद फौज खड़ी की दुसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान जो जिसने आजाद हिंद फौज की मदद की थी उसने समर्पण कर दिया उसके बाद नेता जी वहा से कही निकल गये ऐसा लोग बताते हैं कि 17 अगस्त 1945 को उनका वायुयान क्रेश हो थाजिससे उनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु आज तक रहस्य बनी हुई है।

13. भीमराव अम्बेडकर

दलित परिवार में पैदा हुए भीमराव अम्बेडकर जी ने भारत से जाति सिस्टम खत्म करने के लिए बहुत कार्य

किये. नीची जाति के होने की वजह से उनकी बुध्दियता को कोई नहीं मानता था. लेकिन इन्होंने फिर बुद्ध जाति अपना ली और दूसरी नीची जाती वालों को भी ऐसा करने को कहा, भीमराव अम्बेडकर जी ने हमेशा सबको समझाया की जाति धर्म मानवता से बढ़ कर नहीं होता है. हमें सबके साथ सामान व्यवहार करना चाहिए. अपनी बुद्धी के बदौलत वे भारत सविधान कमिटी के चेयरमैन बन गए. जनतांत्रिक भारत के सविधान को डॉ भीमराव अम्बेडकर ने ही लिखा था.

14. सरदार वल्लभभाई पटेल

भारतीय कांग्रेस के नेता सरदार वल्लभभाई पटेल एक वकील थे. वल्लभभाई जी ने नागरिक अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन में हिस्सा लिया था. वल्लभभाई जी ने देश की आजादी के बाद आजाद भारत को संभाला. आजाद भारत बहुत सारे राज्यों में बंट गया था जहाँ पाकिस्तान भी अलग हो चुका था. उन्होंने देश के सभी लोगों को समझाया कि देश की रक्षा के लिए सभी राजतन्त्र समाप्त कर दिए जायेंगे और पुरे देश में सिर्फ एक सरकार का राज्य चलेगा. उस समय देश को ऐसे नेता की जरूरत थी जो उसे एक तार में बांधे रखे बीखरने ना दे. आजादी के बाद भी देश में बहुत परेशानियाँ थी जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल ने बहुत अच्छे से सुलझाया था.

15. लाल बहादुर शास्त्री

आजाद भारत के दुसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे. शास्त्री जी ने देश की आजादी के लिए भारत छोड़ो आन्दोलन, नामक सत्याग्रह आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लिया था. ये देश के भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे. आजादी के समय उन्होंने 9 साल जेल में भी बिताये. आजादी के बाद वे ीवउम मिनिस्टर बन गए और फिर 1964 में दुसरे प्रधानमंत्री. 1965 में हुई भारत पाकिस्तान की लड़ाई में उन्होंने मोर्चा संभाला था. "जय जवान जय किसान" का नारा इन्होंने ही दिया था. 1966 में जब वे विदेश दौरे पर थे तब अचानक दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई.

16. सरोजनी नायडू

सरोजनी नायडू एक कवित्री और सामाजिक कार्यकर्ता थी. ये पहली महिला थी जो भारत व भारतीय नेशनल कांग्रेस की गवर्नर बनी. सरोजनी नायडू भारत के संबिधान के लिए बनी कमिटी की मेम्बर थी. बंगाल विभाजन के समय ये देश के मुख्य नेता जैसे महात्मा गँधी, जवाहरलाल नेहरु के संपर्क में आई और फिर आजादी की लड़ाई में सहयोग देने लगी. ये पुरे भारत में घूम घूम कर लोगों को अपनी कविता और भाषण के माध्यम से स्वतंत्रता के बारे में बताती थी. देश की मुख्य महिला सरोजनी नायडू का जन्म दिवस अब महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है.

17 . बिरसा मूंडे

बिरसा मूंडे का जन्म 1875 को रांची में हुआ था. बिरसा मूंडे ने बहुत से कार्य किये, आज भी बिहार व झारखण्ड के लोग इन्हें भगवान की तरह पूजते है और उन्हें "धरती बाबा" कहते है. वे सामाजिक कार्यकर्ता थे जो समाज को सुधारने के लिए हमेशा कुछ ना कुछ करते रहते थे. 1894 में अकाल के दौरान बिरसा मूंडे ने अंगेजों से लगान माफ करने को कहा जब वो नहीं माने तो बिरसा मूंडे ने आन्दोलन छेड़ दिया. 9 जून 1900 महज 25 साल की उम्र में बिरसा मूंडे ने अंतिम साँसे ली.

18. अशाफाकुल्ला खान

भारत देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अशाफाकुल्ला खान एक निर्भय, साहसी और प्रमुख स्वतंत्रता संग्रामी थे. वे उर्दू भाषा के कवी थे. काकोरी कांड में अशाफाकुल्ला खान का मुख्य

चेहरा था. इनका जन्म 22 अक्टूबर 1900 को उत्तर प्रदेश में हुआ था. क्रान्तिकारी विचारधारा के अशाफाकउल्ला खान महात्मा गाँधी की सोच के बिल्कुल विपरीत कार्य करते थे. उनकी सोच थी की अंग्रेज से शांति से बात करना बेकार है उन्हें सिर्फ गोली और विस्फोट की आवाज सुने देती है. तब राम प्रसाद बिस्मिल के साथ मिल कर इन्होंने काकोरी में ट्रेन लुटने की योजना बनाई. राम प्रसाद के साथ इनकी गहरी दोस्ती थी. 9 अगस्त 1925 को राम प्रसाद के साथ अशाफाकउल्ला खान और 8 अन्य साथियों के साथ मिलकर इन्होंने ट्रेन में अंग्रेजों का खजाना लुटा था.

19. बहादुर शाह जफ़र

मुग़ल साम्राज्य का आखिरी शासक बहादुर शाह जफ़र का नाम भी स्वतंत्रता संग्रामी की सूचि में शामिल है. 1857 की लड़ाई में इन्होंने मुख्य भूमिका निभाई थी. ब्रिटिशों की सेना ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ शाह जफ़र ने अपनी विशाल सेना खादी कर दी थी, और खुद अपनी सेना के सेनापति थे. उनके इस काम के लिए उन्हें विद्रोही कहा जाने लगा, तथा उन्हें बंगलादेश के रंगून में निर्वासित कर दिया गया था.

20. डॉ राजेन्द्र प्रसाद

हम डॉ राजेन्द्र प्रसाद को देश के पहले राष्ट्रपति के रूप में जानते हैं, लेकिन देश को आजाद कराने के लिए वे हमेशा सभी देशवासियों के साथ खड़े रहे, स्वतंत्रता की लड़ाई में राजेंद्र प्रसाद का नाम भी सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था. इन्हें हमारे देश का सविधान का वास्तुकार कहा जाता है. महात्मा गाँधी को अपना आदर्श मानने वाले राजेन्द्र प्रसाद ने कांग्रेस ज्वाइन कर बिहार से एक प्रमुख नेता बन गए. नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्होंने मुख्य भूमिका निभाई थी, जिसके लिए उन्हें कई बार जेल यातनाएं भी सहनी पड़ी थी.

21. राम प्रसाद बिस्मिल

मार्च 1931 को फांसी दी गई थी. युवाओं के लिए ये आज भी एक प्रेरणा का स्रोत है.

22. शिवराम राजगुरु

शिवराम राजगुरु भगत सिंह के ही साथी थे, जिन्हें मुख्यतः ब्रिटिश राज के पुलिस अधिकारी को मारने के लिए जाना जाता है. ये हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में कार्यरत थे, जो भारत देश की आजादी के लिए अपने प्राण भी देने को तैयार थे. राजगुरु गाँधी जी की अहिंसावादी बातों के बिलकुल विरोध में थे, उनके हिसाब से अंग्रेजों को मार मारकर अपने देश से निकलना चाहिए.

23. खुदीराम बोस

ये सबसे नौजवान स्वतंत्रता संग्रामी रहे हैं. स्वतंत्रता की लड़ाई के शुरुवाती दौर में ही ये उसमें कूद पड़े थे. बचपन से देशप्रेम के चलते इन्होंने आजादी को ही अपनी मंजिल बना ली थी. उन्हें शहीद लड़का कहके सम्मान दिया जाता है. स्कूल में पढने के दौरान खुदीराम ने अपने टीचर से उनका रिवाल्वर मांग लिया था, ताकि वे अंग्रेजों को मार सकें. मात्र 16 साल की उम्र में इन्होंने पास के पुलिस स्टेशन व सरकारी दफ्तर में बम ब्लास्ट कर दिया. जिसके 3 साल बाद इन्हें इसके जुल्म में गिरफ्तार किया गया, और फांसी की सजा सुने गई. जिस समय इनको फांसी हुई थी, इनकी उम्र 18 साल 8 महीने 8 दिन थी. उनका सम्मान करते थे. उनकी भारत के प्रति कर्तव्य एवं देश भक्ति के कारण वे काफी प्रचलित हुए, और अल्पायु में ही उनकी मृत्यु हो गई.

24. शहीद उधम सिंह

आपने सन 1919 में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड के बारे में तो सुना ही होगा, उस हत्याकांड के चश्मदीद गवाह कम उम्र के वीर बहादुर शहीद उधम सिंह जी थे. जिन्होंने अपनी आँखों से उस हत्याकांड को देखा जिसमें हजारों लोगों की मृत्यु हुई थी. इस हत्याकांड का जिम्मेदार डायर ने जिस क्रूरता से यह हत्याकांड कराया था, उसे इन्होंने अपनी आँखों से देखा और फिर उन्होंने संकल्प लिया कि 'आज से उनके जीवन का केवल एक ही संकल्प है डायर की मृत्यु'. इसके बाद वे क्रांतिकारी दलों के साथ शामिल हुए और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी नेताओं की पद चिन्हों पर चलते हुए इन्होंने अपना योगदान दिया और फिर अल्पायु में ही उनकी मृत्यु हो गई.

25. बख्त खान

उनका जन्म रोहिलखंड में बिजनौर में हुआ था। वे ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में सूबेदार थे और ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ 1857 के भारतीय विद्रोह में भारतीय विद्रोही बलों के कमांडर-इन-च

26. बेगम हजरत महल

वे अवध (अउध) की बेगम के नाम से भी प्रसिद्ध थीं और अवध के नवाब वाजिद अली शाह की दूसरी पत्नी थीं। उन्होंने 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह किया। इनका जन्म फैजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था

27. मौलवी लियाकत अली

वे एक स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने दुसरे स्वतंत्रता सेनानियो जैसे अंग्रेजो के खिलाफ 1857 में इलाहाबाद में बगावत का बिगुल बजाया।

28 . राव कदम सिंह

वे गुर्जर समूह के नेता थे जिन्होंने 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ आवाज़ उठाई थी। इन्हें लोकप्रिय रूप से मेरठ जिले में परीक्षितगढ़ और मवाना के राजा के रूप में जाना जाता है।

29. झालकारी बाई

वे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की महिला सेना 'दुर्गादल' की सेनापति थी। वे बहुत ही साहसी और निडर थी। वीरांगना झालकारी बाई ने देश की खातिर अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया। बुंदेलखंड की लोकगाथाओं में झालकारी बाई की वीरता के अनेक गीत मिलते हैं।

30. आचार्य नरेंद्र देव

वे भारत के प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पत्रकार, साहित्यकार एवं शिक्षाविद थे। वे कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख सिद्धान्तकार थे। इनका जन्म सीतापुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। देश को स्वतंत्र कराने का जुनून उन्हें स्वतंत्रता आन्दोलन में खींच लाया और भारत की आर्थिक दशा व गरीबी की दुर्दशा ने उन्हें समाजवादी बना दिया।

31. असफ अली

वे भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और प्रसिद्ध भारतीय वकील थे। वह भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका के पहले राजदूत थे। इनका जन्म ब्रिटिश भारत के सिहारा उत्तर प्रदेश में हुआ था।

32. अशफाकुल्ला खान

वे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे। जिन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन के तत्वाधान में हुए काकोरी कांड में अहम भूमिका निभाई थी। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के शाहिदगढ़ में स्थित शाहजहांपुर के रेलवे स्टेशन के पास कदनखैल जलालनगर मोहल्ले में हुआ था।

33. चित्तू पांडे

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उनके नेतृत्व के कारण जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें बलिया का शेर के रूप में वर्णित किया था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के एक गांव रहुचक में हुआ था।

34. गणेश शंकर विद्यार्थी

वे हिन्दी के पत्रकार एवं भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सिपाही एवं सुधारवादी नेता थे। इनका जन्म प्रयाग, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

35. गोविंद बल्लभ पंत

वे प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और वरिष्ठ भारतीय राजनेता थे। वे उत्तर प्रदेश राज्य के प्रथम मुख्य मन्त्री और भारत के चौथे गृहमंत्री थे। इनका जन्म अल्मोड़ा जिले के खूंट (धामस) नामक गाँव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 9 अगस्त 1925 को काकोरी काण्ड करके उत्तर प्रदेश के कुछ नवयुवकों ने सरकारी खजाना लूट लिया तो उनके मुकदमें की पैरवी के लिये अन्य वकीलों के साथ पन्त जी ने जी-जान से सहयोग किया था।

36. हसरत मोहानी

वे साहित्यकार, शायर, पत्रकार, इस्लामी विद्वान, समाजसेवक और स्वंत्रता सेनानी थे। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के कस्बा मोहान जिला उन्नाव में हुआ था। इन्होंने ही इस्कलाब जिन्दाबाद का नारा दिया था। इन्होंने पहली बार कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग उठाई थी।

37. महावीर त्यागी

वे भारत के स्वतंत्रता सेनानी तथा सांसद (देहरादून से) थे। जिन्होंने कांग्रेस के बैनर तले किसान आंदोलन किया था। उसके वजह से अंग्रेजों ने उन्हें 11 बार गिरफ्तार किया और यातनाएं दी तो गांधीजी ने इसके लिए अंग्रेजों की आलोचना यंग इंडिया में लेख लिखकर की थी। हालांकि उस वक्त उन पर इतनी यातनाओं की वजह किसी एक अंग्रेज मजिस्ट्रेट की व्यक्तिगत नाराजगी थी, जिसने उन पर देशद्रोह का केस लगा दिया था और पूरी कोशिश थी कि महावीर त्यागी की अकड़ को खत्म कर सके, लेकिन एक सैन्य अधिकारी रहने वाले महावीर त्यागी को ना झुकना कुबूल था और ना ही माफी मांगना।

38. मौलाना मोहम्मद अली

इनको मुहम्मद अली जौहर के नाम से भी जाना जाता है। वे एक भारतीय मुस्लिम नेता, कार्यकर्ता, विद्वान, पत्रकार और कवि थे। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के रामपुर में हुआ था। इन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का विस्तार करने के लिए कड़ी मेहनत की, जिसे मुहम्मदान एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज के नाम से जाना जाता था और 1920 में जामिया मिलिया इस्लामिया के सह-संस्थापकों में से एक थे।

39. मौलाना शौकत अली

वे खिलाफत आंदोलन के एक भारतीय मुस्लिम राष्ट्रवादी नेता थे और मौलाना मुहम्मद अली के भाई

थे। इन्होंने खिलाफत आन्दोलन में अहम भूमिका निभाई थी और उन्हें खिलाफत सम्मेलन के अंतिम राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित किया गया था।

40. मुख्तार अहमद अंसारी

वे एक भारतीय राष्ट्रवादी और राजनेता होने के साथ-साथ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के पूर्व अध्यक्ष थे। साथी ही साथ वे जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के संस्थापकों में से एक थे और 1928 से 1936 तक वे इसके कुलाधिपति भी रहे थे। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में हुआ था।

41. मुनीश्वर दत्त उपाध्याय

वे भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षकविद थे। वे भारत के प्रथम एवं द्वितीय लोकसभा में सांसद थे। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में हुआ था।

42. पुरुषोत्तम दास टंडन

वे भारत के स्वतंत्रता सेनानियो में से एक हैं। हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करवाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में हुआ था।

43. रफी अहमद किदवई

वे भारत के जाने-माने स्वतंत्रता सेनानी और देश के प्रमुख राजनीतिज्ञ थे। कांग्रेस के अन्दर स्वराज पार्टी के गठन के पक्षधर था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के मसौली नामक स्थान पर हुआ था।

44. राजा महेन्द्र प्रताप सिंह

वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पत्रकार, लेखक, क्रांतिकारी और समाज सुधारक थे। वे श्शार्थन पेशवाश के नाम से प्रसिद्ध थे। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में हुआ था। वे भारत की अस्थायी सरकार के राष्ट्रपति भी रहे थे।

45. राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी सेनानी थे जो काकोरी काण्ड के एक प्रमुख अभियुक्त के रूप में जाना जाता है। उन्होंने दक्षिणी दक्षिणेश्वर बम विस्फोट की घटना में भाग लिया और फरार हो गए।

46. राममनोहर लोहिया

वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, प्रखर चिन्तक तथा समाजवादी राजनेता थे। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद में (वर्तमान-अम्बेदकर नगर जनपद) अकबरपुर नामक स्थान में हुआ था। 9 अगस्त 1942 को जब गांधी जी व अन्य कांग्रेस के नेता गिरफ्तार कर लिए गए, तब लोहिया ने भूमिगत रहकर भारत छोड़ो आंदोलन को पूरे देश में फैलाया।

लोहिया, अच्युत पटवर्धन, सादिक अली, पुरुषोत्तम टिकरम दास, मोहनलाल सक्सेना, रामनन्दन मिश्रा, सदाशिव महादेव जोशी, साने गुरुजी, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, अरुणा आसिफअली, सुचेता कृपलानी और पूर्णिमा बनर्जी आदि नेताओं का केन्द्रीय संचालन मंडल बनाया गया। लोहिया पर नीति निर्धारण कर विचार देने का कार्यभार सौंपा गया। भूमिगत रहते हुए जंग जू आगे बढ़ो, क्रांति की तैयारी करो, आजाद राज्य कैसे बने जैसी पुस्तिकाएं लिखीं।

47. मातंगनी हाजरा

एक गुन्नाम स्वतंत्रता सेनानी थी जिन्हें लोगो ने उनका नाम नही सुना होगा जिन्होंने अंग्रेजो के शासन के विरुद्ध नारे लगाये । तब उन पर लाठी की मार पडी और अंत मे उन्होने अपने जीवन को बलिदान कर दिया ।

48. राम प्रसाद बिस्मिल

वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रान्तिकारी धारा के एक प्रमुख सेनानी थे, जिन्हें 30 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सरकार ने फाँसी दे दी । वे मैनपुरी षड्यन्त्र व काकोरी-काण्ड जैसी कई घटनाओं सुत्रधार थे तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य भी थे। वे एक कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषाभाषी, इतिहासकार व साहित्यकार भी थे। बिस्मिल उनका उर्दू तखल्लुस (उपनाम) था जिसका हिन्दी में अर्थ होता है आत्मिक रूप से आहत । बिस्मिल के अतिरिक्त वे राम और अज्ञात के नाम से भी लेख व कवितायें लिखते थे ।

49. स्वामी सहजानन्द सरस्वती

वे भारत के राष्ट्रवादी नेता एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। भारत में संगठित किसान आंदोलन खड़ा करने का श्रेय इनको जाता है, इसलिए इन्हें भारत में शकिसान आन्दोलनश् के जनक भी बोला जाता है । वे आदि शंकराचार्य सम्प्रदाय के श्दसनामी संन्यासीश् अखाड़े के दण्डी संन्यासी थे । वे एक बुद्धिजीवी, लेखक, समाज-सुधारक, क्रान्तिकारी, इतिहासकार एवं किसान-नेता थे । इनका जन्म उत्तर प्रदेश के गज़िपुर जिले में हुआ था ।

50. आचार्य जे बी कृपलानी

एक महान देश भक्त और गांधीवादी नेता थे जो अहिन्सा के सिद्धांतो पर चलते थे कई बारी जेल गये वह गांधी जी के सत्य और अहिंसा के मार्ग मे चलने वाले सच्चे मायने मे स्वतंत्रता सेनानी थे उन्हें सम्मान से आचार्य कृपलानी कहा जाता था । वे सन् 1947 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे जब भारत को आजादी मिली । जब भावी प्रधानमंत्री के लिये कांग्रेस में मतदान हुआ तो तो सरदार पटेल के बाद सबसे अधिक मत उनको ही मिले थे । किन्तु गांधीजी के कहने पर सरदार पटेल और आचार्य कृपलानी ने अपना नाम वापस ले लिया और जवाहर लाल नेहरू को प्रधानमंत्री बनाया गया । कृपलानी ने 1977 में जनता सरकार के गठन में अहम भूमिका निभायी । कृपलानी गांधीवादी दर्शन के एक प्रमुख व्याख्याता थे और उन्होंने इस विषय पर अनेक पुस्तकें लिखीं ।

51. वीर सावरकर

जन्म 28 मई 1883, मृत्यु: 26 फरवरी 1966

भारत के महान क्रान्तिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, समाजसुधारक, इतिहासकार, राष्ट्रवादी नेता तथा विचारक थे। उन्हें प्रायः स्वातन्त्र्यवीर और वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। वीर सावरकर 1911 से 1921 तक अंडमान जेल में रहे. 1921 में वे स्वदेश लौटे और फिर 3 साल की जेल में सजा काटी ।

52. गणेश शंकर विद्यार्थी

जन्म 26 अक्टूबर, 1890, प्रयाग, मृत्यु- 25 मार्च, 1931

एक निडर और निष्पक्ष पत्रकार तो थे ही, इसके साथ ही वे एक समाज सेवी, स्वतंत्रता सेनानी और कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। भारत के स्वाधीनता संग्राम में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। जन्म 26 अक्टूबर, 1890, प्रयाग, उत्तर प्रदेशगणेश शंकर विद्यार्थी एक निडर और निष्पक्ष पत्रकार, समाज-सेवी और स्वतंत्रता सेनानी थे। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में उनका नाम अजर-अमर है। गणेशशंकर

विद्यार्थी एक ऐसे पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी लेखनी की ताकत से भारत में अंग्रेजी शासन की नींद उड़ा दी थी।

53. आचार्य विनोबा भावे

आचार्य विनोबा भावे का नाम भारत के महात्माओं के नामों के बीच अंकित है। भारत की आज़ादी की लड़ाई में अहिंसात्मक रूप से इनका बहुत बड़ा योगदान रहा। ये मानवाधिकार की रक्षा और अहिंसा के लिए सदैव कार्यरत रहे। इन्होंने राष्ट्र निर्माण के लिए भूदान आन्दोलन में योगदान दिया था। ये योगदान देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ था। ये महात्मा गाँधी के अग्रणी शिष्यों में एक थे, जो सदैव महात्मा गाँधी के मार्ग का अनुसरण करते हुए अपना जीवन राष्ट्र निर्माण में लगाया। नीचे इनकी महान जीवनी पर एक-एक कर के दृष्टि डाली जा रही है।

54. दयानंद सरस्वती

(१८२४-१८८३) आधुनिक भारत के चिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था। उन्होंने वेदों के प्रचार के लिए मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। वेदों की ओर लौटो यह उनका ही प्रमुख नारा था। उन्होंने कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म तथा सन्यास को अपने दर्शन के स्तम्भ बनाया। उन्होंने ही सबसे पहले १८७६ में श्वराज्य का नारा दिया जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढ़ाया। प्रथम जनगणना के समय स्वामी जी ने आगरा से देश के सभी आर्यसमाजों को यह निर्देश भिजवाया कि सब सदस्य अपना धर्म सनातन धर्म लिखवाएं।

55. सद्धानंद सरस्वती

भारत के शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा आर्यसमाज के संन्यासी थे जिन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं का प्रसार किया। वे भारत के उन महान राष्ट्रभक्त संन्यासियों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपना जीवन स्वाधीनता, स्वराज्य शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था। स्वामी बद्धानन्द का जन्म २ फरवरी मन् १८५६ (फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, विक्रम संवत् १९१३) को पंजाब प्रान्त के जालन्धर जिले के तलवान ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ था।

56. धन सिंह गुर्जर

वे भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम क्रान्तिकारी थे जिन्होंने 10 मई 1857 को मेरठ से क्रान्ति शुरूआत की थी।

57. विजय सिंह पथिक

वे भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्हें राष्ट्रीय पथिक के नाम से भी जाना जाता है और इनका वास्तविक नाम भूप सिंह था। इनका जन्म बुलन्दशहर जिले के ग्राम गुठावली कलाँ के एक गुर्जर परिवार में हुआ था। मोहनदास करमचंद गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन से बहुत पहले उन्होंने बिजौलिया किसान आंदोलन के नाम से किसानों में स्वतंत्रता के प्रति अलख जगाने का काम किया था।

58. अबुबकर अब्दुल रहीम (1920-1995)

एक भारतीय राष्ट्रवादी मुस्लिम, स्वतंत्रता सेनानी और राजनीतिज्ञ थे। उनका जन्म का जन्म 7 फरवरी 1920 को त्रावणकोर राज्य (वर्तमान केरल) के तिरुवनंतपुरम जिले के चिरायिनकीझु गांव में हुआ था। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा सरकारी अंग्रेजी स्कूल, क्विलोन से पूरी की। उसके बाद, वे सेंट बर्चमैन कॉलेज चानागनस्सेरी गए। इसके बाद, उन्होंने मोहम्मडन कॉलेज मद्रास, से और यूनिवर्सिटी कॉलेज त्रिवेंद्रम से शिक्षा पूर्ण की।

59. डॉ शौकतुल्लाह शाह अंसारी (1908-1972)

भारत के राष्ट्रवादी मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानी एवं सफल राजनयिक, चिकित्सक थे। जो स्वतंत्रता के बाद बीदर संसदीय सीट से प्रथम लोकसभा के सदस्य चुने गए थे।

60. बेगम साहिबा जीनत महल (1823–86)

मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फर की लोकप्रिय पत्नी थी। बेगम जीनत महल ने 1857 के विद्रोह में दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में क्रांतिकारी योद्धाओं को संगठित कर, देश प्रेम का परिचय दिया।

61. मौलाना मुहम्मद मियां मंसूर असांरी (1884–1946)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में होने वाले रेशमी रुमाल पत्र आन्दोलन के सेनानी एवं राजनीतिक कार्यकर्ता थे। जिसने भारत के बाहर रहकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध करने का काम किया।

62. डॉ ख्वाजा अब्दुल हमीद (1898–1972)

एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्रवादी तथा साम्राज्यवाद विरोधी वैज्ञानिक थे। जिन्होंने 1935 में भारत की सबसे पुरानी दवा कंपनी की स्थापना की।

63. मौलाना महमूद उल हसन रेशमी

माल पत्र आन्दोलन के जनक, भारतीय इस्लामी विद्वान एवं राष्ट्रवादी मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानी थे। मौलाना का जन्म 1851 ई में उत्तर प्रदेश राज्य के जिला बरेली में हुआ था। उनकी शिक्षा दीक्षा इस्लामी तौर तरीकों से हुई।

64. मातंगिनी हाजरा

एक ऐसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थी जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन और असहयोग आंदोलन के दौरान भाग लिया था। एक जुलूस के दौरान वे भारतीय झंडे को लेकर आगे बढ़ रही थीं और पुलिसकर्मियों ने उनपर गोली चला दी। उनके शरीर में तीन गोलियां लगीं फिर भी उन्होंने झंडा नहीं छोड़ा और वे श्वंदे मातरम्ह ने नारे लगाती रहीं।

65. सेनापति बापट

सत्याग्रह के एक नेता होने के कारण उन्हें सेनापति कहा जाता था। स्वतंत्रता के बाद पहली बार उन्हें पुणे में भारतीय ध्वज को फहराने का सम्मान मिला था। तोड़फोड़ और सरकार के खिलाफ भाषण करने के कारण उन्होंने खुद की गिरफ्तारी दी थी। वे एक सत्याग्रही थे जोकि हिंसा का मार्ग नहीं चुन सकता था।

66. अरुणा आसफ अली

बहुत ही कम लोगों ने उनके बारे में यह सुना होगा कि जब वे 33 वर्ष की थीं तब उन्होंने सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहराया था।

67. पोटी श्रीरामुलू

वे महात्मा गांधी के कट्टर समर्थक और भक्त थे। जब गांधीजी के देश और मानवीय उद्देश्यों के प्रति उनकी निष्ठा देखी तो कहा था कि अगर मेरे पास श्रीरामुलू जैसे 11 और समर्थक आ जाएं तो मैं एक वर्ष में स्वतंत्रता हासिल कर लूंगा।

68. भीकाजी कामा

भीकाजी कामा ने न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान किया वरन् वे भारत जैसे देश में लैंगिक समानता की पक्षधर एक नेता थीं। उन्होंने अपनी सम्पत्ति का एक बड़ा भाग लड़कियों के लिए अनाथालय बनाने पर खर्च किया था। वर्ष 1907 में उन्होंने इंटरनेशनल सोशलिस्ट कॉन्फ्रेंस, स्टुटगार्ट (जर्मनी) में भारत का झंडा फहराया था।

69. तारा रानी श्रीवास्तव

बिहार के सीवान नगर के पुलिस थाने पर उन्होंने अपने पति के साथ एक जुलूस का नेतृत्व किया था। उन्हें गोली मार दी गई थी लेकिन वे अपने घावों पर पट्टीक बांधकर आगे चलती रहीं। जब वे लौंटी तो उनकी मौत हो गई थी। लेकिन मरने से पहले वे देश के झंडे को लगातार पकड़े रहीं।

70. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

उन्हें कुलपति के नाम से भी जाना जाता था क्योंकि उन्होंने भारतीय विद्या भवन की स्थापना की थी। वे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बहुत सक्रिय रहे थे। स्वतंत्र भारत के प्रति उनके प्रेम और त्याग के कारण वे अनेक बार जेल गए।

71. लक्ष्मणदास

प्रदेश के मैदानी जिले ऊना के वासी लक्ष्मण दास भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह के संपर्क में आने के बाद लाला लाजपत राय से मिले। उनकी पत्नी दुर्गाबाई, दोनों पुत्र सत्य भूषण एवम् सत्यमित्र ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपना योगदान दिया।

72. मौलवी अली मुसलियार (1861–1922)

वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के मोपला विद्रोह के प्रमुख नेता थे। केरल के मोपला मुसलमानों द्वारा ब्रितानी एवं ज़मींदारों के विरुद्ध किया गया विद्रोह को मोपला विद्रोह कहलाता है। यह विद्रोह मालाबार क्षेत्र में खिलाफत आन्दोलन के विरुद्ध अंग्रेजों द्वारा की गई दंडात्मक कार्यवाही के विरुद्ध किया गया था। केरल के मालाबार क्षेत्र में रहने वाले अरबी और मलयाली मुसलमान थे, जो अधिकांश किसान थे और उच्च जाति वाले भूस्वामी एवं ज़मींदार हिन्दू थे।

73. नरहरि द्वारका दास पारिख

गुजरात के शहीद नरहरि द्वारकादास पारिख एक लेखक, स्वतंत्रतावादी और समाज सुधारक थे गुजरात से, भारत। महात्मा गांधी से प्रभावित होकर, वे जीवन भर गांधीवादी संस्थानों से जुड़े रहे। उन्होंने आत्मकथाएँ, सहयोगियों द्वारा संपादित कार्य और कुछ रचनाओं का अनुवाद किया। उनके लेखन में गांधीवादी प्रभाव भी दिखाई दिया।

74. कमलादेवी चट्टोनपाध्याय

वे भारत के शुरुआती विद्रोहियों में से एक थे और उन्होंने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया था। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण उन्हें 14 अन्य लोगों के साथ फांसी की सजा दी

75. पीर अली खान

कमलादेवी देश की ऐसी पहली महिला थीं जिन्होंने विधानसभा का चुनाव लड़ा था। साथ ही, वे पहली ऐसी महिला थीं जिन्हें अंग्रेज शासन ने गिरफ्तार किया था। उन्होंने एक सामाजिक सुधारक के तौर पर बड़ी भूमिका निभाई और उन्होंने भारतीय महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए हस्तशिल्प, थिएटर और हैंडलूम्स (हथकरघे) को बहुत बढ़ावा दिया।

(भारत को स्वतंत्र कराने एवं विश्व का श्रेष्ठतम गणतंत्र बनाने में निश्चय ही लाखों वीरांगनाओं, पुरुषों, किशोर तरुण, प्रौढ़ एवं वृद्ध, नर नारियों का योगदान है। यह भारतभूमि उन सभी को मन की गहराइयों से सदा याद करती है एवं अनन्तकाल तक इन शहीदों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों चिर ऋणी रहेंगी और उन सभी के बताये आर्दशों एवं नैतिक मूल्यों का देश के नव निर्माण के लिए अपने कर्तव्यपथ पर आगे बढ़ती रहेंगी।)

— क्षितिज की प्रस्तुति

अस्सी/बीस का सिद्धांत

(पैरेटो का सिद्धांत)

यह संभव है कि कुछ पाठक इस सिद्धांत के बारे में प्रथम बार पढ़ रहे हो। पैरेटो सिद्धांत जिसे 80-20 का सिद्धांत भी कहा जाता है, मनुष्य जीवन को सरल तथा सक्षम बनाने की बहुत क्षमता रखता है। इस सिद्धांत को नाम विलफ्रेडो पैरेटो के नाम पर पड़ा है। पैरेटो एक इतालवी अर्थशास्त्री थे। उन्होंने सन 1906 में यह पाया था कि इटली की केवल 20 प्रतिशत जनता का 80 प्रतिशत संपत्ति पर अधिकार है। उन्होंने कहा की यही अनुपात भौतिक संसार में अन्य कई जगहों पर भी लागू होता है और संभव है की यह एक प्राकृतिक नियम है। सन 1940 में डॉ जोसेफ जॉनसन, जो कि एक विद्युतिकी अभियंता थे, उन्होंने इस सिद्धांत को आगे बढ़ाया तथा इसका नाम पैरेटो सिद्धांत रखा। यह सिद्धांत मूल रूप से व्याख्यान करता है कि किसी भी मानवीय कार्य में कुल प्रयत्नों (इनपुट) का केवल 20 प्रतिशत, 80 प्रतिशत परिणामों के लिये जिम्मेदार होता है। एक कारखाने में 80 प्रतिशत परिणाम केवल 20 प्रतिशत लोगो के प्रयत्नों से आते है। किसी भी व्यापार में 80 प्रतिशत धनराशि 20 प्रतिशत ग्राहकों से मिलती है। शेष ग्राहक केवल 20 प्रतिशत का योगदान करते है।

हमारे द्वारा कार्यालय में किये कार्य का 80 प्रतिशत परिणाम केवल 20 प्रतिशत प्रयत्नों से प्राप्त हो जाता है तथा बाकी के 80 प्रतिशत प्रयत्न केवल 20 प्रतिशत का योगदान करते है। यदि आप अपने घर के सामान की सूची बनाए तो आप पाएंगे कि हम केवल 20 प्रतिशत का ही प्रयोग अधिकतर करते है। बाकी का 80 प्रतिशत केवल 20 प्रतिशत ही प्रयोग में लाया जाता है। यदि आप के घर में 4 कमरें है तो आप पायेंगे की आप सिर्फ एक कमरें का प्रयोग 80 प्रतिशत समय व्यतीत करने में करते है तथा बाकी तीन कमरों में केवल 20 प्रतिशत समय व्यतीत करते है।

इस सिद्धान्त से आप अपनी कार्यकुशलता बढ़ा सकते है। आप को यह अध्ययन करना होगा कि आपके कार्यक्षेत्र में कौन से ऐसे 20 प्रतिशत कार्य है जो कि सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। आप अपने 80 प्रतिशत प्रयत्न और समय उन कार्यों को करने के लिये सबसे पहले लगाए तथा बाकी के 20 प्रतिशत कार्य के लिये बचे हुए समय तक साधनों को लगाएं। इससे आपका काम समय पर समाप्त होगा तथा आपकी कार्यकुशलता बढ़ेगी। लेकिन इस का अभिप्राय यह नहीं है कि आपके शेष बचे 20 प्रतिशत कार्य को अनदेखा कर दे। इससे आपको प्राथमिकाताएं चिन्हित करने में सहायता मिलेगी। आप महत्वपूर्ण 20 प्रतिशत कार्य को ज्यादा ध्यान दे सकते है। आप एक अनुसंधान कर सकते है। आप अपने एक महीने के व्यय को कलमबद्ध कर लें। उसके पश्चात अपनी सूची की विवेचना करें। उस से आपको पता चलेगा कि आपका लगभग 80 प्रतिशत व्यय केवल 20 प्रतिशत मदों पर हुआ है, तथा बाकि बची आवश्यकताएं केवल 20 प्रतिशत खर्च से पूरी हो जाती है। इससे आपको यह निर्णय लेने में सहायता मिलेगी की किस व्यय को आप रोक सकते है, तथा जिन महत्वपूर्ण आवश्यकताओ उनके लिये उस धन का सदुपयोग कर सकते है।

आप हेंगर में अपने दैनिक कार्य में इस सिद्धांत का उपयोग कर सकते है। मुख्य बात यह है कि आप अपने उस दिन के काम की सूची में से यह चुनाव कर सकते हैं कि किन कामों का पूरे कार्य पर 80 प्रतिशत प्रभाव पड़ेगा। इसलिए उन 20 प्रतिशत कार्यों को निश्चित कीजिए जिन का आपकी टीम/गैंग के काम पर सब से ज्यादा प्रभाव पड़ेगा अपने सारे प्रयत्न पहले उनपर लगाएं।

यह भी ध्यान रखिये कि यह हमेशा 80 प्रतिशत + 20 प्रतिशत नहीं होता। यह 25 प्रतिशत और 75 प्रतिशत भी हो सकता है। 80 प्रतिशत की संख्या एक अनुमानित संख्या है, मुख्य बिन्दु यह है कि जीवन में किसी भी वस्तु का समान रूप में वितरण नहीं होता। मानव जीवन में कुछ प्रयत्नों का, पुरस्कारों का, संबंधों आदि का योगदान बाकियों की तुलना में कही ज्यादा हो सकता है।

— सी पी रनदेव
प्रबंधक मानव संसाधन

वायुयान

पक्षियों को आकाश में उड़ते हुए देख इंसान सोचता था कि काश वह भी हवा में उड़े। यह विज्ञान का ही चमत्कार है जिसने मानव के स्वप्नों को साकार कर दिया है। आकाश में इंसान के उड़ने का श्रेय राइट ब्रदर्स को जाता है। राइट ब्रदर्स के कठिन प्रयासों का ही फल है कि आज इंसान आकाश का सीना चीर थोड़े समय में एक स्थान से दूसरे स्थान पर बहुत ही आसानी से पहुँच जाता है।

दुनिया में बना पहला विमान बहुत छोटा था, उसमें केवल दो ही लोग बैठ सकते थे। इसके बाद नित नयी तकनीकों का विकास होता गया और बड़े बड़े विमान बनते गये। प्रारम्भ में कुछ लोग ही विमान में बैठ सकते थे, परंतु अब तो बहुत बड़े-बड़े विमान बनने लगे हैं जिनमें हजारों यात्री तक बैठ सकते हैं। जैसे जैसे वायुयानों के आकार में वृद्धि हुई है वैसे ही उनकी गति में भी तेजी हुई है।

वायुयान कई प्रकार के होते हैं जैसे —

- 1) यात्री वायुयान
- 2) युद्ध में काम आने वाले वायुयान
- 3) सामान लाने व ले जाने वाले वायुयान

वायुयानों में हवा को काटने के लिये सामने एक पंखा लगा होता है। अन्दर पायलट तथा यात्रियों के बैठने की बढ़िया सीटें होती हैं। वायुयान की बाडी हल्की धातुओं से बनी होती है और मजबूत होती है।

निजी विमान छोटे होते हैं जिसमें केवल दो लोग बैठ सकते हैं लेकिन कामर्शियल विमान बड़े होते हैं जिसमें संकड़ो, हजारों लोग बैठ सकते हैं। वर्तमान युग में वायुयानों का अत्यधिक महत्व है। क्योंकि वायुयान ही है जिनकी वजह से संसार के सभी देश एक सूत्र में बंध गए हैं। ऐसा लगता है मानो पूरी धरती एक संयुक्त परिवार ही तरह है।

— राजेश यादव
रेप्रोग्राफी सेल

प्रदूषण

वह अवांछित तत्व जो किसी निकाय के संतुलन के प्रतिकूल हो और उसकी खराब दसा के लिए जिम्मेदार हो प्रदूषक तत्व कहलाते हैं तथा उनके द्वारा उत्पन्न विषम परिस्थितियां प्रदूषण कहलाती है। दूसरे शब्दों में "हमारे द्वारा उत्पन्न वे अपशिष्ट पदार्थ जो पर्यावरण के पारिस्थितिकी तंत्र को असंतुलित कर रहे हैं, प्रदूषक तत्व तथा उनके वातावरण में मिलने से उत्पन्न विभिन्न प्रकार के संकट की स्थिति प्रदूषण कहलाती है।"

जब वायु, जल, मृदा आदि में अवांछनीय तत्व घुलकर उसे इस हद तक गंदा कर देते हैं, कि स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालने लगे तो उसे प्रदूषण कहते हैं। प्रदूषण से प्राकृतिक असंतुलन पैदा होता है। साथ ही यह मानव जीवन के लिए भी खतरे की घंटी है।

प्रदूषण मुख्यतः मानवीय गतिविधियों द्वारा उत्पन्न होते हैं और यह हमारे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। प्रदूषण के द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रभावों के कारण मनुष्यों के लिए छोटी बीमारियों से लेकर अस्तित्व संकट जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए पेड़ों की अन्धाधुंध कटाई की है। जिस कारण पर्यावरण असंतुलित हो गया है। प्रदूषण भी इस असंतुलन का मुख्य कारण है।

मनुष्य की यह जिम्मेदारी बनती है कि उसने जितनी नासमझी से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया है, अब उतनी ही समझदारी से प्रदूषण की समस्या को सुलझाये। वनों की अन्धाधुंध कटाई भी प्रदूषण के कारकों में शामिल है। अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर इस पर काबू पाया जा सकता है। इसी तरह कई उपाय हैं, जिन्हें अपनाकर प्रदूषण कम करने के प्रयास किए जा सकते हैं।

अगर हमें अपनी आगामी पीढ़ी को एक साफ, सुरक्षित और जीवनदायिनी पर्यावरण देना है, तो इस दिशा में कठोर कदम उठाने होंगे। और प्रदूषण पर नियंत्रण पाना सिर्फ हमारे देश ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए आवश्यक है। ताकि सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीवन रह सके।

हमें पहले यह जानना जरूरी है कि हमारी किन-किन गतिविधियों के कारण प्रदूषण दिन प्रति दिन बढ़ रहा है और पर्यावरण में असंतुलन फैला रहा है।

वातावरण में मुख्यतः चार प्रकार के प्रदूषण हैं –

जल प्रदूषण

घरों से निकलने वाला दूषित पानी बहकर नदियों में जाता है। कल-कारखानों के कूड़े-कचरे एवं अपशिष्ट पदार्थ भी नदियों में ही छोड़ा जाता है। कृषि में उपयुक्त उर्वरक और कीट-नाशक से भूमिगत जल प्रदूषित होता है। जल प्रदूषण से डायरिया, पीलिया, टाइफाइड, हैजा आदि खतरनाक बीमारियाँ होती है।

वायु प्रदूषण

कारखानों की चिमनी और सड़को पर दौड़ते वाहनों से निकलते धुँएँ में कार्बन मोनो ऑक्साइड, ग्रीन हाउस गैसों जैसे कार्बन डाई ऑक्साइड, मिथेन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन आदि खतरनाक गैसों निकलती हैं। ये सभी गैसों वायुमंडल को भारी नुकसान पहुंचाती हैं। इससे हमारे सेहत पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। दमा, खसरा, टी.बी. डिप्थीरिया, इंपलूएंजा आदि रोग वायु प्रदूषण का ही कारण हैं।

ध्वनि प्रदूषण

मनुष्य के सुनने की क्षमता की भी एक सीमा होती है, उससे ऊपर की सारी ध्वनियां उसे बहरा बनाने के लिए काफी हैं। मशीनों की तीव्र आवाज, ऑटोमोबाइल्स से निकलती तेज आवाज, हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। इनसे होने वाला प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण कहलाता है। इससे पागलपन, चिड़चिड़ापन, बेचौनी, बहरापन आदि समस्याएं होती हैं।

मृदा प्रदूषण

खेती में अत्यधिक मात्रा में उर्वरकों और कीट-नाशकों के प्रयोग से मृदा प्रदूषण होता है। साथ ही प्रदूषित मिट्टी में उपजे अन्न खाकर मनुष्यों एवं अन्य जीव-जंतुओं के सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसकी सतह पर बहने वाले जल में भी यह प्रदूषण फैल जाता है।

निष्कर्ष

प्रदूषण दिन-प्रतिदिन हमारे पर्यावरण को नष्ट करते जा रहा है। इसे रोकने के लिए हमें जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि हमारी इस पृथ्वी की खूबसूरती बरकरार रह सके। यदि अब भी हम इस समस्या का समाधान करने बजाए इसे अनदेखा करते रहेंगे, तो भविष्य में हमें इसके घातक परिणाम भुगतने होंगे।

— महेश सिंह मदीरिया
प्रभारी टूल्स स्टोर



जिस तरह मनुष्य नश्वर है
ठीक उसी तरह विचार भी नश्वर हैं।
जिस तरह पौधे को पानी की जरूरत
पड़ती है
उसी तरह एक विचार को
प्रचार-प्रसार की जरूरत होती है
वरना
दोनों मुरझा कर मर जाते हैं।

बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर

समय पर किये जाने वाले सुबह के नाश्ते का महत्त्व

क्या आप जानते हैं एक सुबह का सही समय से लिया हुआ नाश्ता आपके शरीर को पूर्ण रूप से स्वस्थ रख सकता है, और आपके व्यक्तित्व को खारने में सहायक हो सकता है?

मस्तिष्क की चिन्ता का विषय होता है शरीर को सुबह के समय सही मात्रा में ऊर्जा प्राप्त करवाना ताकी आपका शरीर अपनी दिनचर्या सही प्रकार से आरम्भ कर सके। इसका कारण है सोते समय शरीर में एकत्रित अधिकतम कैलोरीज (ऊर्जा) की खपत अन्दरूनी अंगों के द्वारा कर ली जाती है। उठते ही मस्तिष्क न्यूरोन, द्वारा यह जानना चाहता है कि शरीर में प्रवाहित रक्त में कितनी ग्लूकोज बाकी है।

2. ग्लूकोज शरीर द्वारा पचाये गये भोजन का सबसे तरल पदार्थ है जो लीवर में एकत्रित होता रहता है और अति शीघ्र आवश्यकता पड़ने पर ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है। लीवर ग्लूकोज को एकत्रित करने वाले बैक का कार्य करता है।

3. सुबह जब हम अलग की आवाज सुनकर उठते हैं तो उसी समय हमारे मस्तिष्क मे भी खलबली गवने लगती है। न्यूरोन का कार्य मस्तिष्क द्वारा दिये गये निर्देशों को शरीर के अंगों की तरफ ले जाना और अंगों से प्राप्त सूचनाओं को मस्तिष्क तक पहुंचाना है। जैसे ही न्यूरोन द्वारा मस्तिष्क को संदेश दिया जाता है कि सिर्फ 15 से 20 मिनट की ऊर्जा रक्त में उपलब्ध है तो मस्तिष्क फिर से न्यूरोन को लीवर में जाता है यह मालूम करने के लिये कि लीवर में ग्लूकोज की कितनी मात्रा संग्रहित है। लीवर अपना ग्लूकोज के बचत खाते को जांचता है और बताता है कि उसका खाता सिर्फ अगले 20 से 25 मिनट के लिए पर्याप्त है। इसका अर्थ लगभग कुल मिलाकर 290 ग्राम ग्लूकोज शरीर में है, जो उठने के पश्चात लगभग अगले 45 मिनट तक ऊर्जा देने तक कार्य कर सकती है। न्यूरोन का कार्य मस्तिष्क द्वारा दिये गये निर्देशों को शरीर के अंगों की तरफ ले जाना और अंगों से प्राप्त सूचनाओं को मस्तिष्क तक पहुंचाना है।

4. अब मस्तिष्क की चिन्ता यही होती है कि हम नाश्ता किस समय करेगे ताकि लीवर नागी बैंक में ग्लूकोज रूपी बचत खाते में कमी न आये।

परन्तु अगर आप शीघ्रता में है और कॉलेज, स्कूल अथवा ऑफिस जाने की जल्दी में नाश्ता नहीं करते या करना नहीं चाहते, तो मस्तिष्क शरीर में आपतकालीन जैसी स्थिति लागू कर देता है और कोर्टिसोन नामक हारमोन को इस परिस्थिती से जूझने के लिए कहता है और आदेश देता है कि शरीर की मांसपेशियों से, आस्थियों के लिगमेन्ट से और त्वचा के से जितनी प्रोटीन निकाल सकते हो निकाल लो। इस प्रकार कोर्टिसोन अपने कार्य में लग जाता है और इन अंगों की कोशिकायें इस प्रकार खुलने लगती है जैसे शॉपिंग के समय किसी मां का पर्स खुलता है। इन अंगों से निकली प्रोटीन लीवर की ओर जाती है और साधारण ग्लूकोज में परिवर्तित हो जाती है, इस प्रकार यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तब तक आप कुछ खाते नहीं है।

5. इस लिये जो भी यह सोचता है कि सुबह का नाता जा करने से कोई फर्क नहीं पड़ता, तो यह उसकी गलतफहमी है। क्योंकि नाश्ते के अभाव में व्यक्ति ऊर्जा प्राप्त करनेके लिये खुद की मांसपेशियों लिगमेन्ट को ही रखा रहा है। ऐसे में व्यक्ति अपनीमांसपेशियों की बनावट को खो देता है व्वा पर झुर्रियों पड़ने लगती है, अस्थियों के जड़ कमजोर पड़ने लगते है। ऐसी स्थिति में मस्तिष्क जिसे अन्य बौद्धिक कार्यों में व्यस्त होना चाहिये वो शरीर को ऊर्जा देने की आपतकालीन स्थिति से निपटने के कार्य में लग जाता।

6. इसका प्रभाव आपके वनज पर भी पड़ता है। जब व्यक्ति अपनी सुबह फास्टिंग से प्रारम्भ करता है तो प्रतिदिन के कार्यों को करने के लिए ऊर्जा उसे शरीर के एकत्रित ऊर्जा भंडार से लेनी पड़ती है जिस कारण शरीर का गेटाबोलिज्म कम होने लगता है। (मेटाबोलिज्म शरीर के सभी अंगों की कार्य क्षमता की गति निर्धारित करता है। इस प्रकार मस्तिष्क को मालूम नहीं कि यह फास्टिंग कब तक चलेगी कुछ घंटे या कुछ

दिन। इसलिये मस्तिष्क शरीर में आपातकालीन जैसी स्थिति उत्पन्न करने लगता है।

7. बाद में जब व्यक्ति दोपहर का खाना खाने का निश्चय क है, तो खाना ज्यादा खाया जाता है और अधिक मात्रा में खाया गया खाना वसा में परिवर्तित हो कर त्वचा की चौथी परत में एकत्रित होने लगता है जिस कारण व्यक्ति का वजन बढ़ना प्रारम्भ हो जाता है।
8. ऊर्जा प्राप्ति के लिये सबसे पहले मॉसपेशियों के प्रयोग होने का कारण है कोर्टिसोल हार्मोन का सुबह के समय अधिक कार्यरत होना और यहा आसानी से प्राप्त होने वाली मांसपेशियों की प्रोटीन को सुबह के समय ग्लूकोज में परिवर्तित करने लगता है। यही कारण है, जिससे आपका शरीर बेडोल होने लगता है।
9. अब इस सत्य को जानने के पश्चात कभी भी बिना गश्ता किये बाहर न निकले, बदले में आपका शरीर व मस्तिष्क भी आपको पूर्ण रूप से स्वस्थ रखेगा, जो आप अनुभव करेंगे और अपने सगे सम्बन्धियों के साथ एक लम्बी स्वास्थ्यपूर्ण व खुशनुमा जिन्दगी व्यतीत कर सकेंगे।
10. सिर्फ एक सुबह का समय से लिया गया नाश्ता आपमें सम्पूर्ण ऊर्जा का संचार करेगा, आपका मस्तिष्क तीव्र गति से कार्य करेगा, आपके विचारों को सही दिशा मिलेगी और आपका शरीर रिलैक्सड रहते हुये ज्यादा लॉजिकली प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करेगा और सबसे बड़ी बात आपका स्ट्रेस लेवल भी कम होने लगेगा।

रात्रि में शीघ्र सोने का महत्व

भगवान ने मनुष्य के शरीर की रचना ही इस प्रकार की है कि व्यक्ति दिन में कार्य करें और रात्रि में निन्द्रा रूपी विश्राम लें।

वास्तव में क्या आप जानते है कि भगवान ने सभी के सिर में एक ग्रन्थी दी है जिसे पीनियल ग्रन्थि कहते है। यह एक प्रकार से मनुष्य के शरीर में एक बायोलॉजिकल कलॉक का कार्य करती है और यह नर्ब ऑख को रोशनी देने वाली नर्ब से जुड़ी होती है।

इसका आकार एक मटर के दाने के समान होता है। हर रोज दिन ढलने के साथ ही (अर्थात संध्या के समय) यह एक स्त्राव उत्पन्न करना प्रारम्भ कर देती है जिसे मेलाटोनिन कहते है, जो रक्त स्त्राव में मिल जाता है और शरीर की कैंसर तथा अन्य बिमारियों से रक्षा करता है।

यह ग्रन्थी सिर्फ अंधेरे में कार्य करती है इसलिये अ ऑख रोशनी के सम्पर्क मे रहेगी, तो यह ग्रन्थी कार्य नही करती क्योंकि ऐसे में ग्रन्थी के हिसाब से अभी रात्री का समय नहीं हुआ है।

इस प्रकार अगर आप रात में देर तक लाइट जला कर जागते है तो खुद को इस प्राकृतिक वैक्सीन से दूर रखते है।

हमारे बड़े बूड़े दादा दादी इत्यादी जो सुबह जल्दी उठते थे और रात को जल्दी सोते थे, उनमे कभी कैंसर या अन्य बिमारियाँ, जो आजकल सुनने में आती है नही हुई।

भगवान ने यह प्राकृतिक वैक्सीन हमारे शरीर को इसलिये दिया है कि शरीर की बिमारियों से रक्षा हो सके। इसलिये इसे प्राप्त करने के लिये रात्री में जल्दी सोना आवश्यक है।

यह ग्रन्थी रात का अंधेरा होते ही कार्य करना प्रारम्भ कर देती है और सूरज उगने के 2 घंटे पहले तक कार्य करती रहती है।

इसलिये इसका सही लाभ अवश्य उठाये और शरीर को स्वस्थ रखें।

— रेखा नरेश

वरिष्ठ सहायिका, थल अनुदेशन विभाग

आकर्षण का सिद्धांत का सिद्धांत

आकर्षण का सिद्धांत कैसे काम करता है?

आकर्षण का सिद्धांत कैसे काम करता है? या आकर्षण के नियम को समझने के लिए सबसे पहले हमें आकर्षण के रहस्य को समझना होगा। हम अपने जीवन में अपने विचारों और उन विचारों के कर्मों से अपनी ओर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों चीजों को आकर्षित कर सकते हैं। आकर्षण का सिद्धांत इस बात पर निर्भर करता है कि इस ब्रह्मांड की हर एक चीज ऊर्जा है एवं ऊर्जा से ही निर्मित है।

अतः जैसी ऊर्जा आप इस ब्रह्मांड में छोड़ेंगे, वैसी ही ऊर्जा वापस आपके पास लौटेगी। अगर ब्रह्मांडीय ऊर्जा से इच्छाओं को पूरा करने के लिए आप आकर्षण के नियमों की मदद लेना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको अपनी मानसिकता, अपनी सोच को सकारात्मक बनाना होगा साथ ही अपने सकारात्मक विचारों के साथ अपने लक्ष्यों के लिए मेहनत करना शुरू करना होगा और इसी के साथ अपने लक्ष्यों को पाने में आने वाली कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना होगा।

इच्छाओं को कागज पर लिखना—

जब हम अपनी इच्छाओं को कागज पर लिखते हैं तब क्या होता है? यह तथ्यात्मक प्रश्न दुनिया में आकर्षण के सबसे बड़े रहस्यों में से एक है जो हमारे सपनों और इच्छाओं को पूरा करने की क्षमता रखता है। दुनिया में बहुत ही कम लोग हैं जो इसके बारे में जानते हैं अपनी इच्छा के उस क्षण के विचार को कागज पर लिखें, जिसे लेकर आप बेहद गंभीर हैं। एक इंसान का दिमाग औसतन दिन भर बहुत सारी इच्छाओं और सपनों के बारे में सोचता है। लेकिन जिस इच्छा या सपने को पूरा करने के लिए आप कुछ भी करने के लिए तैयार हों, उसी इच्छा को आप एक कागज पर लिख डालिए। जब आप ऐसा करेंगे तो आपके दिमाग को एक सकारात्मक मजबूत संदेश जाएगा, जिससे दिमाग को लगेगा कि वो चीज जिसे आपने कागज पर लिखा है वह आपके लिए बेहद खास है और आप उसके लिए बहुत गंभीर हैं यानी कि जिस चीज को पाने के लिए आप गंभीर हुए हैं, उसी चीज को पाने के लिए आपको आपका दिमाग ऊर्जा और ताकत देना शुरू कर देगा। मतलब कागज पर इच्छाओं को लिखने से आपका तार्किक दिमाग भी उस इच्छा पर प्रतिक्रिया करेगा और उसे गंभीरता से लेने लगेगा।

जैसे— लिखित परीक्षाओं को आपका तार्किक दिमाग गंभीरता से लेता है।

क्योंकि.... लिखने की प्रक्रिया का हमारे तार्किक दिमाग पर एक मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, जिससे हमारा दिमाग अपने आप हमें अंदर से इतनी ऊर्जा, शक्ति और प्रेरणा देता या देने लगता है जिससे हम अपनी उस इच्छा या लक्ष्य को जल्द से जल्द पूरा कर लें और अपने जीवन को सुखी व खुशहाल बना पाएं। लेकिन दिमाग की इस शक्ति को पाने के लिए आपको अपना एक लक्ष्य निर्धारित करना बेहद जरूरी है। जैसे—कोई मनचाही नौकरी पानी हो या फिर नौकरी में वांछित प्रमोशन पाना हो। आपको अपना लक्ष्य तो रखना ही चाहिए। इच्छाओं को कागज पर लिखना तो बाद की बात है। पहले आप अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्ट हों कि आपको असल में चाहिए क्या? अपने लक्ष्य को निर्धारित करने के लिए आपको अकेले रहने का प्रयास करना चाहिए और अपने विचारों का मंथन करना चाहिए।

नेपोलियन हिल जो एक बहुत बड़े अमेरिकन लेखक हैं। उन्होंने भी यह बताया है कि जो लोग अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं यानी कि उन्हें क्या चाहिए? इसके बारे में वह एकदम स्पष्ट हैं कि हां! मुझे यह चाहिए, मेरी यह इच्छा है। जिनका लक्ष्य एकदम स्पष्ट और निर्धारित होता है, वे अपनी जिंदगी में अपने उस लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर ही लेते हैं। वहीं दूसरी तरफ जिन लोगों को अपने जीवन में यह पता ही नहीं होता कि उन्हें अपनी जिंदगी में क्या करना है? जो मात्र निरर्थक जिए जा रहे हैं, वे लोग अपनी जिंदगी में

जैसे हैं, वैसे ही रह जाते हैं और समय बीत जाने के बाद पछतावे का मातम मनाते हैं। इस बात की, कई सारे शोधों और खोजों से पुष्टि की जा चुकी है।

वैज्ञानिक अनुसंधान—

एक वैज्ञानिक अनुसंधान बताता है कि आपको अपने लक्ष्य की इच्छा को कागज पर क्यों लिखना चाहिए? यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया के एक मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर जिनका नाम डोमिनिकन है। उन्होंने लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा को कागज पर लिखने से सम्बन्धित काफी शोध और अध्ययन किया है। अपने अध्ययन—गत परीक्षण में उन्होंने लगभग 267 व्यक्तियों को लिया, जिसमें उन्होंने हर प्रकार के लोगों के साथ यूनिवर्सिटी के छात्रों एवं स्नातकों के दोनों वर्गों बालक और बालिकाओं को लिया और इन 267 व्यक्तियों को अलग—अलग दो दलों में बांट दिया—

1. एक वो जो अपनी इच्छाओं को कागज पर लिखते थे। और
2. दूसरे वे जो अपनी इच्छाओं को बस दिमाग में सोचकर रखते थे।

पहले दल के लोगों को यह कहा गया कि आपकी जो इच्छा है उसे एक कागज लिखकर उस कागज को हमेशा अपने सामने रखना ताकि रोज कम से कम एक बार आपकी नजर उस पर पड़े। जिससे आपकी इच्छा और उसका लक्ष्य आपको हमेशा याद रहे।

वहीं जो दूसरे दल के लोगों से कहा गया कि आप अपनी इच्छा और उसके लक्ष्य को सिर्फ दिमाग में ही याद रखना है। प्रोफेसर डोमिनिकन के इस अनुसंधान के बाद यह परिणाम निकला कि जो लोग अपनी इच्छा और उसके लक्ष्य को कागज पर लिखते थे उन लोगों ने अपनी ज्यादातर इच्छाओं के लक्ष्य को अच्छे से पूरा कर लिया और वह भी बहुत कम समय में। लेकिन वहीं दूसरे दल के लोग जो अपनी इच्छाओं और उसके लक्ष्य को कागज पर नहीं लिखते थे उनमें से ज्यादातर लोगों के जीवन में कोई विशेष बदलाव नहीं आया था मतलब वो जैसे पहले थे, वैसे ही रह गए, मात्र एक या दो लोग ही अपना लक्ष्य पूरा कर पाए। अनुसंधान के अंतिम में स्पष्ट वैज्ञानिक परिणाम यह निकला कि— जब आप अपनी किसी इच्छा को पूरा करने के लिए गंभीर होकर अपनी उस इच्छा के लक्ष्य को एक कागज पर पूरे भाव से लिखते हैं तो आपकी इच्छा पूर्ण होने के मौके 42 प्रतिशत से 49 प्रतिशत तक बढ़ जाते हैं।

लॉ ऑफ अट्रैक्शन कैसे काम करता है? इसको समझने के लिए आपको विज्ञान और आध्यात्मिक पक्ष दोनों को समझने की जरूरत है—

1. विज्ञान कहता है— ऊर्जा ही ऊर्जा को आकर्षित करती है। जबकि
2. आध्यात्म के अनुसार— आपके विचार ही आपका लक्ष्य निर्धारित करते हैं।

मतलब आपकी जो इच्छा है उसको रोज कल्पना करना, अपनी कल्पना को यथार्थ में जीना और यह मानना कि जो आपकी इच्छा थी वह पूरी हो रही है या चुकी है और आप उस इच्छा का अपने वर्तमान भौतिक जिंदगी में लुप्त उठा रहे हैं। असल में आकर्षण का नियम हमारे दिमाग की एक शक्ति है जो हमारी इच्छाओं को पूरा करने के लिए काम करती है। और दिमाग की इस शक्ति को उजागर तथा उन्नत बनाने के लिए हमें आकर्षित करने के उपाय और कारणों को गहराई से समझना होगा।

विचारों की अभिव्यक्ति

विचारों की अभिव्यक्ति चीजों को अपनी ओर आकर्षित करने की एक ऐसी तकनीक है जिसमें हम अपने विचारों के माध्यम से अपनी इच्छाओं और लक्ष्यों की कल्पना करते हैं और हमारे द्वारा की गई कल्पना भविष्य में धीरे—धीरे साकार होने लगती है। हमारा दिमाग एक कोरे कागज की तरह होता है। हम अपनी कल्पना की ताकत से अपने सकारात्मक विचार और इच्छाओं को अपने दिमाग के अवचेतन मन को संदेश

भेजते हैं।

हमारी कल्पना शक्ति जितनी ठोस और मजबूत होगी उतनी ही जल्दी हमारा संदेश हमारे अवचेतन मन /दिमाग तक पहुंचेगा। एक बार संदेश पहुंचने के बाद हमारा दिमाग हमारी उस इच्छा को पूरा करने में लग जाएगा और हमें अपनी इच्छा पूर्ति के नए-नए मार्ग, तरीके और संकेत दिखाना शुरू कर देगा। लेकिन अवचेतन मन /दिमाग तक अपनी इच्छा पहुंचाने के लिए हमें अपनी कल्पना शक्ति को ठोस, मजबूत, उन्नत विचारों से युक्त भावनात्मक बनाना बेहद जरूरी है।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने भी इस संबंध में कहा है कि यदि आप कल्पना कर सकते हैं तो आप उसे असल में भी कर सकते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से

वैज्ञानिक दृष्टि से बात करें तो जब हम किसी इच्छा या लक्ष्य को अपने दिमाग में ही रखते हैं। जैसे कि मुझे उच्च स्तर की परीक्षा पास करनी है या फिर मुझे वह नौकरी करनी या पानी है। जब हमारे दिमाग में इस तरह की इच्छाएं आती हैं तब हम हमारे दिमाग का दायों हिस्सा ही काम करता है। क्योंकि हमारे दिमाग का केवल दायों हिस्सा ही कल्पनाशील होता है। इसलिए जब हम अपने सपने के बारे में सोचते हैं तब हम हमारे दिमाग का दायें हिस्से को सक्रिय करते हैं। लेकिन मूल बात यह है कि हम अपनी इच्छाओं को तभी पूरा कर पाएंगे, हमें हमारा दिमाग अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए ऊर्जा और प्रेरणा तभी देगा। जब हम अपने दिमाग के दोनों हिस्सों का इस्तेमाल करेंगे, मतलब दिमाग का दायों हिस्सा और बायां हिस्सा दोनों एक साथ काम करेगा तभी हमें हमारे दिमाग से अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए पूरी ताकत मिलेगी।

इच्छाओं को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत और नकारात्मकता से बचें

हर इंसान इच्छा जरूर रखता है लेकिन कुछ लोग अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और कुछ केवल अपने सपनों में ही खोये रहते हैं। मात्र कल्पना करने से कुछ हासिल नहीं होता बल्कि सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत करना बेहद जरूरी है। अब आप कहेंगे कि जब मेहनत ही जरूरी है तोलों ऑफ अट्रैक्शन का क्या काम? समझिए इस बात को कि लों ऑफ अट्रैक्शन एक प्रकार की सोची गई इच्छाओं को पूरा करने वाली दिमागी शक्ति है। जिसे हम स्वयं द्वारा विकसित कर इच्छित चीजों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं। लेकिन हमें अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मेहनत करना भी जरूरी है। कुल मिलकर आकर्षण की शक्ति आपको चाहिए तो आपको अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी और नकारात्मक विचारों से खुद को सुरक्षित रखना पड़ेगा।

अंत में

आकर्षण का सिद्धांत मूल रूप से ब्रह्मांड और उसकी ऊर्जा से अपनी बात को सकारात्मक व भावनात्मक भाव से कहना है। मतलब आपके विचारों की अभिव्यक्ति, सकारात्मक और कल्याणकारी हो।

— विजय कुमार यादव
टेक्नियन अभियांत्रिकी (रेडियो)

फेमिनिज़म अथवा नारीवाद-क्या इसकी आवश्यकता है?

सवाल जटिल है और हर किसी के मन में एक हलचल और कई सवाल पैदा कर देता है। बहुत सारे लोग हैं जो नारीवाद को एक दिखावा मानते हैं। लेकिन हमें नारीवाद को उसकी वास्तविक भावना में समझना होगा। समाज को इस विशेष शब्द की आवश्यकता और अर्थ समझने और समझाने की जरूरत है। कई बार नारीवाद समाज के एक विशेष वर्ग के लिए मानवाधिकार प्रदान करने के लिए अनिवार्य साबित होता है।

अनादि काल से हम महिलाओं के लिए कमजोर शब्द का इस्तेमाल करते आए हैं। इससे पता चलता है कि उन्हें दूसरे लिंग की तुलना में कमजोर माना जाता है और उनकी सुंदरता के कारण ही उनकी सराहना की जाती है। हां, प्रकृति ने हर प्रजाति की मादाओं को मांसपेशियों की ताकत में पुरुषों के मुकाबले कमजोर बना दिया है। परंतु प्रत्येक लिंग को अलग अलग विशेषताये भी प्रदान की हैं। उनमें से सबसे बड़ा शक्ति नारी को ही प्राप्त है, वो ही इस संसार में नया जीवन ला सकती है।

आदिम युग में, शारीरिक रूप से मजबूत लिंग ने परिवार और समाज के मुखिया होने की जिम्मेदारी उठाई थी। उस समय पुरुष शिकार करके और जंगलो से भोजन एकत्र करके अपने और अपने परिवार के आजीविका चलाते थे और महिलाओं ने खुद को अपने परिवार की देखभाल करने तक सीमित कर दिया था। तब से पुरुष आबादी यह सोचने लगी कि हर समूह में उनका अंतिम अधिकार है।

फेमिनिज़म वास्तव में क्या है?

यह महिलाओं को पुरुषों से श्रेष्ठ बनाने या उन्हें आगे निकलने में मदद करने के बारे में नहीं है। यह दोनों को समान मानने और उन्हें बराबर अवसर देने के बारे में है। हमें शुरुआत से ही शुरु करनी होगी। हमें लड़कों के पैदा होने पर जो खुशी प्राप्त होती है उतनी ही खुशी एक लड़की की होने पर हो, उसे वही प्यार मिले जो एक लड़के को मिलता है, उसे समान अवसर प्रदान करें। इसके अलावा, हमें कार्यस्थलों पर समान कार्य के लिए समान वेतन के नियम का पालन करना चाहिए। हमें महिलाओं की भूमिका को घर के भीतर सीमित नहीं मानना चाहिए। वे उन सभी कर्तव्यों के लिए समान रूप से सक्षम हैं जो पुरुष करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी महिला की सराहना उसकी प्रतिभा के आधार पर ही हो ना कि रूपरंग के आधार पर।

वे शारीरिक क्षमता में कमजोर होंगी, लेकिन उनकी बुद्धि और सीखने की क्षमता उनके पुरुष समकक्ष के बराबर होती है। इस नए युग में महिलाएं हर क्षेत्र में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही हैं और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। अब उन्हें घरेलू क्षेत्र में सीमित नहीं किया जा सकता है। लेकिन फिर भी हर कदम पर महिलाओं के अधिकारों से वंचित किया जाता है और उन्हें अपने योग्य अधिकारों को हासिल करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। कुछ देशों में महिलाओं के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता है। उन पर अत्याचार अनगिनत हैं। इस तरह के अत्याचारों के कुछ उदाहरण हैं बलात्कार घरेलू हिंसा, एसिड अटैक, महिलाओं को सार्वजनिक रूप से बुर्का पहनने के लिए मजबूर करना, जबरन विवाह, कन्या भ्रूण हत्या और, विधवा को जलाना, दहेज प्रथा और क्या नहीं।

महिलाओं को इन सभी बाधाओं से लड़ना पड़ता है और कहीं भी अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए पुरुषों से बेहतर प्रदर्शन करना पड़ता है। हम दावा करते हैं कि सभी को समान मौके मिल रहे हैं लेकिन अगर हम वास्तविकता से गुजरते हैं तो हम देख सकते हैं कि महिलाओं को काम और घरेलू जिम्मेदारियों के साथ

ओणम - सुशासन की आशा

ओणम दक्षिण भारत के बाहर कई लोगों के लिए केवल छुट्टियों की सूची में एक प्रतिबंधित अवकाश (9) है। परंतु, दुनिया भर में हम केरलवासियों द्वारा मनाया जाने वाला यह त्योहार, आज के ज़माने में बहुत महत्वपूर्ण है। ना केवल इसलिए कि यह एक ऐसा त्योहार है जिसे सभी धर्म के लोग एक साथ मनाते हैं, बल्कि इसलिए भी है, कि वर्तमान परिस्थिति में यह हर एक समाज के लिये अनुकरणीय संदेश प्रदान करते हैं।

कहा जाता है कि असुर राजा महाबली ने देवताओं को हराकर तीनों लोकों पर अधिकार हासिल कर लिया था। इसने देवताओं को नाराज कर दिया और भगवान महाविष्णु से राक्षस राजा के खिलाफ लड़ाई में उनकी मदद करने का आग्रह किया। महाबली भगवान विष्णु के भक्त थे और भगवान को युद्ध में पक्ष लेना मुश्किल लगा। विष्णु, अपने वामन (गरीब ब्राह्मण) अवतार में महाबली के पास गए। महाबली महादानी थे। वामन ने भूमि के एक टुकड़े पर संपत्ति के अधिकार के लिए आग्रह किया जो पत्नी कदमरु में मापी जाए। महाबली ने इस इच्छा को स्वीकार कर लिया। तब वामन अवतार ने आकार में विराट रूप धारण किए और उन्होंने केवल दो चरणों में ही सारे धरती और आकाश नाप लिये और तीसरे कदम को लिये खड़े रहे। महाबली ने अपने वचन और सम्मान को बनाए रखने के लिए तीसरे कदम के लिए अपना सिर आगे कर दिए। उनके आचरण से प्रभावित होकर, भगवान विष्णु ने उन्हें हर साल एक बार पृथ्वी पर लौटके अपने प्रजा से मिलने की अनुमति के साथ पातल में भेज दिए। इस घर वापसी को ओणम के रूप में मनाया जाता है।

ओणम के संदेश को हर साल सझने और मनन करने की आवश्यकता है। ओणम महाबली साम्राज्य की समृद्धि और खुशहाली से स्मरण किया जाता है द्य वह समृद्धि किसी भी चीज़ के बजाय सुशासन की ही परिणाम थी।

महाराजा महाबली के लिए अपने राज्य केरल के लोगों के खुशहाली ही अहम प्राथमिकता और प्रतिबद्धता थी। अपने प्रजा के कल्याण, समृद्धि और सुख- समृद्धि ही उनका परम उद्देश्य था। व्यवसाय स्वतंत्र रूप से संचालित हो सकते थे, लोगों को एक- दूसरे पर भरोसा था, क्योंकि शासन तंत्र को लोगों पर भरोसा था। राजा महाबली को अपने आसपास के लोगों पर भी विश्वास था। और राजा की ओर से या अधिकारियों, नौकरशाहों और स्थानीय सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार और रिश्वत का कोई सवाल ही नहीं था। जो लोग महाबली साम्राज्य के योजना आयोग में काम कर रहे थे, उन्हें स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित किया गया था। हालांकि कई विदेशी शिक्षित युवाओं के आवेदन आए, लेकिन उन्हें उन पर कभी विश्वास नहीं हुआ, ऐसा लगता है कि राजा स्वयं प्रशासन के मामलों में अपने अधिकारियों को अच्छा प्रशिक्षण प्रदान करने में रुचि लेता था। आज हम नारे लगाते हैं "वोकल फोर लोकल उन्होंने यह तभी अपनाया हुआ था।

महाबली साम्राज्य मौजूदा नियमों को सावधानीपूर्वक क्रियान्वित करने के लिए बहुत उत्सुक था। राजा कभी भी नए नियम लागू नहीं करना चाहता था और अपने राज्य पर "सुधार" नामक अनावश्यक जटिलताओं का बोझ नहीं डालना चाहता था। नैतिक व्यवसाय प्रथाएं व्यवसायों के लिए नियम थे, और यह बहुत अधिक नियामक जटिलताओं के बिना होता था। राजा महाबली निश्चित रूप से व्यवसायियों और व्यापारियों की ओर से नैतिक व्यवसाय प्रथाओं की मांग कर सकते थे। लेकिन व्यवसायियों और व्यापारियों

को नैतिक तरीके से व्यापार करने में कभी कोई कठिनाई नहीं हुई। उन्हें सरकार में लोगों को कभी रिश्वत नहीं देनी पड़ी। योजना आयोग, लोगों की समस्याओं, व्यवसायियों, व्यापारियों, कृषि उद्यमियों की चुनौतियों को समझने और लोगों के जीवन को और आसान बनाने पर अधिक श्रद्धा केंद्रित करता था द्र नीति, योजना और आर्थिक प्रबंधन के मामलों में कोई पक्षपात स्वीकार्य नहीं था। दस्तावेजीकरण और रिकॉर्ड रखना इतना सही था कि कभी भी फाइलें गायब नहीं होती थीं और वह व्यवस्था एकदम पारदर्शी भी थी। थोड़ी सी असफलता के लिए भी राजा बहुत सख्त कार्रवाई करते थे। राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता रखने वाले नीति निर्माताओं को वास्तव में स्थानीय ज्ञान की आवश्यकता पर लोगों के ध्यान आकर्षित करना होगा, जिसे महाबली ने सुनिश्चित किया था।

अक्सर कहा जाता है कि हमें वही नेता मिलते हैं जो हमारे लिए उपयुक्त होते हैं। हम भ्रष्टाचार, कुशासन और लालफीताशाही आदि की दुर्दशा के लिए खुद को दोषी मानते हैं। हालाँकि, जब हमारे पास नैतिक, सच्चे और ईमानदार नेता शीर्ष में होते हैं, उसकी छलक प्रशासन में परिलक्षित होते हैं, और इसके माध्यम से समग्र कल्याण और समृद्धि होगी।

कोई भी सरकार रातों- रात समृद्धि नहीं ला सकती है। महाबली साम्राज्य में एक अच्छा उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र था। कृषि और कृषि उद्यम फलते- फूलते थे और साथ ही व्यवसाय और व्यापारी भी! लोगों के पास नौकरी थी। बेरोजगारी नहीं थी। इसलिए लोगों के पास चोरी और डकैती में शामिल होने का कोई कारण नहीं था। कोई धोखा नहीं था क्योंकि इसका कोई आवश्यकता नहीं था। लोगों को एक दूसरे पर और सरकार के नीतियों पर विश्वास था! बाजार प्रणाली ने बहुत अच्छी तरह से काम किया। नीति निर्माण, योजना बनाने और सरकार में विदेशी हितों के लिए कोई स्थान नहीं था।

अंत में, जैसा कि हम सभी जानते हैं, राजा अपने प्रारंभिक दृष्टिकोण से थोड़ा विचलित हुए।

एक विदेशी के प्रति उसकी उदारता ने सारा नुकसान किया। लेकिन महाबली साम्राज्य में सीपित सुशासन व्यवस्था हमारे लिए एक सबक है। समृद्धि और विकास के लिए सुशासन ही बुनियाद है, जहां शासन के मूल में सत्यनिष्ठा, सच्चाई और अपने देश के प्रति प्रतिबद्धता मौजूद रहता है। एक महाबली साम्राज्य के कामना करते हुए

जय हिन्द।

— गोपा कुमार
सहायक प्रशासनिक अधिकारी



पूर्ण प्रभावी संस्कार किये बिना देशशक्ति का स्थायी
स्वल्प निर्माण होना संभव नहीं है तथा इस प्रकार की
स्थिति का निर्माण होने तक सामाजिक व्यवहार में
प्रमाणिकता भी संभव नहीं।

— केशव बलिराम हेडगेवार



नागर विमानन सचिव
श्री राजीव बंसल
व
श्री पी.के. ठाकुर
उप महानिदेशक मोका
के साथ निरीक्षण करते हुए
निदेशक इग्रुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता



ए.एम.ई. रिफ्रेशिंग क्लास में पढ़ाते हुए निदेशक इगुआ, श्री कृष्णन्दु गुप्ता



रिफ्रेशर कोर्स में सम्मिलित मुख्य अभियन्ताओं, कैम, वयू एम और अभियन्ताओं के साथ निदेशक



नागर विमानन सचिव
श्री राजीव बंसल
व
श्री पी.के. ठाकुर
उप महानिदेशक मोका
के साथ निरीक्षण करते हुए
निदेशक इग्रुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता



बाउण्डेड एवं टूल्स स्टोर
प्रभारीगण
के साथ स्टॉफ

सुरक्षा प्रबंधक के साथ
सहायक परिचालन
अधिकारी
एवं अन्य



अग्निशामन स्टॉफ
व
अन्य कर्मचारीगण



अधिकारियों के साथ जलपान करते निदेशक



उप मुख्य अनुदेशक उड़ान के साथ उड़ान अनुदेशक



प्रशासनिक भवन
के बाहर
भव्य पुष्पावलि

आवासीय भवनों
के पास मोहक हरीतिमा



प्रचालन भवन
के सामने हरित उद्यान



फ्यूल स्टेशन में
इण्डियन ऑयल का
जन्मदिन मनाते
हुए
अधिकारीगण व स्टाॅफ

वायुयान में कार्य
करते हुए
अभियन्तागण
व
स्टाॅफ



इगुआ के वरिष्ठ ए.टी.सी.
अधिकारी
व
ए.टी.सी. अधिकारी



वरिष्ठ चिकित्साधिकारी

वरिष्ठ चिकित्साधिकारी



पायलटों का
बी.ए. परीक्षण
करते हुए
चिकित्साकर्मी

भारत में वायु परिवहन के ऐतिहासिक तथ्य

भारत में वायु परिवहन का इतिहास बहुत पुराना है। यद्यपि यहाँ पर हम पुष्पक विमान की चर्चा नहीं करते हैं, क्योंकि इस पर बात करना एक युगांतर पूर्व की बात कही जाएगी। किसी देश के विकास में उसके यहाँ मौजूद यातायात के संसाधनों का बहुत महत्व होता है। इसमें ट्रेन, बस, समुद्री परिवहन एवं वायु परिवहन आदि का प्रमुख स्थान होता है। यही कारण है कि कुछ लोग यातायात के लिए मौजूद इन संसाधनों की तुलना मानव शरीर में मौजूद रक्त कोशिकाओं से भी करते हैं। जहाँ तक ऐतिहासिक तथ्यों की बात है, 1933 ईस्वी में इंडियन नेशनल एयरवेज कंपनी की स्थापना हुई. 1953 ईस्वी में सभी वैमानिक कंपनियों का राष्ट्रीयकरण करके उन्हें दो नवनिर्मित निगमों के अधीन रखा गया—

1. भारतीय विमान निगम
2. एयर इंडिया

भारतीय विमान निगम देश के आंतरिक भागों के निकट समीपवर्ती देश नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव, म्यांमार व अफगानिस्तान को सेवाएँ उपलब्ध करता है। एयर इंडिया विदेशों के लिए सेवाएँ उपलब्ध करता है।

हमारे देश में वायु परिवहन की शुरुवात 1911 ईस्वी में हुई, जब इलाहाबाद से नैनी के बीच विश्व की सर्वप्रथम विमान ज़ाक सेवा का परिवहन किया गया। 1981 ईस्वी में देश में घरेलू उड़ान के लिए वायुदूत नामक तीसरे निगम की स्थापना की गयी थी। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी की स्थापना के प्रारंभिक कुछ वर्षों तक वायुदूत की यह सेवा फुरसतगंज एयरफील्ड पर भी उपलब्ध रहीं थी। कुछ समय के उपरान्त इस वायुदूत सेवा का भी भारतीय विमान निगम में विलय हो गया।

24 अगस्त 2007 ईस्वी को सार्वजनिक क्षेत्र की विमानन कम्पनियाँ अब नेशनल एविएशन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड के नाम से कार्य कर रही है। परन्तु कम्पनी का ब्रांड नाम एयर इंडिया है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण का गठन 1 अप्रैल 1995 ईस्वी को किया गया था। यह प्राधिकरण देश में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, घरेलू हवाई अड्डे और नागरिक विमान टर्मिनलों का प्रबंधन करता है।

वायु परिवहन यातायात का सबसे तेज और आधुनिक साधन कहा जाता है। इस तीव्रगामी साधन का महत्त्व भारत जैसे भौतिक दृष्टि से विविधतापूर्ण तथा विशाल देश में स्वतः स्पष्ट है। वास्तव में देखा जाय तो हमारा देश पश्चिमी देशों और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच में स्थित होने के कारण एक जंक्शन की भाँति उपयोग में आता है। इस कारण से भारत को वायु परिवहन की दृष्टि से विश्व में केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। वर्तमान में भारत में लगभग 126 हवाई अड्डे हैं जिनमें कई अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के हैं। वर्तमान में तो कई प्राइवेट एयरलाइन्स कंपनियाँ अपना संचालन कर रही हैं।

हवाई संसाधनों में पवन हंस हेलिकॉप्टर्स लिमिटेड का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह विभिन्न निजी संस्थानों एवं राज्य सरकारों को आवश्यकतानुसार हेलीकॉप्टर की सेवा प्रदान करती है। तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम एवं आयल इंडिया लिमिटेड जैसी कंपनियों को पवन हंस कार्पोरेशन द्वारा सेवा प्रदान

की जाती है।

इसके अतिरिक्त देश में कई फ्लाइंग ट्रेनिंग क्लब भी है, जहाँ वायुयान चालकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्तमान में महानिदेशक, नागरिक उड्डयन, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त लगभग 34 फ्लाइंग क्लब एवं अकादमी है। इसमें कुछ सरकारी सहायता प्राप्त है तथा कुछ का प्रबंधन निजी हाथों में है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी एक मात्र एविएशन ट्रेनिंग संस्थान है, जिसे भारत सरकार द्वारा संचालित किया जाता है। पायलट ट्रेनिंग रैंकिंग में इस संस्थान का हमारे देश में प्रथम स्थान है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी (इगुआ) में कामर्शियल लाइसेंस का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त पायलट कई राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय एयर लाइन्स में पायलट के अनेक उच्च पदों पर कार्यरत है। यहाँ पर ट्रेनिंग का स्तर बहुत ही आधुनिक एवं उच्च कोटि का है। यहाँ पर सिविल पायलट प्रशिक्षण के अतिरिक्त पायलट से सम्बंधित कई अर्धसैनिक बलों के अधिकारियों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। भारी संख्या में विदेशी छात्रों ने भी यहाँ से पायलट का प्रशिक्षण सफलता पूर्वक प्राप्त कर विभिन्न एयरलाइन्स में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। यही कारण है कि इस संस्थान को अंतरराष्ट्रीय नागरिक विमानन संगठन (ICAO) द्वारा भी मान्यता प्रदान की गई है।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि भारत में वायु यातायात की अपार संभावनाए है। निकट भविष्य में रेल एवं बस सुविधा की भांति वायु परिवहन की सुविधा को आम लोगो तक पहुंचाने के लिए सरकार कटिबद्ध है। यही कारण है कि जहाँ एक ओर सरकार अनेक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों का निर्माण कर रही है वही दूसरी ओर इसमें कार्य करने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त मानव संसाधनों की उपलब्धता के लिए इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी एवं राजीव गांधी एविएशन विश्वविद्यालय पर विशेष ध्यान दे रही है।

तेज बहादुर सिंह
प्रभारी मानव संसाधन विभाग



सत्ताधीशों की सत्ता उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाती है, पर महान देशभक्तों की सत्ता मरने के बाद काम करती है, अतः देशभक्ति अर्थात् देश-सेवा में जो मिठास है, वह झीर किसी चीज में नहीं।

- सरदार वल्लभभाई पटेल

पन्नाधाय के बलिदान की कहानी

पन्ना धाय राणा सांगा के पुत्र राणा उदयसिंह की धायमाँ थी। अपना सर्वस्व स्वामी को अर्पण करने के लिए जानी वाली राणा सांगा के पुत्र उदयसिंह को माँ के स्थान पर दूध पिलाने कारण पन्नाधाय माँ कहलाई थी। पन्ना का पुत्र चन्दन और राजकुमार उदयसिंह साथ-साथ बड़े हुये थे। उद्यसिंह को पन्ना ने अपने पुत्र के समान पाला था।

चित्तौड़गढ़ के इतिहास में जहाँ पदिमनी के जौहर की अमरगाथाएं, मीरा के भक्तिपूर्ण गीत गुंजते हैं वहीं पन्नाधाय जैसी मामूली स्त्री की स्वामीभक्ति की कहानी भी अपना अलग स्थान रखाती है।

बात तब की है, जब चित्तौड़गढ़ का किला आन्तरिक विरोध व षड़यंत्रों में जल रहा था। मेवाड़ का भावी राणा उदयसिंह किशोर हो रहा था। तभी उदयसिंह के पिता के चचेरे भाई बनवीर ने एक षड़यंत्र रचकर उदयसिंह के पिता की हत्या महल में ही करवा दी तथा उद्यसिंह को मारने का अवसर ढुंढने लगा। उदयसिंह की माता को संशय हुआ तथा उन्होंने उद्यसिंह को अपनी खास दासी व उदयसिंह की धाय पन्ना को सौंप कर कहा कि, पन्ना अब यह राजमहल व चित्तौड़ का किला इस लायक नहीं रहा की मेरे पुत्र तथा मेवाड़ के भावी राणा की रक्षा कर सके, तू इसे अपने साथ ले जा, और किसी तरह कुम्भलगढ़ भिजवा दे। पन्नाधाय राणा सांगा के पुत्र राणा उदयसिंह की धायमाँ थी। पन्नाधाय किसी राजपरिवार की सदस्य नहीं थी। अपना सर्वस्व स्वामी को अर्पण करने वाली वीरंगना पन्नाधाय का जन्म कमेरी गाँव में हुआ था। राणा सांगा के पुत्र उदयसिंह को माँ के स्थान पर दूध पिलाने के कारण पन्नाधाय माँ कहलायी थी। पन्ना का पुत्र चन्दन और राजकुमार उदयसिंह साथ-साथ बड़े हुये थे। उदयसिंह को पन्ना ने अपने पुत्र के समान पाला था, पन्नाधाय ने उदयसिंह की माँ रानी कर्मावती के सामुहिक आत्म बलिदान द्वारा सर्वगारोहण पर बालक की परवरिश करने का दायित्व संभाला था। पन्ना ने पूरी लगन से बालक की परवरिश और सुरक्षा की पन्ना चित्तौड़ के कुम्भा महल में रहती थी।

चित्तौड़ का शासक दासी का पुत्र बनवीर बनना चाहता था, उसने राणा के वंशजो को एक-एक कर मार डाला। बनवीर एक रात महाराजा विक्रमादित्य की हत्या करके उद्यसिंह को मारने के लिए उसके महल की ओर चल पड़ा। विश्वत सेवक द्वारा पन्नाधाय को इसकी पूर्व सूचना मिल गई। पन्नाधाय राजवंश और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग थी व उदयसिंह को बचाना चाहती थी, उसने उदयसिंह का एक बांस की टोकरी में सुलाकर उसे झूठी पतलों से ढक कर एक विश्वासपात्र सेवक के साथ महल से बाहर भेज दिया।

बनवीर को धोखा देने के उदेश्य से अपने पुत्र को उदयसिंह के पलंग पर सुला दिया। बनवीर तलवार लिये उदयसिंह के कक्ष में आया और उसके बारे में पूछा, पन्ना ने उदयसिंह के पलंग की ओर संकेत किया जिस पर उसका पुत्र सोया था। बनवीर ने पन्ना के पुत्र को उद्यसिंह समझकर मार डाला। पन्ना अपनी आँखों के सामने अपने पुत्र के वध को अविचलित रूप से देखती रही। बनवीर को पता न लगे इस कारण वह आँसू भी नहीं बहा पायी। बनवीर के जाने के बाद अपने मृत पुत्र की लाश चूमकर राजकुमार को सुरक्षित सीन पर ले जाने के लिये निकल पड़ी।

स्वामीभक्त वीरंगना पन्नाधाय धन्य है ! जिसने अपने कर्तव्य पूर्ति में अपनी आँखों के तारे पुत्र का बलिदान देकर मेवाड़ राजवंश को बचाया।

निज प्रिय लाल कटाय, प्रभुसूत लियो बचाय

क्यों ना होवे मेवाड़, पूजति पन्नाधाय ॥

— सिराज अहमद
अग्निशमन अनुभाग

संकल्प शक्ति

मानवीय मस्तिष्क में संकल्पों का प्रवाह अनवरत चलता ही रहता है – कभी तीव्र वेग के साथ तो कभी धीमे। यहाँ तक की सुप्त अवस्था में भी, मस्तिष्क क्रियाशील रहता है। जैसे पवन की गति को रोकना असम्भव है।

वैसे ही मन की गति को कम करना या रोकना एक बहुत बड़ी साधना का विषय है और एक आम इन्सान के लिये तो लगभग असम्भव ही है। हाँ, मन के संकल्पों को एक दिशा जरूर दी जा सकती है। जिस दिशा में चिन्तन करेंगे, उसी दिशा में परिणाम जरूर मिलेंगे। यह संकल्पों की दुनिया है। पहले मन में संकल्प उत्पन्न होता है, फिर चिन्तन चलता है, फिर क्रियान्वयन हेतु प्लानिंग चलती है। तब जा कर वास्तविक क्रियान्वयन होता है। अगर संकल्प ही पॉज़िटिव चलें तो अन्तिम परिणाम भी श्रेयस्कर होगा। इसीलिये कोई भी प्रोजेक्ट पूरा करने से पहले सब मिलजुल कर गहन चिन्तन करते हैं, नक्शे बनाते हैं, हर सेकंड की गतिविधियों पर अनुमान लगाते हैं, अच्छे और बुरे प्रभावों के बारे में गणना करते हैं तभी निष्पादन हेतु बटन दबाते हैं। हाल ही में नोएडा में दिवन टावर का पूरी तकनीकी प्रतिबद्धता के साथ केवल 9 सेकंड में ध्वस्त होना एक उच्च स्तरीय मानव चिन्तन के योजनाबद्ध निष्पादन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

बैठे बैठे संकल्पों को अगर किसी रमणीक वादियों में ले जायेगे, मधुर संगीत की धुनों में खो जाएँगे या अन्य किसी हास्यप्रद घटनाओं में ले जाएँगे तो मन हल्का हल्का सा हो कर प्रफुल्लित अनुभव करेगा। और इसी मन को अगर विपरीत संस्मरणों में ले जायेंगे तो निश्चित है कि दुखी हो कर ब्लड प्रेशर के मरीज़ बन जायेंगे। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप जीवन में सुख चाहते हैं या दुख। मनुष्य अपने चारों ओर का वातावरण स्वयं निर्मित करता है। जैसी सोच वैसा वातावरण। जैसा बनने के लिये चिन्तन करोगे, वैसे ही बनोगे। सब दुख दूर होने के बाद मन प्रसन्न होगा, यह एक भ्रम है। मन प्रसन्न रखो, सब दुख दूर हो जायेंगे, यह हकीकत है।

जब हम मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च जाते हैं तो अपनी निरीह प्रार्थना अर्चना के फलस्वरूप अपने दृष्ट देव से वरदानों के, आशीर्वादों के पॉज़िटिव संकल्पों की बौछार का अनुभव करते हैं। उस समय मन में रती भर भी नेगेटिव विचार नहीं आते द्य मन से भरपूर होकर घर लोटते हैं द्य इसी प्रकार की पॉज़िटिव ऊर्जा को हम चलते फिरते, घर ऑफिस में अपने नित्य आचरण में भी महसूस कर सकते हैं और उससे आत्मीयता बनाये रख सकते हैं। यही एहसास, यही अभ्यास एक साधना है। इसी ऊर्जा से ही तो सब निर्मित हुए हैं। फिर इसे भूल कर हम दूर क्यों हो जाते हैं। परेशान का अर्थ ही है कि अपनी सही शान से परे। जो अपनी शान से जितना दूर होगा, उतना ही परेशान होगा द्य खुश रहना एक जीवन जीने कि कला है और इसके लिये मन को साधना अति आवश्यक है। और अपनी खुशी पर हमारा निजी अधिकार है। इस संसार कि कोई भी पर स्थिति हमसे हमारी खुशी छीन ही नहीं सकती। हर हाल में हमें खुश रहना ही है।

सर्व भवन्तु सुखिनः का चिन्तन, सबसे पहले स्वयं को सुखी करता है। क्योंकि यह शुभ संकल्प अपने मन से निकलने के कारण पहले स्वयं को ही प्रभावित करते हैं। अपनी उन्नति के लिये, समाज में सदभाव और भाईचारे के लिये, मन से सर्व के प्रति सदा शुभ संकल्प, कल्याणकारी दुआएं ही निकली चाहिये। वसुधैव कुटुम्बकम् का संकल्प इसी कल्याणकारी भावना का प्रारूप है। इसी में ही सर्व जन मानस का कल्याण है और आज के वातावरण में और भी प्रासांगिक है और जन जन की प्यास भी है।

यह संकल्पों की दुनिया है। पहले मन में संकल्प उत्पन्न होता है, फिर चिन्तन चलता है, फिर क्रियान्वयन हेतु प्लानिंग चलती है। तब जाकर वास्तविक क्रियान्वयन होता है। अगर संकल्प ही पॉज़िटिव चलें तो अन्तिम परिणाम भी श्रेयस्कर होगा।

— डी के मल्होत्रा,
कंसल्टेंट सिमुलेटर अभियन्ता

६ “जिन्दगी”

एक धनी व्यापारी की चार पत्नियाँ थीं। वह अपनी चौथी पत्नी से सबसे अधिक प्रेम करता था और उसकी सुख-सुविधाओं में उसने कोई करार नहीं छोड़ी थी।

वह अपनी तीसरी पत्नी से भी बहुत प्रेम करता था। वह बहुत खूबसूरत थी और व्यापारी को सदैव यह भय सताता था कि वह किसी दूसरे पुरुष के प्रेम में पड़कर उसे छोड़ न दे।

अपनी दूसरी पत्नी से भी उसे बहुत प्रेम था। वह बहुत अच्छे स्वभाव की थी और व्यापारी की विश्वासपात्र थी। जब कभी व्यापारी को कोई समस्या आती तो वह दूसरी पत्नी से ही सलाह लेता था और पत्नी ने भी उसे कई बार कठिनाइयों से निकाला था।

और व्यापारी की पहली पत्नी उससे बहुत प्रेम करती थी और उसने उसके घर, व्यापार और धन-संपत्ति की बहुत देखभाल की थी लेकिन व्यापारी उससे प्रेम नहीं करता था। वह उसके प्रति उदासीन था।

एक दिन व्यापारी बहुत बीमार पड़ गया। उसे लगने लगा कि उसकी मृत्यु समीप थी। उसने अपनी पत्नियों के बारे में सोचा – “मेरी चार-चार पत्नियाँ हैं पर मैं मरूंगा तो अकेले ही। मरने के बाद मैं कितना अकेला हो जाऊँगा!”

उसने अपनी चौथी पत्नी से पूछा – “मैं तुमसे सर्वाधिक प्रेम करता हूँ और मैंने तुम्हें सबसे अच्छे वस्त्र-आभूषण दिए। अब, जब मैं मरने वाला हूँ, तुम मेरा साथ देने के लिए मेरे साथ चलोगी?” – ऐसी अजीब बात सुनकर चौथी पत्नी भौंचनल्ली रह गयी।

वह बोली – “नहीं-नहीं! ऐसा कैसे हो सकता है!”

चौथी पत्नी के उत्तर ने व्यापारी के दिल को तोड़कर रख दिया। फिर उसने अपनी तीसरी पत्नी से भी वही कहा – “तुम मेरी सबसे सुंदर और प्यारी पत्नी हो। मैं चाहता हूँ कि हम मरने के बाद भी साथ-साथ रहें। मेरे साथ मर जाओ!” – लेकिन तीसरी पत्नी ने भी वही उत्तर दिया – “नहीं! मैं तो अभी कितनी जवान और खूबसूरत हूँ। मैं तो किसी और से शादी कर लूंगी” – व्यापारी को उससे ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी।

व्यापारी ने अपनी दूसरी पत्नी से कहा – “तुमने हमेशा मेरी मदद की है और मुझे मुश्किलों से उबारा है। अब तुम मेरी फिर से मदद करो और मेरे मरने के बाद भी मेरे साथ रहो!” – दूसरी पत्नी ने कहा – “मुझे माफ़ करें। इस बार मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकती।” – व्यापारी को यह सुनकर सबसे ज्यादा दुःख हुआ।

तभी उसे एक आवाज सुनाई दी – “मैं आपके साथ चलूंगी मौत भी मुझे आपसे दूर नहीं कर सकती।” – यह व्यापारी की पहली पत्नी की आवाज़ थी। उसकी ओर कोई भी कभी ध्यान नहीं देता था। वह बहुत दुबली-पतली, रोगी, और कमज़ोर हो गयी।

उसे देखकर व्यापारी ने बहुत दुःख भरे स्वर में कहा – “मेरी पहली पत्नी, मैंने तो तुम्हें हमेशा नज़रअंदाज़ किया जबकि मुझे तुम्हारा सबसे ज्यादा खयाल रखना चाहिए था।

सावधान

हमारे जीवन में भी व्यापारी की ही भाँति चार पत्नियाँ होती हैं –

- 1– हमारी देह हमारी चौथी पत्नी है। हम इसका कितना भी बेहतर ध्यान रखें, मौत के समय यह हमारा साथ छोड़ ही देती है।
- 2– हमारी धन–संपत्ति हमारी तीसरी पत्नी है। हमारे मरने के बाद यह दूसरों के पास चली जाती है।
- 3– हमारा परिवार हमारी दूसरी पत्नी है। हमारे जीवित रहते यह हमारे करीब रहता है, हमारे मरते ही यह हमें बिसरा देता है।
- 4– हमारी आत्मा हमारी पहली पत्नी है जिसे हम धन–संपत्ति की चाह, रिश्ते–नाते के मोह, और सांसारिकता की अंधी दौड़ में हमेशा नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

– सुनील भटनागर

वरिष्ठ सहायक, लेखाविभाग

बेटा बेटी एक समान

कुदरत की अनमोल धरोहर।
एक से एक महान।।
है बेटा बेटी एक समान
दोनों रूप बड़े करमातीना
एक है दीपक एक है बाली
दोनों कुल करते हैं।
एक शशि एक भानु– है बेटा बेटी एक समान
दोनों से भरता घट रीता
बेरा राम तो बेटी सीताना
सीता राम बिना कर जोरे !
मान थे श्री माना है बेटा बेटी एक समान
ममता में कैसी कोरखवरी।
बजने लगी खतरे की घंटी
जान बूझ कर मानव निरमल ।
करता है विषपान।। है बेरा बेटी एक समान

– शिवकरन सिंह
टूल्स स्टोर

योग की उपचार शक्ति

योग न केवल जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार करता है बल्कि हमारे जीवन को बहुत सार्थक भी बनाता है। योग हमारी ताकत, लचीलेपन, संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का एक शानदार तरीका है। फिट और मानसिक रूप से मजबूत बनने के लिए योग एक बेहतरीन कसरत है।

1. योग चिंता को कम करने में मदद कर सकता है—

चिंता पूरी दुनिया में फैली हुई है। हम अपने जीवन की समस्याओं को मानसिक रूप से सुलझाने में निरंतर लगे रहते हैं। एक शोध से पता चला है एक सप्ताह में दो बार एक घंटे योग करने से चिंता विकार में उल्लेखनीय कमी आती है। योग हमें वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करने और हमारे शरीर से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

2. योग तनाव को कम करने में मदद कर सकता है—

हमारे चारों तरफ तनाव है। रोजमर्रा की जिंदगी के दबाव पुराने तनाव को जन्म दे सकते हैं। एक अध्ययन में योगियों में गैर-योगियों की तुलना में कम कोर्टिसोल का स्तर पाया गया। कोर्टिसोल तनाव से जुड़ा हार्मोन है।

3. योग अवसाद में मदद कर सकता है—

नैदानिक भाषा में, कोर्टिसोल के बढ़े हुए स्तर अवसाद से जुड़े होते हैं। बहुत अधिक कोर्टिसोल सेरोटोनिन तेज में हस्तक्षेप कर सकता है, जिससे अवसाद हो सकता है। योग अवसाद के उपचार से निपटने में मदद करता है।

इसलिए, यह स्पष्ट है कि योग के कई स्वास्थ्य लाभ हैं जो हमें फिट और शांत रहने में मदद करते हैं। योग हमें वर्तमान में जीने और अपने जीवन के हर पल का आनंद लेने में मदद करता है।

— रवि कुमार सोनकर

सहायक, मानव संसाधन विभाग



मैं एक मनुष्य हूँ और जो कुछ भी मानवता को प्रभावित करता है उससे मुझे लगाव है।

— भगत सिंह

ध्यान

ध्यान क्या है?

ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जिस में किसी भी एक वस्तु पर बहुत लम्बे समय तक हम अपना ध्यान लगातार केन्द्रित करते हैं। यह एक कोमल एवं सूक्ष्म प्रक्रिया है जिस में अपने मन के ऊपर किसी भी तरह की ज़ोर-ज़बरदस्ती करने की आवश्यकता नहीं होती। इस अभ्यास के फलस्वरूप आपकी एकाग्रता एवं ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता बढ़ जाती है।

ध्यान के बारे में साधारणतः ऐसा भ्रम है कि यह बहुत कठिन है जिस में कोई परिणाम पाने के लिए कई वर्षों के अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह बिल्कुल झूठ है। अक्सर, लोगों ने अपने ध्यान के पहले सत्र के फौरन बाद ही ध्यान से लाभान्वित होने की ख़बर दी है।

ध्यान के फ़ायदे –

भावनात्मक ध्यान, स्वयं के साथ समय व्यतीत करने की विधि एवं स्वयं का आविष्कार करने की एक यात्रा है। स्वयं को समझकर, हम अपने भावनात्मक लचीलेपन का निर्माण कर पाते हैं तथा अपने अन्तर्दृष्टि को टटोलते हैं। फिर, प्रति दिन का संघर्ष एवं चिड़चिड़ाहट आपके ऊपर कोई असर नहीं कर पाता है क्योंकि अब आप अपने मध्य, समभाव एवं मौजूदा क्षण में होते हैं।

बेहतर नींद :

हम अक्सर, अपने अतीत एवं भविष्य की चिन्ताओं के एक ऐसी अनिश्चित स्थिति में फँसे होते हैं जो हमारे रात की नीन्द में खलल पैदा करती है। यदि आप नियमित रूप से ध्यान का अभ्यास करें तो धीरे-धीरे आप अपने वर्तमान का आनन्द उठाने लगेंगे। दिन भर की चिन्ताएँ एवं भविष्य आपको परेशान नहीं करेंगे तथा आप चैन की नीन्द सो पाएँगे। अगले दिन जब आप सुबह को जागेंगे तो आप हल्का एवं ताज़ा अनुभव करेंगे।

ध्यान से मन केन्द्रित-

मन को नियन्त्रित करने के लिए ध्यान बहुत सहायक है। मन की, अत्यधिक सोंचने एवं अपने व्यक्तिगत पसन्द-नापसन्द के आधार पर, आसानी से कई दिशाओं में खिंच जाने की प्रवृत्ति होती है। जब आप हर गैर-ज़रूरी विचार को आवश्यकता से अधिक ध्यान देते हैं तो जो वास्तव में आवश्यक है, आप उससे दूर हो जाते हैं। ध्यान का अभ्यास आपको अनावश्यक चीज़ों को नमनता से अनदेखा कर, जो महत्वपूर्ण है उस पर ध्यान देने में मदद करता है। यह आप में और भी ज़्यादा स्पष्टता ले आता है एवं आप जो भी करते हैं उस में आपको अधिक कुशल तथा सक्षम बनाता है।

तनाव:

जैसे-जैसे आप अपने मन को लगातार एक विचार पर स्थिर करने देते हैं, हर तरफ़ से आपका ध्यान खिंचने के बदले, आपके तनाव का स्तर घटने लगता है। इससे दूसरे कई स्वास्थ्य से जुड़े रोग जैसे उच्च रक्त चाप, अनियमित अथवा ज़ोरों से दिल का धड़कना, उच्च स्पन्द दर, असामान्य श्वसन तथा चिन्ता का भी नियन्त्रण होता है।

– राकेश सिंह

अनुदेशक, ए.एम.ई. स्कूल



भगवान विश्वकर्मा जी की
पूजा करते
निदेशक एवं
इग्नुआजन

भगवान विश्वकर्मा जी की
हवन करते
निदेशक एवं
इग्नुआजन



भगवान विश्वकर्मा जी की
पूजा में
सम्मिलित
सी.एफ.आई. एवं
महिलाकर्मी



वायुयान पर कार्यरत तकनीकी स्टाॅफ



पुस्तकालय में वरिष्ठ सहायक के साथ सहायकगण



सहायक लेखाधिकारी
व
लेखा स्टॉफ

आजादी का अमृत महोत्सव
मनाते हुए
निदेशक इगुआ
के साथ
अधिकारी पायलट
व अन्य कर्मचारीगण



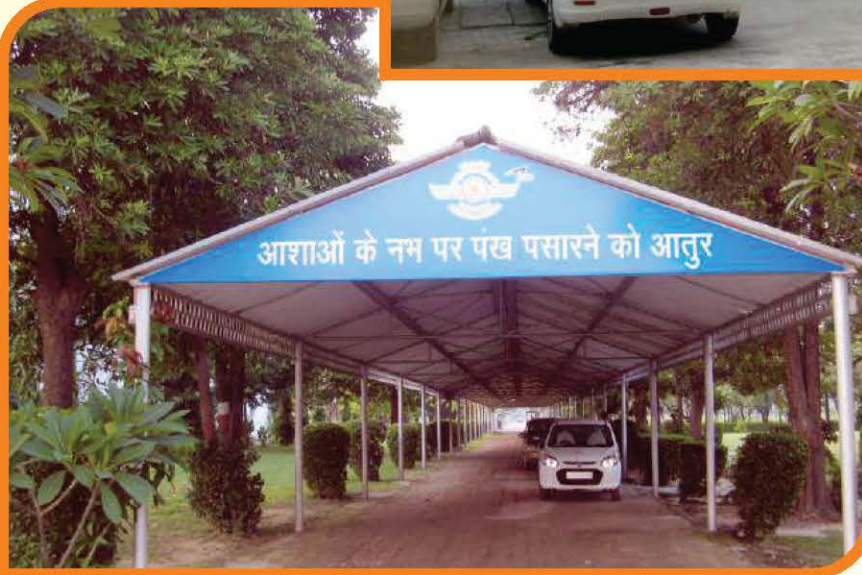
मेन्टीनेन्स मैनेजर के साथ
एन.डी.टी. प्रभारी



प्रशासनिक भवन



अनुदेशन भवन



उड़ान प्रशिक्षणार्थियों का
प्रवेशद्वार



निदेशक के साथ
पत्रिका
के प्रधान सम्पादक
व
अभियन्ता तथा महिलाकर्मी

गुलबर्गा (दक्षिण भारत) में
शीतकालीन उड़ान
प्रशिक्षण के दौरान
कालाबर्गी एयरपोर्ट में
सी.एफ.आई के साथ अन्य
उड़ान अनुदेशक
एवं
अधिकारीगण।
(अतीत के झरोखे से)



आजादी के अमृत महोत्सव
व स्वतंत्रता दिवस के
अवसर पर
निदेशक इगुआ के साथ
अधिकारीगण एवं वरिष्ठ कर्मी



प्रचालन भवन के बाहर
टैक्सी ट्रेक पर
वायुयान

उड़ान भरता हुआ
वायुयान



उड़ान भरता हुआ
वायुयान



आत्म निर्भर भारत कार्यक्रम
के अन्तर्गत
आर्गेनिक खेती का
निरीक्षण करते हुए
निदेशक इग्रुआ

वृक्षारोपण करते
हुए
निदेशक इग्रुआ



निदेशक व सी.एफ.आई
के साथ
कोस्टगार्ड के अधिकारीगण।



सी.एफ.आई. व एयर इण्डिया की वरिष्ठ पायलट



महिला शक्ति सी.एफ.आई. व अन्य महिला पायलट

सेवाभाव - मनुष्यत्व का प्रथम लक्षण

सभी ऋषियों मुनियों तथा विचारकों ने इस बात को स्वीकार किया है कि इस संसार दुर्लभ है, वह है - मनुष्य का शरीर रामचरित मानस के उत्तर काण्ड में गरुड काम में जो संवाद में, गरुड जी कागभुशुंडि जी से सात प्रश्न पूछते हैं उनमें पहला प्रश्न यही है -

सबसे दुर्लभ कवन सरीरा ।" और इस

प्रश्न का उत्तर देते हुए कागभुशुंडि जी बताते हैं ।

"नर तन सम नीह कवनिउ देही ।

जीव-चराचर जाचत ते ही ॥ अर्थात्

मनुष्य का शरीर पाना सबसे दुर्लभ है, लेकिन मनुष्य का तन पाकर मनुष्यत्व (मानवीय गुणों) का विकास हो तभी मानव जीवन की सार्थकता है। दया, करुणा, परोपकार, स्नेह, सहानुभूमि व सदाचार ऐसे सदगुण हैं जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से पृथक करते हैं।

पशु-पक्षी आदि प्राणियों में संवेदनशीलता बहुत कम होती है छ उनमें श्स्व" ही सब कुछ है श्परश् के लिए कोई स्थान नहीं होता। दूसरों के मनोगत भावों को समझना, लोगों के सुख-दुख में साथ रहना तथा दूसरों की पीड़ा, दुख-दर्द को समझना, उसको दूर करने का प्रयास करना तथा यथायोग्य सहायता करने को तत्पर रहना ये ऐसे गुण हैं जो केवल मनुष्य में ही पाये जा सकते हैं, पशु-पक्षियों में यह सामर्थ्य नहीं होती कि वह अपने अतिरिक्त दूसरों की किसी प्रकार सेवा/सहायता कर सके छ वस्तुतः मनुष्य के अलावा शेष सभी प्राणी मात्र अपने लिये ही जीते हैंछ इस सन्दर्भ में कविवर मैथिलीशरण गुप्त जी की ये पंक्तियाँ पूर्णतः सटीक सिद्ध होती है-

"यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे

वहीं मनुष्य है जो मनुष्य के लिये मरे ॥"

मनुष्य में संवेदनशीलता का भाव, परस्पर जोड़ने, प्रेम करने, सेवा, परोपकार करने की भावना को जागृत करता है। जिस मनुष्य में जितनी अधिक संवेदनशीलता होगी वह उतना ही क्छ अपने आस-पास तथा समाज की घटनाओं के प्रति सजग होता है। यदि हमारे आस-पास कोई अत्यधिक कष्ट में है, बीमार है, क्षुधार्त है, तो हम सर्व सुख साधन सम्पन्न होते हुए भी तब तक पूर्ण सुख का अनुभव नहीं कर सकते, जब तक वह दुखी व्यक्ति कष्ट से मुक्त न हो जाये।

मनुष्य अपनी चिन्तन शक्ति और अनुभव से उचित अनुचित, भले-बुरे, का निर्णय कर सर्वजन हिताय का कार्य करता है। हमें स्वार्थ भावना से ऊपर उठ कर श्रेयस्कर कार्य करने हेतु अपने आस-पास, घर परिवार व समाज के वातावरण को सुखद बनाने के सेवा और सहयोग की भावना से जरूर कुछ न कुछ काम करना चाहिये। श्रम, समय, और अर्थ इन तीनों से अथवा यथाशक्ति जो भी हो सके, मनुष्य को दूसरों की सेवा करनी चाहिये।

सेवा भाव को विस्तार देते हुए घर परिवार के सीमित दायरे से निकलकर जो समाज और राष्ट्र के व्यापक हित को ध्यान में रखकर अपना समय, श्रम और धन जीवन को न्यौछावर कर देते हैं ऐसे लोगों को स्वयं तो आत्म संतोष मिलता ही है साथ ही दूसरों को उनके जीवन दर्शन से श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त होती है द्य सेवा भाव का एक नया आयाम हमें तब देखने को मिलता है जब हम अपने पूर्वजों / "महापुरुषों के त्याग तप का स्मरण करते हैं तथा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सबको परिचित कराते हैं ।

महात्मा बुद्ध स्वामी विवेकानन्द सदृश अनेक पूज्य महापुरुषों के जीवन तथा विचारों का केन्द्रीय पक्ष वस्तुतः दीन दुखियों की सेवा करना, उनके कष्टों को दूर कर सबको सुखी बनाना रहा है । आम आदमी को समाज में उचित स्थान / सम्मान दिलाने शारीरिक रूप से अक्षम लोगों तथा रोगियों की सेवा सुश्रुष करने का जो काम महात्मा गाँधी जी ने किया उससे हम सभी परिचित हैं द्य कवि, लेखक, संत अपनी वांगमयी सेवा के द्वारा लोगों में अच्छी सोच, सन्मार्ग पर चलने की जो प्रेरणा प्रदान करते हैं वह भी एक प्रकार की सेवा है । सेवा भाव मनुष्यत्व का प्रथम लक्षण है इसे हमें सदैव जागृत रखना चाहिये ।

— योगेश चन्द्र भट्ट
इगुआ,
एडवोकेट हाईकोर्ट

शिक्षा

जरूरी है
यही प्रयास अधूरी है
शिक्षा बहुत
हर बच्चे को पढ़ाना है
राष्ट्र
शिक्षा के प्रति जागरूक होना है
यही हमारी धरोहर सोना है
नये समाज का निर्माण होगा
कुरी लियों का नाश होगा
को शिशित बनाता है
बेटा-बेटी का भेदभाव
शिक्षा पर पड़े न इसकी छाव
पढ़ — लिखकर हम बने महान,
पूरा हो कि सर्व शिक्षा अभियान

— सरस्वती
रेडियो अभियांत्रिकी(रेडियो)

आजादी

- 1) वो जब मैं अपनी मर्जी से, अपने दोस्त चुन पाऊँगी, फिर चाहे वो लड़का हो या लड़की, मैं तब आजाद कहलाऊँगी।
- 2) जब मेरे विचारों को भी , कुछ तबज्जो मिल जाएगी, मैं तब आजाद कहलाऊँगी।।
- 3) क्योँ हमेशा मैं त्याग की, मूर्ति बन कर रहूँ ? क्योँ न मैं भी आज, बच्चो सी ज़िद करूँ? वो जब मैं देर रात, रूमी गेट के दीदार कर पाऊँगी, शायद मैं उस दिन आजाद कह लाऊँगी।
- 4) यो जब मैं बसों क पीछे से , बेटी बचाओ ,बेटी पढ़ाओ क पोस्टर्स हटा पाऊँगी, हाँ उस दिन मैं आजाद कहलाऊँगी। क्योँकि वो मुझे याद दिलाते हैं कि, मैं कमज़ोर हूँ,
- 5) वो जब मैं घर के काम के लिए पार्टनरशिप डीड, अपने भाई के साथ साईन कर पाऊँगी, हाँ मैं शायद, उस दिन आजाद कह लाऊँगी
- 6) वो जब मैं घर से निकलते समय , मम्मी की लास्ट मिनट वाली इन्टरोगेशन से बच पाऊँगी, हाँ , उस दिन मैं, खुद को आजाद पाऊँगी।
- 7) जिस टाइम जस्टिस रुके लिए मुझे, कैंडल मार्च नहीं करनी पड़ेगी, उस दिन मैं खुद को, आजाद पाऊँगी।।
- 8) वो जब मैं सुंदर , सुशील , संस्कारी बाली, पर्फेक्ट इमेज की डिमांड से बाहर आ जाऊँगी, तब मैं आजाद कहलाऊँगी।।
- 9) वो जब मैं स्कूटी की जगह बाइक चलाने के लिए पापा को कन्वेन्स कर पाऊँगी, हाँ, उस दिन मैं आजाद कहलाऊँगी
- 10) वो जब मैं छोटी सी बात हैं, कोम्प्रोमाईज़ कर लो, की सोच सबके दिमाग से डिलीट कर पाऊँगी, हाँ, मैं तब, खुद को आजाद कहलाऊँगी। और उस दिन, मैं फक्र से यह गाऊँगी, सारे जहाँ से अच्छा , हिन्दुस्तां हमारा। सारे जहाँ से अच्छा।।

— प्रीती सिंह
सहायिका, प्रशासनिक विभाग

“श्री कृष्ण की 46 कलाएं”

युग-पुरुष श्री कृष्ण पर इतना अधिक लिखा जा चुका है कि कोई नई बात नहीं लिखी जा सकती है, केवल पूर्व में लेखित चीजों का नये शब्दों और नये तरीके से संकलन और विश्लेषण किया जा सकता है। प्रत्येक मानव के जीवन की विषमताओं और कठिनाईयों से पार पाने के लिये “श्रीकृष्ण की 16 कलाएं” का कर्म के रूप में अभ्यास करना,, हमारे जीवन-काल की सफलता के लिये बहुत ही “प्रायोगिकस्वरूप” है। श्री कृष्ण की 16 कलाएं -

क्या होती है कलाएं

कला वैसे सामान्य शाब्दिक अर्थ के रूप में देखाजाये तो कला एक विशेष प्रकार का गुण मानी जाती है। यानि सामान्य से हटकर सोचना, सामान्य से हटकर समझना, सामान्य से हटकर खास अंदाज में ही कार्यों की अंजाम देना कुल मिलाकर लीक से हटकर कुछ करने का ढंग वगुण जो किसी को आम से खास बनाते हों कला की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण को चूँकि संपूर्ण कला अवतार माना जाता है इसलिये कलाओं की संख्या भी सोलह ही मानी जाती है।

“16 कलाएं अर्थ सहित”

श्रीसंपदा— श्रीसंपदाइसका तात्पर्य है किजिसके पास भी श्री कलाया संपदा होगी वह धनी होगा। धनीहोने का अर्थसिर्फ पैसा व पूंजी जोड़ने से नहीं है बल्किमन, वचन व कर्म से धनी होना चाहिये। ऐसा व्यक्ति जिसके पास यदि कोई आस लेकर आता है तो वह उसे निराश नहीं लौटने देता। श्री संपदा युक्त व्यक्तिके पास मां लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। कह सकते हैं इस कला से संपन्न व्यक्ति समृद्धशाली जीवनयापन करता है।

भूसंपदा— इसका अभिप्राय हैकिइस कलासेयुक्त व्यक्तिबड़े भू-भाग का स्वामी हो, या किसी बड़े भू-भाग पर आधिपत्य अर्थात राज करने की क्षमता रखता हो। इस गुण वाले व्यक्ति को भू कला से संपन्न माना जा सकता है।

कीर्ति संपदा — कीर्ति यानि की ख्याति प्रसिद्धि अर्थात जो देश दुनिया में प्रसिद्ध हो लोगों के बीच काफ़ी लोकप्रिय, विश्वसनीय माने जाता हो वजन कल्याण कार्यों में पहल करने में हमेशा आगे रहता हो ऐसा व्यक्ति कीर्ति कला या संपदा युक्त माना जाता है।

वाणी सम्मोहन — कुछ लोगों की आवाज मेंएक अलग तरह का सम्मोहन होता है। लोग ना चाहकर भी उनके बोलने के अंदाज की तारीफ करते हैं। ऐसे लोग वाणी कला युक्त होते हैं इन पर मां सरस्वती की विशेष कृपा होती है। इन्हें सुनकर क्रोधही भी एकदम शांत हो जाता है। इन्हें सुनकर मन में भक्तिव प्रेम की भावना जाग जाती है।

लीला — इस कलासे युक्त व्यक्ति चमत्कारी होता है उसके दर्शनों में एक अलग आनंद मिलता है। श्री हरि की कृपा से कुछ खास शक्ति इन्हें मिलती हैं जो कभी कभी अनहोनी को होनी और होनी को अनहोनी करने के साक्षात दर्शन कयवाते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन को भगवान का दिया प्रसाद समझकर ही उसे ग्रहण करते हैं।

कांति— कांतिवहकलाहैजिससे चेहरेपर एक अलगनूरपैदा होता है, जिससे देखने मात्र से आप सुध-बुध खोकर उसके हो जाते हैं। यानिउनके रूपसौंदर्य से आप प्रभावित होते हैं। चाहकर भी आपका मन उनकी आभा से हटने का नाम नहीं लेता और आप उन्हें निहारे जाते हैं। ऐसे व्यक्ति को कांति कला से युक्तमानाजासकताहै।

विद्या — विद्या भी एक कला है जिसके पास विद्या होती है उसमें अनेक गुण अपने आप आ जाते हैं विद्या से संपन्न व्यक्ति वेदों का ज्ञाता, संगीत व कला का मर्मज्ञ, युद्ध कला में पारंगत, राजनीतिव कूटनीति में माहिर होता है।

विमला— विमलयानिछल—कपट, भेदभाव से रहित निष्काम जिसके मन में किसी भी प्रकार मैल ना हो कोई दोष नहो, जो आचार विचार और व्यवहार से निर्मल हो ऐसे व्यक्तित्व का धनी ही विमला कलायुक्त हो सकता है।

उत्कर्षिणि शक्ति — उत्कर्षिणि का अर्थ है प्रेरित करने क्षमता जो लोगों को अकर्मण्यता से कर्मण्यता का संदेश दे सकें। जो लोगों को मंजिल पाने के लिये प्रोत्साहित कर सके। किसी विशेष लक्ष्य को भेदने के लिये उचितमार्गदर्शनकर उसे वह लक्ष्यहासिल करने के लिये प्रेरित कर सके जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने युद्धभूमि में हथियार डाल चुके अर्जुन को गीतोपदेश से प्रेरित किया। ऐसी क्षमता रखने वाला व्यक्ति उत्कर्षिणि शक्तिया कला से संपन्न व्यक्ति माना जा सकता है।

नीर—क्षीरविवेक— ऐसा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति जो अपने ज्ञान से न्यायोचित फैसले लेता हो इस कला से संपन्न माना जा सकता है। ऐसा व्यक्ति विवेकशील तो होता ही है साथ ही वह अपने विवेक से लोगों को सही मार्ग सुझाने में भी सक्षम होता है।

कर्मण्यता— जिस प्रकार उत्कर्षिणी कलायुक्त व्यक्ति दूसरों को अकर्मण्यता से कर्मण्यता के मार्ग पर चलने का उपदेश देता है व लोगों को लक्ष्य प्राप्ति के लिये कर्म करने के लिये प्रेरित करता है वहीं इस गुण व्यक्ति सिर्फ उपदेश देने में ही नहीं बल्कि स्वयं भी कर्मठ होता है। इस तरह के व्यक्ति खाली दूसरों को कर्म करने का उपदेश नहीं देते बल्कि स्वयं भी कर्म के सिद्धांत पर ही चलते हैं।

योगशक्ति — योग भी एक कला है। योग का साधारण शब्दों में अर्थ है जोड़ना यहां पर इसका आध्यात्मिक अर्थ आत्माको परमात्मा से जोड़ने के लिये भी है। ऐसे व्यक्ति बेहद आकर्षक होते हैं और अपनी इस कला से ही वे दूसरों के मन पर राज करते हैं।

विनय— इसका अभिप्राय है विनयशीलता यानिजिसे अहं का भाव छूता भी न हो। जिसके पास चाहे कितना ही ज्ञान हो, चाहे वह कितना भी धनवान हो, बलवान हो मगर अहंकार उसके पास न फटके। शालीनता से व्यवहार करने वाला व्यक्ति इस कला में पारंगत हो सकता है।

सत्य धारणा — कहते हैं सच बहुत कड़वा होता है इसलिये सत्य को धारण करना सबके बस में नहीं होता विरले ही होते हैं जो सत्य का मार्ग अपनाते हैं और किसी भी प्रकार की कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सत्य का दामन नहीं छोड़ते। इस कला से संपन्न व्यक्तियों को सत्यवादी कहा जाता है। लोक कल्याण व सांस्कृतिक उत्थान के लिये ये कटु से कटुसत्य भी सबके सामने रखते हैं।

अधिपत्य — आधिपत्य वैसे यह शब्द सुनने में तो ताकत का अहसास कराने वाला मालूम होता है, लेकिन यह भी एक गुण है। असल में यहां आधिपत्य का तात्पर्य जोर जबरदस्ती से किसी पर अपना अधिकार जमाने से नहीं है बल्कि एक ऐसा गुण है जिसमें व्यक्तिका व्यक्तित्व ही ऐसा प्रभावशाली होता है कि लोग स्वयं उसका आधिपत्य स्वीकार कर लेते हैं। क्योंकि उन्हें उसके आधिपत्य में संरक्षण का अहसास वसुरक्षा का विश्वास होता है।

अनुग्रह क्षमता — जिसमें अनुग्रह की क्षमता होती है वह हमेशा दूसरों के कल्याण में लगा रहता है, परोपकार के कार्यों को करता रहता है। उनके पास जो भी सहायता के लिये पंहुचता वह अपने सामर्थ्यनुसार उक्त व्यक्तिकी सहायता भी करते हैं।

कुल मिलाकर जिसमें भी ये सभी कलाएं अथवा इस तरह के गुण होते हैं वह ईश्वर के समान ही होता है। क्योंकि किसी इंसान के वश में तो इन सभी गुणों का एक साथ मिलना दूसर ही नहीं असंभव सा लगता है, क्योंकि साक्षात ईश्वर भी अपने दशावतार रूप लेकर अवतरित होते रहे हैं लेकिन ये समस्त गुण केवल द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण के अवतार रूप में ही मिलते हैं। जिसके कारण यह उन्हें पूर्णवतार और इन सोलहकलाओं का स्वामी कहा जाता है।

भारत का प्रथम नोबेल और अनुवाद

रविन्द्र नाथ टैगोर शिक्षा शास्त्री, दार्शनिक, कवि एवं चित्रकार के तौर पर प्रसिद्ध हुए। 15 वर्ष की आयु में उन्होंने कविता लेखन आरम्भ किया। उनकी कविताएं उनके मित्र की मासिक पत्रिका में प्रकाशित होती थी और उनके नाटकों में मुख्य भूमिका निभाने के कारण कलकत्ता के आसपास वाले क्षेत्र में एक जाने माने व्यक्ति थे। सन् 1912 में उनकी प्रसिद्धि तब हुई जब वे अपने डायरी को किसी स्थान में रखकर भूल गए और वह डायरी प्रसिद्ध चित्रकार रोथेंसटार्इन के हाथ लग गई। रोथेंसटार्इन ने यह डायरी अपने प्राख्यात कवि मित्र डब्ल्यू.बी.यीट्स को दिखाया। ये वही यीट्स हैं जिनकी कविता "दी सेकेण्ड कमेंग" विश्व प्रसिद्ध है। यीट्स को टैगोर की कविता बहुत पसंद आई।

क्या आप जानते हैं?

यीट्स को टैगोर की कविता इतनी पसंद आई कि उन्होंने इसकी भूमिका लिख दी। टैगोर ने अपनी इस रचना का अंग्रेजी में अनुवाद किया। यह रचना "गीतांजली सॉन्ग ऑफरिंग" के नाम से प्रकाशित हुई एवं एक वर्ष के भीतर ही सन् 1913 में रविन्द्रनाथ टैगोर जी को साहित्य के नोबेल से नवाजा गया। यह भारत का प्रथम नोबेल था। रविन्द्रनाथ पूरे संसार में प्रसिद्ध हो गए। रविन्द्र नाथ इस पुरस्कार को पाने वाले पहले गैर-पश्चिमी व्यक्ति थे। रविन्द्रनाथ टैगोर मूलतः बांग्ला भाषा के कवि थे लेकिन गीतांजली की सफलता के बाद उन्होंने अपनी रचनाओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया।"

तो हमें यह कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि भारत को प्रथम नोबेल दिलाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्व के सभी विकसित देशों की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज विज्ञान के तेजी से बदलते हुए विश्व में चिकित्सा, कृषि आदि के क्षेत्र में आविष्कारों एवं अनुसंधानों का हमसे जुड़े रहने के लिए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है।

आदित्य सिंह गढ़वाल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



कोरोना-काल का जीवन

आज फंसी है,, दुनिया सारी कोरोना के जाल में,
मेरे प्रभुरक्षा करना,, सबकी ऐसे हाल में।

कोविद-19 पनप गया है,, चीन के वुहान से,,
पलक झपकते हाथ धो बैठे,, हजारों अपनी जान से,,

चीन से निकला इटली पहुंचा,, फिर पहुंचा जापानमें,,
स्पेन फ्रांस अमरीका और अब है,, हिन्दुस्तानमें,,

किसने सोचा था,, फैलेगा ये ऐसी रफ्तार से,,
इतना डरतो न लगता था,, करंट के तार से,,

सांस की दिक्कत,, सूखी खांसी,, या कोई बुखार है,,
कोरोना के लक्षण हैं,, ये शायद उसका वार है,,

छोड़ दें मिलना जुलना सबसे,, घर अपने आराम करें,,
छोड़ दें हाथ मिलाना,, छूना,, दूरसे बस प्रणाम करें,,

अपनी आंखों नाक और मुंह, को नही हाथ लगाएं हम,,
आओ खुद भी सजग बनें,, और सबको सजग बनाएं हम,,

टार्लें शादी और समारोह,,जहां भीड़ भरपूर रहे,,
मंदिर मस्जिद गिरिजा घर से,, भी कुछ दिन अब दूर रहें

हाथ लगे अगर यहां-वहां तो,, झट साबुन से धोएं हम,,
हम भी समझें जिम्मेदारी,, आंख मूंद न सोएं हम,,

योग, ताली ,और घण्टी बजाकर,, इससे दो-दो हाथ करें,
इस महामारी से लड़ने की, कोशिश हम दिन रात करें,,
कोरोना का भी अजब है खेल,, बंद करवा दिया लोगों का मेल।
इन दिनों हर आदमी परेशान है,, बाहर कोरोना घर में,, आफत में जान है।

डॉक्टर्स, पुलिस, प्रशासन, और व्यापारी का,, हम पर है उपकार,,
मानव जाति की सेवा के लिए,, बहुत बहुत आभार।

— अजय पाडेण्य
आत्मज श्री दिलीप कुमार पांडेय

अग्निशमन सप्ताह महोत्सव 2022

इगुआ में अग्निशमन सप्ताह विगत वर्षों की भांति 4 अप्रैल 2022 से 20 अप्रैल 2022 तक इगुआ अग्निशमन केन्द्र में मनाया गया। इसकी शुरुआत 4 अप्रैल को वरिष्ठ विमानक्षेत्र अधिकारी ग्रुप कैप्टन एन ए एलेक्जैन्डर के नेतृत्व में अग्निशमन की फायर फाईटिंग ड्रिल के आयोजन से प्रारम्भ हुआ जिसमें इगुआ के अग्निशमनकर्मा एवं मेडिकलकर्मी तथा विमानन विश्वविद्यालय के अग्निशमन प्रशिक्षुओं ने साथ मिलकर इस आयोजन में भाग लिया।

अग्निशमन संयुक्त अभ्यास कार्यक्रम सुबह 09:30 से शुरू होकर 00 बजे तक आयोजित हुआ, जिसमें हवाई अड्डे के दूसरे किनारे पर एक टीम ने आग लगाई उस आग को देखते ही ग्रुप कैप्टन एन ए एलेक्जैन्डर ने अग्निशमन केन्द्र पर उपस्थित अग्निशमन कर्मियों को आग लगने की सूचना दी जिसे पाते ही दूसरी टीम ने फायर क्रैश टेन्डर व मेडिकल टीम ने 02 मिनट के अन्दर पहुँचकर आग पर काबू पाया और वहाँ जो घायल लोग थे उनको इगुआ की मेडिकल टीम ने प्राथमिक उपचार दिया। इस तरह से प्रायोगिक प्रदर्शन से अग्निशमन सप्ताह की जोरदार शुरुआत हुई।

अग्निशमन सप्ताह का समापन समारोह-

सप्ताह का समापन समारोह 20 अप्रैल 2022 को किया गया जिसमें इगुआ के माननीय निदेशक, मुख्य उड़ान अनुदेशक एवं अन्य सभी उड़ान अनुदेशक, इगुआ के सभी उच्च अधिकारीगण और विमानन विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारीगण विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सभी अतिथिगणों के आने के पश्चात वरिष्ठ विमानन क्षेत्राधिकारी ग्रुप कैप्टन एन ए एलेक्जैन्डर ने सभी अतिथिगणों का स्वागत किया और उपस्थित विमानन विश्वविद्यालय के प्रशिक्षुओं और इगुआ के फायर कर्मियों को औजस्वी वाणी में अग्निशमन सप्ताह मनाये जाने के इतिहास के बारे में बताते हुये यह अवगत कराया की 4 अप्रैल 944 को मुम्बई में बन्दरगाह पर लगी भीषण आग को बुजाते हुये 72 अग्निशमन कर्मियों ने अपनी जिन्दगी को कुर्बान कर दिया था, उनकी स्मृति में उनको श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिये हम सभी भारत देश के अग्निशमन कर्मी इस सप्ताह का आयोजन करते है।

इसके बाद इगुआ के निदेशक महोदय ने अतीत में दिवंगत हुये अग्निशमन कर्मायो को श्रद्धासुमन अर्पित किये और देश के सभी अग्निशमन कर्मायो को बहादुर सैनिकों के नाम से संबोधित किया।

उन्होंने अपने वक्तव में इगुआ के अग्निशमन कर्मायो की सराहना करते हुये कहा कि इगुआ के अग्निशमन कर्मी 45 से 50 डिग्री तापमान में भी कड़ी धूप में अपने ज्युटी को बहुत अच्छी तरह से निभाते है और 4 अप्रैल को अग्निशमन अभ्यास के दौरान अग्निशमन कर्मीयो ने और विमानन विश्वविद्यालय के प्रशिक्षुओं ने संयुक्त अभ्यास में 02 मिनट में आग बुझाकर अपनी कुशलता और विमानन विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण की गुणवत्ता को साबित किया है और उन्होंने सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना किया है।

इसके बाद विमानन विश्वविद्यालय के वरिष्ठ संकाय प्रभारी डॉ. जी.के. चौकियाल जी ने इगुआ के अग्निशमन कर्मायो के प्रदर्शन और कर्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा करते हुये विमानन विश्वविद्यालय के प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण में इगुआ के योगदान का आभार व्यक्त किया, इस प्रकार से अग्निशमन सप्ताह का समापन हुआ।

— सुनील कुमार
अग्निशमन विभाग

मेला मुझे बुलाता है।

वैसा का वैसा है मेरी आँखों में लीला का मेला
जिस समय अकेला होता हूँ वह मेरे कमरे में आ जाता है
सुन पड़ी हंसी मीठी बोली
आ गयी लड़कियों की टोली
शर्माती है खरीदती है
लाल बिन्दी चूड़ी चोली।
जब खड़ी मीठी बातों की पोटलियाँ खोल रहा था मैं,
कुछ ऐसे चित्र मिले मुझको, जिनका बचपन से नाता है।

वे गोल गोल घूमते हुए
कुछ उनसे और बड़े झूले
जिन पर मैं झूल नहीं पाया,
वे अब तक मुझे नहीं भूले।
असमय ही वडा हो गया था,
कोई हठ कभी नहीं जाना,
मेरे भीतर जो 'हामिद' था
वह अब भी मुझे रुलाता है।
महुए की उमरी जड़ें और
कॉपता पोखर का पानी,
जो देह गंध लेकर आते
कितनी वह जानी पहचानी।
हर चिट्ठियाँ तुझे मुझी मेले को वापस करता हूँ,
हर बार नई चिट्ठियाँ भेज फिर मेला मुझे बुलाता है।

— रजनीश शुक्ल
सहायक नैव सेइस

तन के साथ मन का स्वस्थ होना जरूरी

सामान्य जीवन में लोग स्वस्थ व तन्दुरुस्त रहने के महत्व को कम आंकते हैं। जबकि अच्छी सेहत से बड़ा संसार में कोई धन नहीं है। कुछ ही लोग अपने जीवन में सेहतमंद रहने के नियमों का पालन करते हैं।

स्वस्थ और तन्दुरुस्त रहना हमारे दैनिक कार्यों को पूरा करने में मदद करता है। स्वस्थ रहने का अर्थ रोग रहित तन का होना ही नहीं, बल्कि तनाव मुक्त मन का होता भी है। यदि एक व्यक्ति अस्वस्थ मन रखता है। तो वह अपने शरीर को स्वस्थ नहीं रख सकता है। शरीर और अन दोनों की स्वस्थता जीवन में सफलता के साथ आन्दमय जीवन जीने का सूत है। अच्छा मानसिक स्वास्थ्य हमारी परेशानी के समय में मदद करता छैनहीं बेकार या खराब शारीरिक स्वास्थ्य हमें अधिक कमजोर बनाता है। और हमारे लिए बीमारियों का खतरा बढ़ाता है। हमें अपने शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने के लिए सभी विन्दुओं के बारेमें जागरूक होने की आवश्यकता है।

कुछ लोग बहुत अच्छे से जानते हैं कि शरीर के साथ सुभा और स्वस्थ कैसे रखा जाता है। लेकिन मन में धूम रही परेशानियों की वजह से उन्हें स्वस्थ रहने के लाभ नहीं मिल पाते हैं। मानसिक तनाव धीरे-धीरे शबाई शारीरिक स्वास्थ्य को कमजोर कर देता है। ऐसे में जरूरी है कि हम शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य को लेकर भी गंभीर रहें। इसके लिए आलस्य को त्याग कर ध्यान व व्यायाम दोनों का सहारा लेते रहना चाहिए। इसी सापेक्ष में हमारी सरकार द्वारा स्वस्थ भारत कार्यक्रम चलाया गया जिसमें पीटीआई इयुआ की देखरेख में इगुआ कैडेटो ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और आगे भी इससे प्रेरित है।

— सूबेदार मेजर शिवबरन पाण्डेय
(रिटायर्ड)
पीटीआई

सतर्कता विभाग के संक्षिप्त कार्यों के बारे में एक लेख

आज के बदलते परिवेश में सामान्य कामकाज के दौरान अनेक ऐसी परिस्थितियों आती हैं जब मनुष्य को विशेष सजगता की आवश्यकता होती है।

सतर्कता का अर्थ सावधानी अथवा चौकसी है। इस लिए यह एक मानसिक अवस्था है और सारे जन समूह पर लागू है। इस संगठन का सतर्कता विंग कमजोर स्थानों, ग्रे क्षेत्र और बुरे तत्वों को पहचानने का कार्य करती है। इस प्रकार, सतर्कता विंग संगठन की चौकत्री आँखों और सावधान कानों के रूप में कार्य करता है।

भ्रष्टाचार क्या है ?

सरकारी सेवा में रहते हुए किसी व्यक्ति का सरकारी कार्य को करने के लिए अथवा उसकी सहायता करने के लिए उस व्यक्ति से किसी प्रकार का पारितोषिक स्वीकार करना अथवा स्वीकार करने के लिए सहमत होना अथवा लेना अथवा लेने का प्रयास करना भ्रष्टाचार कहलाता है। सामान्य शब्दों में, निजी लाभों के लिए सरकारी शक्ति/पहुंच के प्रयोग को भ्रष्टाचार कहते हैं।

उद्देश्य

सतर्कता विंग का उद्देश्य संगठन की शुद्धता, अखंडता और कार्यनिष्पत्ति को बनाए रखना है।

सतर्कता कार्य के कार्य क्षेत्र

सतर्कता कार्य के कार्य क्षेत्र में भ्रष्टाचार, दुराचरण और अन्य अपराध की रोकथाम, जांच पड़ताल और पता लगाना, प्रणाली सुधार एवं दंडात्मक कार्रवाइयों द्वारा प्रणाली को सरल और कारगर बनाना शामिल है।

कार्यप्रणाली

सतर्कता शाखा के उद्देश्यों को हासिल करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जाते हैं—

शिक्षाप्रद

प्रशिक्षण द्वारा आम जनता और कर्मचारियों में जागरूकता पैदा करने के ज़रिए।

निवारक

विभिन्न क्षेत्रों में नियमित जांच आयोजित करके।

पता लगाना

शिकायतों की जांच—पड़ताल द्वारा।

सुधारक

प्रणालियों में सुधार के सुझाव और दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध उचित अनुशासनिक कार्रवाई द्वारा भ्रष्टाचार को रोकने तथा दोषी व्यक्तियों को दण्डित करने के लिए सतर्कता विंग के डिटेक्टिव एवं दंडात्मक आवश्यक पहुँच है, परन्तु भ्रष्टाचार के निवारण पर अधिक जोर दिया जाता है क्योंकि इलाज से अच्छा निवारण होता है। किसी भी दुर्भावनापूर्ण कृत्य को होने से रोकने के लिए सतर्कता विंग विभिन्न क्षेत्रों में नियमित तौर पर निवारक जाँचों का आयोजन करती है। ऐसे जाँचों से भ्रष्ट कर्मचारी यदि वे किसी गलत कार्य में लिप्त हों तो पकड़े जाने के डर से भयभित होते हैं। भ्रष्ट कर्मचारियों पर अंकुश लगाने के लिए आकस्मिक जाँच एवं डिकॉय जाँच भी आयोजित किए जाते हैं।

केंद्रीय सतर्कता आयोग के विषय में

भारत सरकार ने 1964 में किसी भी कार्यकारी प्राधिकार के नियंत्रण से मुक्त केंद्रीय सतर्कता आयोग नामक एक सर्वोच्च सतर्कता संस्थान का गठन किया। केंद्रीय सतर्कता आयोग केंद्र सरकार के अधीन सभी सतर्कता गतिविधियों का मानिट्रिंग करता है और केंद्र सरकार के विभिन्न प्राधिकरणों को उनके सतर्कता योजना, कार्यकारी, पुनरीक्षा और सुधार कार्यों के संबंध में परामर्श देता है। केंद्रीय सतर्कता आयोग का कार्यालय नई दिल्ली में स्थित है। अधिकारियों के विरुद्ध शिकायत केंद्रीय सतर्कता आयोग में दर्ज किया जा सकता है। अष्ट कृत्यों में शामिल व्यक्तियों का पता लगाने और उन्हें दंड देने के अलावा अष्टाचार और अन्य कदाचारों के विरुद्ध निवारक उपाय करना सतर्कता विभाग के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है।

उपरोक्त सुविधा का लाभ उठाकर हम सरकारी कार्यालयों एवं समाज में व्याप्त अष्टाचार एवं उससे होने वाले दुष्प्रभाव को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सामान्य जन जीवन में सतर्कता का महत्त्व

किसी भी संगठन की सफलता के लिए ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और उसके कार्यों में पारदर्शिता अत्यंत आवश्यक आधारभूत स्तम्भ हैं। एक सजग और सचेत संगठन का निर्माण, एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है।

सिद्धांतों और सत्यनिष्ठा की बुनियाद पर ही हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने एक समृद्ध एवं आत्मनिर्भर भारत का सपना संजोया था। हमारा उद्देश्य मजबूत प्रणालियों, नियमों और व्यवस्था का निर्माण तथा उनमें निरंतर सुधार करना है ताकि प्रत्येक कर्मचारी उनसे मार्गदर्शन लेकर निरंतर उन्नति के पथ में आगे ले जाए। मुझे खुशी है कि हमारे सतर्कता विभाग ने लगातार इस दिशा में प्रयास किये हैं तथा कार्यों में होने वाली संभावित त्रुटियों के समबन्ध में सबको सजग किया है। सतर्कता विभाग का सतर्क व्यवहार की आवश्यकता एवं मूलभूत मूल्यों पर संगठनात्मक जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा कर्मचारियों को इस सम्बन्ध में अपने विचार रखने का अवसर भी प्रदान किया है। सतर्कता एक आदत और जीवन जीने का तरीका है जो संगठन के हित के लिए हम में से प्रत्येक को कार्य करने के और बेहतर तरीके अपनाने के लिए प्रेरित और सक्षम करता है।

आईये मजबूत सिद्धांतों, सत्यनिष्ठा और विश्वास पर आधारित अकादमी के निर्माण में अपना योगदान दें।

सतर्कता विभाग, अष्टाचार नामक इस विसंगति को मिटाने में एक महत्वपूर्ण दायित्व निभाता है तथा कर्मचारियों को सतर्क रहने के लिए प्रेरित करता है। आज भारत को एक समृद्ध राष्ट्र बनाना हम सब का कर्तव्य है अतः हम अपने स्तर पर सतर्क रह कर अष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करें। संगठन के अष्टाचार उन्मूलन हेतु किये गए प्रयासों को सफल बनाने के लिए समस्त कर्मचारियों की सक्रिय, सहयोगात्मक और सहभागितापूर्ण भागीदारी नितांत आवश्यक है। सतर्कता विभाग का मुख्य उद्देश्य समस्त कार्मिकों को सतर्कता के अनुपालन में अधिक से अधिक जागरूक करना है। अतः हम आशा करते हैं कि हमारे कार्मिकों को अपने कार्यालयों में कार्यालयीन कार्यों तथा अपने कर्तव्य निर्वाह करते समय होने वाली चूकों से बचने में सहायक व उपयोगी सिद्ध होगी।

— मृदुल कुमार
सतर्कता अधिकारी

हाइपोक्सिया

हाइपोक्सिया एक बहुत ही गंभीर स्थिति है कि एक पायलट को कभी कभी इससे अवगत कराया जाता है। यह शीघ्र ही चिकित्सकीय ध्यान देने योग्य है। जिन लोगों में हृदय या फेफड़ों की बीमारी के प्रति पूर्ववृत्ति है। उन्हें हाइपोक्सिया होने पर अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है।

हाइपोक्सिया : हाइपोक्सिया आपके शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन का निम्न स्तर है। यह भ्रम, बेचौनी, सांस लेने में कठिनाई, तेज़ हृदय गति और त्वचा का नीला पड़ना जैसे लक्षण पैदा करता है।

हाइपोक्सिया क्या है?

हाइपोक्सिया तब होता है जब आपके शरीर के ऊतकों में पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं होती है। जब आप सांस लेते हैं, तो आप ऑक्सीजन को अपने फेफड़ों में ले जाते हैं, जहां यह आपके वायुमार्ग के माध्यम से एक छोटे से थैलीयों में जाता है जिसे एल्वियोली कहते हैं। वहां से, यह आपके रक्त द्वारा छोटे वाहिकाओं में उठाय़ा जाता है जो एल्वियोली (कशिकाओं) के करीब जाते हैं। अंत में, यह आपके रक्त के माध्यम से अन्य ऊतकों तक जाता है।

आप ऑक्सिजन को एयरपोर्ट में उड़ान भरने के लिये तैयार अरबों यात्रिय की तरह सोचकर देखिए। वे गेट से उठाकर हाईवे (रक्त वाहिकाओं) पर चढ़ा दिये जाते हैं। जैसे ही ऑक्सीजन गिरती है, यह एक अलग यात्री (कार्बन डाइऑक्साइड) के लिए जगह बनाती है। कार्बन डाइऑक्साइड एक अपशिष्ट उत्पाद है, जिसे फिर आपके फेफड़ों में ले जाया जाता है और जब आप सांस छोड़ते हैं तो यह आपके शरीर में मौजूद होते हैं।

यदि यात्रा के दौरान किसी स्थान पर पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती है, तो इससे हाइपोक्सिया हो सकता है। प्रक्रिया के लिए वायु प्रवाह और रक्त प्रवाह दोनों महत्वपूर्ण हैं। यही कारण है कि फेफड़े की बीमारी और हृदय रोग दोनों ही आपके हाइपोक्सिया के जोखिम को बढ़ाते हैं। कोई व्यक्ति जो हाइपोक्सिया का अनुभव करता है। उसे हाइपोक्सिक कहा जाता है।

हाइपोक्सिया प्रभावित कैसे होते है?

सर्दी, खांसी या ब्रॉन्कियल कैटर और अधिक गंभीर संक्रमण, जैसे निमोनिया, इन्फ्लूएंजा आदि भी हाइपोक्सिया के जोखिम को बढ़ा सकते हैं। इसलिए सावधानी बरतें कि इन लक्षणों के साथ उड़ान न भरें।

हाइपोक्सिया क्या है और यह शरीर को क्या करता है?

आपकी कोशिकाओं को ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है और आपके अंगों और ऊतकों को अपना काम करने में मदद मिलती है। जबकि आपके कुछ ऊतक ऑक्सीजन के स्तर में अस्थायी गिरावट को समायोजित कर सकते हैं, लंबे समय तक हाइपोक्सिया अंग क्षति का कारण बन सकता है। मस्तिष्क और हृदय-क्षति विशेष रूप से खतरनाक हैं एवं इससे मृत्यु हो सकती है। आपके मस्तिष्क में ऑक्सीजन की कमी को सेरेब्रल हाइपोक्सिया कहा जाता है।

हाइपोक्सिया के संकेत एवं लक्षण-

हाइपोक्सिया के लक्षण गंभीरता, अंतर्निहित कारण और आपके शरीर के कौन से हिस्से प्रभावित होते हैं, इसके आधार पर भिन्न होते हैं। जब आपकी ऑक्सीजन कम होती है, तो आपको ऐसा महसूस हो सकता है कि आप सांस नहीं ले पा रहे हैं या ठीक से सोच नहीं पा रहे हैं। कुछ हाइपोक्सिया लक्षणों में शामिल हैं-

- बेचौनी

- सरदर्द
- उलझन
- चिंता
- तीव्र हृदय गति
- सांस लेने में कष्ट
- नीली त्वचा

ऑक्सीजन को आपके ऊतकों में कोशिकाओं तक पहुंचाने के लिए, आपको चाहिए—

- आप जिस हवा में सांस लेते हैं उसमें पर्याप्त ऑक्सीजन होने चाहिए।
- आपके एल्वियोली को ऑक्सीजन प्राप्त करने के लिए फेफड़े स्वस्थ होने चाहिए।
- आपके ऊतकों को ऑक्सीजन युक्त रक्त प्राप्त करने के लिए हृदय एवं संचार प्रणाली स्वस्थ होने चाहिए।
- ऑक्सीजन देने के लिए पर्याप्त लाल रक्त कोशिकाएं होने चाहिए।
- ऑक्सीजन का उपयोग करने में सक्षम ऊतक कोशिकाएं होने चाहिए।

मैं हाइपोक्सिया के अपने जोखिम को कैसे कम कर सकता हूँ?

हाइपोक्सिया के अपने जोखिम को कम करने का सबसे अच्छा तरीका किसी भी अंतर्निहित स्थिति का प्रबंधन करना है जो आपके ऑक्सीजन के स्तर को कम कर सकता है। तनाव प्रमुख कारकों में से एक है जो हाइपोक्सिया की संभावना को बढ़ाता है।

नियमित व्यायाम और कसरत से इस स्थिति को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इससे शरीर एवं मस्तिष्क में रक्त का संचार सुचारु रूप से होता है। उड़ान के दौरान पायलट के दिमाग को सतर्क रहना पड़ता है। सामान्य रूप से ड्रग्स और अल्कोहल जैसे अवरोधकों से बचें और विशेष रूप से ऑपरेटिंग क्रू के हिस्से के रूप में उड़ान भरने से पहले।

यदि आपके पास ऐसी कोई स्थिति है जो आपको सांस लेने में कठिनाई के लिए पूर्व निपटान करती है, ऑपरेटिंग क्रू के रूप में उड़ान न भरें। विशेष रूप से योग ए प्राणायाम करें और अपने श्वास मार्ग को साफ रखें। तनाव छोड़ें ध्यान करें और गहरी सांस लें। केवल अगर आप पूरी तरह से इसके लिए तैयार महसूस करते हैं, तो केवल अपनी नियोजित उड़ान के लिए जाएं अन्यथा अपने आप को उत्साहित करें।

कृपया इस दौरान धूम्रपान या शराब का सेवन न करें।

आप अपने शरीर को क्या मदद देते हैं यह सुनिश्चित करेगा कि हाइपोक्सिया आपको प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं करता है।

— संजय चक्रवर्ती
मुख्य थल अनुदेशक



अन्याय का जड़ से उन्मूलन कर सत्य, धर्म की स्थापना हेतु क्रांति, रक्तचाप प्रतिशोध आदि प्रकृति प्रदत्त साधन ही हैं। अन्याय के परिणामस्वरूप होने वाली वेदना और उद्वण्डता ही तो इन साधनों की नियन्त्रणकर्त्री है। - वीर शावरकर

पायलटों के जीवन में योग का महत्व

विमान उड़ाने में पायलट को एक ही मुद्रा में देर तक बैठ कर ध्यान केंद्रित करना पड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें और भी लंबी होती हैं। इस कारण से पायलटों में, स्पोंडिलाइटिस कमर में दर्द, मानसिक तनाव, आदि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक कैडेट के प्रशिक्षण

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी में व्यायाम एवं खेल कूद पलाइट का एक प्रमुख हिस्सा है। व्यायाम एवं खेल कूद पलाइट कैडेट के शरीर को चुस्त दुरुस्त रखता है और उन्हें एक अच्छा पायलट बनने में सहायता पहुंचाता है। भारत सरकार के निर्देश के अनुसार, वार्षिक मेडिकल जांच एवं मेडिकल कैटागिरी के बिना किसी भी पायलट को विमान उड़ाने की स्वीकृति नहीं मिलती है। हर उड़ान के पहले भी पायलट की मेडिकल जांच होती है। मेडिकल जांच आपके शारीरिक दोषों का पता लगा सकता है, परंतु मानसिक तनाव जैसी समस्याओं का कई बार पता नहीं लगा सकता है। भारतीय वायु सेना के पलाइट कैडेट के प्रशिक्षण में वर्ष 90 के दशक में एयरो मेडिकल ट्रेनिंग केंद्र, हैदराबाद ने पाया कि अनेक पलाइट कैडेट वायु सेना के कठिन प्रशिक्षण को पूरा करने के पहले ही पलाइंग से रिजेक्टेड हो जाते थे। शारीरिक प्रशिक्षण में योग को जोड़ने के बाद रीजेशन दर में कमी आ गई। अधिक नहीं सहने की क्षमता, वायुयान को स्पिन आदि मैनोवर से नहीं निकाल पाना, आदि विमानन क्षमता में योगाभ्यास के बाद सुधार पाया गया।

सोलर इम्पल्स-2 नाम के सौर ऊर्जा से चलने वाले एक सीट वाले विमान ने पूरी पृथ्वी का चक्कर 40000 किलोमीटर की उड़ान भर कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। 15 घंटे की उड़ान भर कर यह विमान मस्कैट से अहमदाबाद पहुँचा। पत्रकारों से बात करते हुए विमान के पायलट आंद्रे ब्रोस्बर्ग और बड पिकार्ड ने खुलासा किया कि पिछले 12 वर्षों से वो दोनों योगाभ्यास कर रहे हैं। उनके गुरु भारतीय मूल के हैं और योगाभ्यास के क्रम में उन्होंने अनेक आसनों की शिक्षा प्राप्त की है। योग की जानकारी एवं अभ्यास के कारण विमान की 15 घंटे के उड़ान के दौरान एक सीट वाले विमान में हर 5 घंटे बाद पायलट विमान को ऑटो पायलट पर लगा कर 20 मिनट की योगनिद्रा ले कर पुनः तरो-ताजा हो जाता था।

आज पूरे विश्व में सभी लोग योग को जानते हैं, जिसका प्रारंभ भारतवर्ष में हुआ था। पतंजलि ऋषि द्वारा योग के आसनों को लिपिबद्ध किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने पश्चात पूरी दुनिया 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाती है। विश्व के सभी प्रमुख हवाई अड्डों (सान फ्रान्सिस्को, डेल्लास, शिकागो, हीथ्रो, मियामी, फंकफर्ट, हेलिन्सकी, आदि) पर योग केंद्र उपलब्ध हैं।

जहां पायलट, यात्री और कर्मचारी, सभी लोग योगाभ्यास करके अपने आप को थकान से मुक्त कर सकते हैं।

— एयर कॉमोडोर विनोद कुमार मिश्र
थल अनुदेशक (तकनीकी)

अभ्यासेन दक्षः

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में हर कोई सबसे आगे जाना चाहता है। ये कहना अभियोक्ति न होगी कि हर कोई जीतना चाहता है। जीत का जजबा किसी भी देश के विकास का सुचक है। परन्तु इस बात पर गौर करना ज्यादा जरूरी है कि हमने सफलता की रेस में आगे बढ़ने के लिए ईमानदारी से कितनी कोशिश की। जिंदगी की प्रत्येक रेस में कभी किसी को जय मिलती कभी किसी को पराजय का सामना करना पड़ता है। लेकिन यदि हम अपना दिमाग खला रखें तो हर अनुभव हमें समृद्ध बनाता है। सही अभ्यास के साथ जब भी हम अपनी बंधी-बंधाई योग्यता से ऊपर उठकर कुछ करने की कोशिश करते हैं तो ज्ञान और हौसला दोनों ही बढ़ता है।

बचपन में हम सभी को कई नैतिक तथा मनोबल बढ़ाने वाली कहानियां सनाई जाती थीं। जो आज भी शुरुवाती कक्षाओं में पढाई जाती हैं। बचपन में शायद उन कहानियों का आशय समझ में न आता हो किन्तु समय के साथ जिसने भी उन कहानियों का गूढ़ अर्थ समझ लिया उसन सफलता पा इबारत लिख दी है। ऐसी ही एक कहानी थी खरगोश और कछुए की जिसे लगभग हम सभी ने पढी होगी।

जिसमें, एक जंगल में खरगोश और कछुए के बीच एक प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया था कि, लक्ष्य तक कौन तेज दौड़कर पहुँचेगा। जाहिर सी बात है दोनों की चाल में जमीन आसमान का अंतर था। मुकाबला एकतरफा ही नजर आ रहा था फिर भी कछुए ने चुनौती स्वीकार कर ली। रेस शुरु हुई खरगोश अपनी तेजरफ्तार से काफी आगे निकल गया। कछुआ धीरे-धीरे चल रहा था किन्तु निरंतर चल रहा था। जबकि अति आत्मविश्वासी खरगोश ने सोचा कि मैं तो बहुत आगे आ गया हूँ तो थोडाग आराम कर लेता हूँ। पेड़ के नीचे लेटते ही उसे गहरी नींद लग गई। वहीं कछुआ धीमी गति से बिना किसी विश्वास के निरंतर चलते हुए लक्ष्य तक पहुँच गया। असंभव संभव में परिणित हो गया। खरगोश की तेज चाल भी निरंतर और सतत अभ्यास से हार गई था। खरगोश की हार से ये भी सबक मिलता है कि जब तक लक्ष्य हासिल न हो जाये आराम या आलस के वशीभूत नहीं होना चाहिए।

खरगोश और कछुआ तो प्रतीक मात्र हैं। यदि हम अपने आसपास नजर दौड़गएँ तो हम लोगों की कार्यपद्धति भी इन्ही दो श्रेणियों में बंटी है। कोई निरंतर अभ्यास से अपनी कार्यकुशलता को निखारता है और लक्ष्य के लिए जुनून की हद तक कोशिश करता है, तो कोई अतिआत्मविश्वास की वजह से, स- हुए भी लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता है। क्षेत्र कोई भी हो, नई-नई चीजों को सीखना, नई परिस्थितियों में खुद को ढालना सफलता का प्रमुख सबक है। अभ्यास के दौरान कभी-कभी नकारत्मक भाव आना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है किन्तु उसे स्वयं पर हावी होने देना सफलता की सबसे बड़ी बाधा है। आशावादी दृष्टीकोण को सदैव अपनी सांसो की रफ्तार के साथ रखना चाहिए। प्रेमचन्द ने कहा था कि, "चित्त से दृढ हो जाने वाला व्यक्ति चूने के फश के समान हो जाता है, जिसको बाधाओं के थपेड़े और भी मजबूत कर देते हैं। अभ्यास एक ऐसा गुण है जो उपलब्धियों एवं सफलताओं का रास्ता प्रशस्त करता है। जीवन में नित नई बातों को सीखना तथा उसका अभ्यास करते रहना जीवन की सतत प्रक्रिया है। कोई भी व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न नहीं होता और न ही ज्ञान का शमंडार लेकर पैदा हाता है। हर कोई निरंतर अभ्यास से अपनी कार्यकुशलता और ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करता है। इसीलिए तो कहा गया है कि, करत करत अभ्यात के ज्यति होत गुजान रयरी आवव जात प्रिल पर करत निशान।

अर्थात जब रस्सी को बार-बार पत्थर पर रहने से पत्थर पर निशान पछः सकता है तो, निरंतर

अभ्यास से मर्ख व्यक्ति भी बुद्धिमान बन सकता है।

निरंतर प्रयत्नशीलता और आलस्य का त्याग सफलता की कुंजी है। चारों तरफ फैले ज्ञान के खजाने को स्वयं में समेटने के लिए कुछ नया जानने की इच्छा और अभ्यास की प्रक्रिया को कभी थमने नहीं देना चाहिए। अपनी योग्यता पर विश्वास भी करना चाहिए किन्तु अतिविश्वास से भी दूर रहना चाहिए वरना खरगोश जैसी स्थिती बनते देर नहीं लगती। निरंतर प्रयत्न से अभ्यास का सकारात्मक फल मिलता है और कछुए की तरह कच्छप अवतार धारण कर सम्पूर्ण विश्व का भार उठाकर विश्व विजयी बन सकते हैं। जो ताउम्र सीखते हैं वही बुलंदियों पर पहुँचते हैं।

— अभिनव तिवारी
साफ्टवेयर इंजीनियर

गजल

वादा किया यार ने पांच वे दिन आने को,
किसी ने कह दिया जिंदगानी चार दिन की ।
वादा खिलाफत की हद है, हिसाब अपने दिल से लगा कर तो सोचो,
कयामत का दिन आ गया रफता रफता, मुलाकात को दिन बदलते बदलते ।
यू ही बेसबब न फिरा करो, किसी शाम घर भी मिला करो ।
वो गजल की सच्ची किताब है, उसे चुपके चुपके पढा करो ।
कभी हुस्र परदा नसीबी हो, जरा आशिकाना मिजाज में,
जो मैं बनकर सवर कर कहीं चलू, मेरे साथ तुम भी चला करो ।

गीत (हिमांचलपुरी)

हे जगत के स्वामी भेट धरु मैं क्या तेरी ।
माल नहीं संपति नहीं जिसको कान्हू मैं मेरी ।
यह तन मन धन होय न अपना है सब माल तुम्हारा ।
यौवन रूपा मूरख भूला भारी तुझ बिन और सहाय न मेरा ।
जब चाहे तबही तू लेवे नहीं कुछ जोर हमारा ।
चरण शरण निज अर्पण करके स्वामी दे दो भक्ति बिन देरी ।

— लाल बहादुर यादव
वरिष्ठ सहायक, थल प्रशिक्षण विभाग

मनोदैहिक पदार्थों का उपयोग और एंथिएटर्स पर इसके प्रभाव

1. हाल के दिनों में ड्रग्स के इस्तेमाल को लेकर काफी चर्चा हुई है। अधिकांश युवा पीढ़ी ड्रग्स के प्रभाव से अवगत है। लेकिन संभवतः इन जहरों के दीर्घकालिक प्रभावों को पूरी तरह से समझ नहीं पाया है। जबकि कुछ के कुछ ड्रग्स उपयोगकर्ताओं के—शरीर और दिमाग पर काफ़ बुरे, परिणाम होते हैं, और कुछ ऐसे भी होते हैं जो इसका प्रभाव महत्वपूर्ण समय पर पायलट के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं और इसका परिणाम अक्सर घातक हो सकता है।
2. साइकोएक्टिव पदार्थों के उपयोगरूका दुनिया भर में प्रसारं उनकी सामान्य उपलब्धता और नशे के आदी उपयोगकर्ताओं की लगातार बढ़ती संख्या विमाननरू सुरक्षा के लिए एक रूगंपीर चिंता. का विषय है उनके उपयोग – में .कारण से व्यवहारिक, संज्ञानात्मक और शारीरिक परिवर्तन हे ' हैं, जिससे पाइलट के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों और प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभावों को प्रकट करता है।
3. साइकोएक्टिव, जिसे साइकोट्रोपिक भी कहा जाता है, एक ऐसा शब्द 6 जो उन रासायनिक पदार्थों पर लागू होता है जा मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के काम करने के तरीके को प्रभावित करके किसी व्यक्ति, की मानसिक स्थिति को बदलते है घ इससे नशा हो सकता है, इसलिए अक्सर लोग साइकोएक्टिव ड्रग्स लेने का विकल्प चुनते है।
4. मनो-संक्रिय पदार्थों का उपयोग करने वाले लोगों द्वारा अनुभव किए. एक मस्तिष्क कार्य में परिवर्तन उनकी धारणाओं, मनोदेशाओं और / या चेतना कोरू प्रभावित करते हैं।
5. साइकोएक्टिव पदार्थ, कई दवाओं के साथ—साथ अल्कोहल, अवैध अ रू मनोरंजनात्मक दवाओं और. कुछ पौधों और यहाँ तक कि जानवरों में भी पाए जाते हैं। शराब और कैफीनरूभनोसंक्रिय दवाएँ है जिनका लोग आमतौर पर अपनी मानसिक स्थिति के बाद उपयोग करते हैं। ये दवाएं कानूनी रूपसे उपलब्ध है, लेकिन इनका उपयोग अधिक मात्रा में किया जाए तो यह दोनों शारीरिक, और मानसिक. रूप से हानिकारक हो सकती है।
6. एक साइकोएक्टिव दवा किसी भी दवा का वर्णन करती है:जो व्यवहार, मनोदशा, विचार या धारणा को प्रभावित करती है। यह कई अलग—अलग दवाओं के लिए एक छाला शब्द है। जिसमें नुस्खें वाली दवाएं और आमतौर पर दुरुपयोग करने वाली दवाएं भी शामिल है।
7. वे दवाएं मस्तिष्क के रसायनों यां न्यूरोट्रांसमीटर, जैसे डोपामाइन, गामां एमिनोब्यूट्रिक एसिड, नॉरनेफिन और सेरोटोनिन के स्तर को समायोजित करके काम करते है।

अ) शराब कैनाबिस मारिजुआना, एम डी एम एं, मेंथमफेटामाइन

ब) एन्टी-एनजाइटी एजेंट

स) एंटीडिप्रेसन्ट

ड) एंटीफिजुओट्रोपिक

इ) मूड स्टेबलाइजर

फ) स्टीमुलेन्ट्स

8. कुछ स्थितियों में मनोदैहिक दवाएं रोगों के उपचार के लिए शामिल की जाती हैं।

अ) एनजाइटी

ब) डिप्रेसन

स) सिजोफनिया

ड) बाइपोलर डिस्ऑर्डर

इ) स्लीप डिस्ऑर्डर

9. ये दवाएँ लक्षणों में सुधार के लिए न्यूरोट्रांसमिटर को बदले का काम करती हैं। प्रत्येक वर्ग थोड़ा अलग तरीके से काम करते हैं लेकिन उनमें कुछ समानताएं भी होती हैं।

10. मेथिलेडियोक्सी, मेथामफेटामाइन (एम डी एम ए) एक सिंथेटिक दवा है, जो मूड और धारणा आसपास की वस्तुओं और स्थितियों के बारे में जागरूकता को बदल देती है।

11. एम डी एम ए शुरू नाइट क्लब के दृश्य और पूरी रात नृत्य पार्टियों (रेक्स) में लोकप्रिय था, लेकिन ड्रग्स अब उन लोगों की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रभावित करती हैं जो –मतौर पर ड्रग्स एक्स्टसी या मौली को सेल करते हैं।

12. निष्कर्ष : काउंटर पर दवाएं आसानी से उपलब्ध होने के साथ-साथ उन लोगों के लिए भी उपलब्ध है, जो पैसे के लिए भी इस तरह के व्यवहार में लिप्त होना चाहते हैं। चिकित्सा समुदाय को ज्ञात है कि इनमें से कई ड्रग्स में वापसी के लक्षण और प्रभाव लंबे समय तक होते हैं, जब कोई उनका उपयोग करना बंद कर देता है। खासकर जब कोई गाड़ी चला रहा हो या पायलटिंग कर रहा हो, तो परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।

13. विमानन में ऐसी किसी भी गतिविधि के लिए कोई जगह नहीं है, खासकर जब दूसरों के जीवन जिम्मेदारी पायलट के पास हो।

– ग्रुप कैप्टन वी.के० सिंह

थल अनुदेशक



धर्म का सिद्धांत है, केवल कर्म करो, उसके परिणामों पर ध्यान मत दो. एकमात्र कर्म ही हमारा पथ-प्रदर्शक होना चाहिए. ईश्वर नहीं कहता कि कार्य करो या उसका त्याग करो; यह तो सब प्रकृति की क्रीड़ा है।

– लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

हँसो भी हँसो .. दिल खोलकर हँसो.....

- शिक्षक – संसार का सबसे पुराना जीव कौन सा है?
छात्र – सर, जेब्रा ... क्योंकि वो ब्लैक एण्ड हवाइट है।
डाक्टर – शराब पीते हो, तो कसरत करना भी बहुत जरूरी है।
शराबी – शराब के ठेके तक पैदल ही तो आता हूँ।
पिता – बेटा, अमेरिका में पन्द्रह साल में बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं।।
पुत्र – किन्तु पापा, अपने भारत में तो एक ही साल में बच्चे दौड़ने लगते हैं।
कोरोना –
○ अब नहीं बात कोई खतरे की ... अब सभी को सभी से खतरा है।
○ ये जो तुम मिलते फिरते हो हर किसी से हाथ ... ऐसा न हों कि धोना पड़े जिंदगी से हाथ।
○ कितना समय बदल गया है... पहले रामायण आने पर सड़कें खाली हो जाती थी ... आज सड़कें खाली कराने के लिए रामायण आ रही है। ... घर पर रहें, सुरक्षित रहें।
○ जीवन में आप कितने भी पोजिटिव हों लेकिन. वर्तमान –में आपकी रिपोर्ट निगेटिव होनी चाहिए।
○ पंखा बन्द करने के बाद एक मिनट 47 सेकेण्ड में रुकता है.... टाइमपास करो।
• अगर मेरा नाम मैं और तेरा नाम तू है तो बता पागल मैं हूँ या तू??
• अँग्रेजी केवल सीखने में कठिन है किन्तु पीने में बहुत ही आसान और ... पीने के बाद बोलना तो और ही आसान हो जाता है।
• कौरव सौ (100) भाई थे, जब सौवा बच्चा पैदा हुआ था तो पहले वाले की उम्र क्या थी?
• आत्महत्या दो तरह की होती है :- (1) गले में रस्सी डालो और पंखे से लटक जाओ (2) गले में वरमाला डालो और जिन्दगी भर लटकते रहो।
• कुम्भकरण को जगाने के लिए इतने प्रयत्न करने से बेहतर था... पंखा बन्द कर दो।
• आजकल कुछ लोग मुझसे डिजिटल नफरत करने लगे हैं, मुझे आनलाइन देखते ही आफलाइन हो जाते।
• शिक्षक – जूनियर और सीनियर में क्या फर्क होता है?
छात्र – सर, जो चिड़ियाघर के निकट रहता है उसे जूनियर और जो समुद्र के किनारे रहता है वह सीनियर होता है।
• शिक्षक – स्वर और व्यंजन में अन्तर बताओ?
छात्र – सर, स्वर मुँह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुँह के अन्दर जाते हैं।
• शिक्षक – वो कौन सा पक्षी है जिसके पँख तो होते हैं, पर वो उड़ नहीं सकता? 5 वि
छात्र – सर, मरा हुआ पक्षी।

– अवधेश कुमार गोस्वामी (सेवानि०)
जूनियर मकैनिक, अभियांत्रिकी विभाग

सुविचार पुष्प

- मनुष्य होना मेरा भाग्य है पर आप सबसे जुड़े रहना मेरा सौभाग्य है — किन्तु आपसे मैं कुछ सीख लूँ यह मेरा परम सौभाग्य है।
- सौभाग्य से जो प्राप्त होता है उसे सात पीढ़ी भोगती है, जो छीनकर हासिल होता है उसे सात पीढ़ी भुगतती है।
- पृथ्वी हर आदमी की जरूरत पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर आदमी की लालच को नहीं।
- जरूरी नहीं कि हर समय जुबां पर भगवान का नाम आए, वो लम्हा भी भक्ति का होता है—“जब इन्सान, इन्सान के काम आए।
- बिना हक के जब लेने का मन होता है, वहाँ “महाभारत” की शुरूआत होती है, जब छोड़ देने का मन होता है तो वहाँ “रामायण” की शुरूआत होती है।
- हे प्रभु! जब आप हमारी शंका दूर करते हैं तो “शंकर” लगते हैं, जब मोह दूर करते हैं तो कर लगते हैं, जब बिष दूर करते हैं तो “विष्णु” लगते हैं, जब श्रम दूर करते हैं तो “ब्रह्मा” लगते हैं, दुर्गति दूर करते हुए “दुर्गा” लगती हैं, किन्तु जब गुरुर दूर करते हैं तो “गुरुजी” लगते हैं।
- जिसके मन का भाव अच्छा होता है उसका हर काम अच्छा होता है।
- शान्ति कहाँ है? शान्ति—दरिद्र की दरिद्रता दूर करने में, भूखे को भोजन देने में, असहाय को सहाय देने में, दुःखी के आँसू पोंछने व सेवा करने से जीवन में शान्ति आती है और बार बार दुहराने पर. “परम शान्ति” प्राप्त होती है।
- संसार में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसका जहर उसके दाँतो में बाँतो में है।
- अपने काम से काम रखना ... दुनिया का सबसे मुश्किल काम है।
- कमियाँ सब में होती हैं, लेकिन नजर सिर्फ दूसरों में आती हैं।
- दामाद अच्छे हैं क्योंकि वो बेटी को खुश रखते हैं, लेकिन बेटे बुरे हैं क्योंकि वो. बहू को खुश रखते हैं। दुः-
- काँच पर पारा चढ़ाओं तो आइना (दर्पण) बनता है, किसी को आइना दिखाओ तो पारा (कोध) चढ़ता है।
- बहुत बड़ा फर्क है अहंकार और संस्कार में... अहंकार में हम दूसरों को झुकाकर खुश होते हैं और.. संस्कार में हम स्वयं झुक कर खुश होते हैं।
- दुनिया में सब चीजें मिल जाती हैं, केवल अपनी गलती ही नहीं मिलती।
- हम उन्हें रूलाते हैं जो हमारी परवाह करते हैं (माता, पिता, पत्नी), हम उनके लिए रोते हैं जो हमारी परवाह नहीं करते (औलाद) और हम उनकी परवाह करते जो हमारे लिए कभी नहीं रोयेंगे (समाज)।
- किसी को डर है कि ईश्वर देख रहा है, और किसी को भरोसा है कि ईश्वर देख रहा है।
- मूलों को क्षमा करने की क्षमता सिर्फ तीन में है रू— माँ, महात्मा और परमात्मा।
- बुराई को देखना और सुनना ही बुराई की शुरूआत है।
- विद्यावान की छोटी से बाँसुरी, धनवान के बाँस से बड़ी होती है।
- लोग बुरे नहीं होते, बस जब वो मतलब के नहीं. होते तो बुरे लगने लगते हैं।
- लोगों को तब फर्क पड़ना शुरू होता है, जब आपको किसी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है।
- स्वयं का के महसूस होना जीवित होने का प्रमाण है लेकिन दूसरों के दर्द भी महसूस करना इंसान होने का प्रमाण है।

— चन्द्रभूषण शर्मा
प्रभारी, बाउण्डेड स्टोर

पैसे का महत्व

जीवन में पैसे का बहुत महत्व है। पैसा एक ऐसी बहुमूल्य चीज है जो पल भर में किसी को भी रंक से राजा व राजा रो रंक बना सकता है। जीवन में पैसा कितना महत्वपूर्ण है इसे हम दो पहलुओं से समझ सकते हैं :-

1. पैसा ही सबकुछ है, पैसे के बिना कुछ भी नहीं।
2. पैसा ही सबकुछ नहीं।

एक कहानी के माध्यम से समझाता हूँ : "एक बहुत ही अमीर व्यक्ति जिसके पास किसी भी वस्तु की कोई कमी नहीं है, उसके पास दुनिया के सभी सुख हैं। वो व्यक्ति जब चाहे, जो चाहे, जहाँ चाहे कुछ भी खरीद सकता है। वो आदमी एक बार किसी जंगल में फँस जाता है। उस आदमी को प्यास लग जाती है, वहाँ आस पास पानी का कोई स्रोत भी नहीं था। काफी समय हो चुका था, धीरे धीरे व्यक्ति प्यास से अत्यन्त व्याकुल हो गया। सौभाग्य से एक राहगीर उधर से गुजर रहा होता है जिसके पास थोड़ा पीने योग्य पानी है। वो अभीर इंसान उससे याचना करता है कि वो थोड़ा पानी उसे पिला दे परन्तु राहगीर कहता है कि उसे अभी लम्बा सफर तय करना है इसलिए वो उसे पानी नहीं दे सकता।

प्यास के मारे व्यक्ति का बुरा हाल हो जाता है वो किसी भी कीमत पर पानी पीना चाहता है, अतः वो उस राहगीर को अपनी सारी दौलत देने को तैयार हो जाता है सिर्फ पानी के लिए और राहगीर मान जाता है।"

इस कहानी में पानी की प्यास ने एक ही क्षण में अमीर को रंक और.. राहगीर को अमीर बना दिया। अब अमीर आदमी को यह ज्ञात हो चुका था कि पैसा ही सबकुछ है जिससे हम कुछ भी, कहीं भी, कभी भी खरीद सकते हैं साथ ही उसे यह भी पता चल गया था कि पैसा ही सबकुछ नहीं है, क्योंकि अगर पैसा ही सबकुछ होता तो वो पानी के लिए अपनी सारी दौलत उस राहगीर को नहीं देता। ज्ञान, बेशक पैसे से हम कुछ भी खरीद सकते हैं परन्तु... कुछ ऐसी भी चीजें हैं जिन्हें हम पूरे जीवन भर की कमाई दौलत से भी नहीं खरीद सकते, जैसे माँ-बाप, बुद्धि, शान्ति, समझ, प्रतिभा, आदि आदि।

— अरुण कुमार मिश्र
लेखा विभाग



अतीत को देखते रहना व्यर्थ है, जबतक उस
अतीत पर गर्व करने योग्य श्रवित्य के निर्माण के लिये
कार्य न किया जाय।

- बाला बाब्रपत राय

मानव जीवन को श्रेष्ठ कैसे बनायें?

समुद्र के किनारे सैर करने जाना हो अथवा समुद्री यात्रा पर निकलना हो, पीने का साफ पानी साथ लेकर जाना पड़ता है। समुद्र में पानी की कमी नहीं है, लेकिन उसका पानी पीने योग्य नहीं, इस कारण समुद्र में मौजूद विशाल जल मनुष्य के लिए बेकार है।

कहने का तात्पर्य यही है कि जो वस्तु किसी के काम आए, चाहे वह कम मात्रा में ही क्यों न हो, महत्वपूर्ण होती है और जो वस्तु किसी के कुछ काम ही न आए वह अधिक मात्रा में उपलब्ध होने पर भी महत्वहीन अथवा यह कहें कि वह बेकार होती है। पैसे को ले लीजिए, कई लोगों के पास बहुत पैसा होता है, जबकि कई लोग ऐसे हैं जिनके पास बहुत कम होता है, या यह कहें कि जीवन यापन के लिए रोजाना संघर्ष करना पड़ता है। परन्तु जो लोग कम पैसा या साधन होने पर भी दूसरों की मदद करने को तत्पर रहते हैं वे सचमुच धन्य और प्रशंसा के पात्र हैं।

जबकि लोग समर्थ होते हुए भी किसी के काम नहीं आते य नहीं आ सकते, उनकी कैसी बड़ाई? वे प्रशंसा नहीं निंदा के लायक होते हैं। सद्गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही सब जगह सम्मान पाता है। दुर्गुणों से युक्त व्यक्ति कभी सम्मान नहीं पा सकता। जो लोग सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं अथवा अनुपयोगी कार्यों में लगे रहते हैं वे भी समाज व राष्ट्र के लिए बेकार हैं।

सत्य ही कहा गया है कि मनुष्य वैसा ही बनता है जैसे कि उसके विचार होते हैं। जैसे विचारों में हम डूबे रहते हैं, हमारा जीवन उसी ढांचे में ढल जाता है, जैसे ही आचरण होने लगते हैं, वैसे ही साथी मिलते हैं, उसी दिशा में जानकारी, रूचि तथा प्रेरणा मिलती है।

व्यक्ति के विचारों पर ही चरित्र और जीवन पूर्णरूप से अवलम्बित है अतः मनुष्य को चाहिए कि वह प्रतिदिन बुराई को खत्म करते हुए अधिक से अधिक भलाई करने का अभ्यास करना चाहिए तथा विचारशील व दृढ़ प्रकृति होकर तत्परता के साथ हृदय की समस्त बुरी आदतों व विचारों का त्याग करना चाहिए।

रामायण, महाभारत, गरुड़ पुराण आदि ग्रंथों में कई ऐसे कार्य बताये गये हैं जो हमें नहीं करने चाहिए। आइये जानते हैं –

1. संतान की अनदेखी करना : यदि कोई व्यक्ति संतान के पालन-पोषण में अनदेखी करता है तो संतान बिगड़ जाती है। जब घर के बड़ों की अनदेखी होती है तो संतान असंस्कारी हो सकती है, अतः माता-पिता को संतान के अच्छे भविष्य के लिए उचित देखभाल करनी चाहिए। संतान को अच्छे संस्कार मिले इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

महाभारत में महाराज धृतराष्ट्र इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं कि यदि संतान संस्कारी नहीं होती तो पूरे परिवार का भी नाश हो सकता है जैसे कौरव वंश का नाश हुआ और साथ ही साथ धृतराष्ट्र को भी अपमान का सामना करना पड़ा।

2. लालच करना : धन को जरूरत पर भी खर्च न करने या कंजूस होने पर धन की लालसा और अधिक बढ़ती है, व्यक्ति गलत कार्य भी कर सकता है।

लालच बुरी बला है, ये बात सभी जानते हैं। बड़ी-बड़ी मछलियां भी छोटे से मांस के टुकड़े के लालच में फंसकर अपने प्राण गवां देती हैं। इसी प्रकार इंसान भी धन के लोभ में फंसकर कई परेशानियों का सामना करता है।

3. दुष्ट लोगों के साथ रहना : अच्छी या बुरी संगति का असर हमारे जीवन पर होता है। यदि हमारी संगत गलत लोगों के साथ है तो कुछ समय तो सुख की अनुभूति होगी, लेकिन परिणाम बहुत बुरा हो सकता है। हमें बुरी संगति से बचना चाहिए।

इस बात के कई उदाहरण हैं, जहाँ दुष्टों की संगति में लोग बर्बाद हुए हैं, जैसे दुर्योधन के साथ कर्ण, रावण के साथ कुम्भकर्ण और मेघनाद आदि आदि। अतएव, हमें दुष्टों का साथ कभी भी नहीं करना चाहिए।

4. दूसरों का अहित : जो लोग स्वयं के स्वार्थ को पूरा करने के लिए दूसरों का अहित करते हैं ऐसे लोग स्वयं तो भयंकर फल प्राप्त करते ही हैं साथ ही परिवार को भी कष्ट भोगने पर विवश कर देते हैं।

राजा कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए कई प्रयास किए परन्तु अन्त में स्वयं ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। कहा भी गया है कि जो जैसा करेगा, उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा।

5. चुगुलखोरी : जिन लोगों की आदत दूसरों की चुगली करने की होती है ऐसे लोग दूसरों को परेशानियों में डाल कर स्वयं आनन्द उठाते हैं। ऐसे कार्य को पाप की श्रेणी में रखा गया है।

पुराणों में तो यह भी लिखा हुआ है कि ऐसे लोगों के यहाँ भोजन करने से भी बचना चाहिए।

अतः

मनुष्य जन्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए हमें अच्छी वृत्तियों का प्रतिदिन अभ्यास करते रहना चाहिए। जैसे श्रेष्ठ मनुष्यों के सम्पर्क में रहना, श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ना, श्रेष्ठ बातें सोचना, श्रेष्ठ कार्य करना, श्रेष्ठ घटनायें देखना और महत्वपूर्ण यह कि दूसरों में जो श्रेष्ठतायें हैं उनकी कद्र करते हुए अपना लेना चाहिए। ऐसा करने से वह दिनों दिन अधिक बलवान, श्रेष्ठ और बुद्धिमान बन जायेगा और उसका जीवन उज्ज्वल, शुद्ध, शांतिप्रद, आनन्दमय और मनोहर होगा तथा मनुष्यता की कसौटी पर खरा उतरेगा।

मनुष्य जन्म की बड़ाई देवता, ऋषि-मुनि, संतजनों ने की है इसलिए हमें इसकी कीमत समझनी चाहिए। मनुष्य जन्म पाकर भी जो लोग केवल मौजमस्ती में ही जिन्दगी को व्यतीत कर देते हैं उनका जन्म बेकार चला जाता है। इंशान (मनुष्य) और अन्य जीवधारियों में चार बातें समान हैं जैसेरू खाना-पीना, सन्तान उत्पन्न करना, जन्म और मृत्यु। केवल एक विशेष विशेषता के कारण इंसान दूसरे जीवों से अलग है और वह चिंतन-मनन की शक्ति। मात्र इसी वजह से हम मनुष्य हैं। अगर किसी इंशान में सोचने-समझने और अच्छाई-बुराई में भेद करने की शक्ति नहीं है तो वह मनुष्य शरीर में भी जानवर जैसा है।

वास्तव में होता यह है कि मानव शरीर प्राप्त होने के बाद हम इसकी हिफाजत नहीं कर पाते और न ही इसका मूल्य समझ पाते हैं। मनुष्य शरीर के आगे दुनिया की कोई भी वस्तु कीमती नहीं हो सकती परन्तु क्या हम इस जीवन दर्शन को जानते हैं या कभी जानने की कोशिश करते हैं, अगर नहीं तो हमारा जन्म लेना और पशु-पक्षियों के जन्म लेने में कोई अन्तर नहीं है।

सम्पूर्ण लेख पढ़ने के लिए आपको धन्यवाद।

— धर्मश कुमार गिरि
लेखाविभाग

भारत की डिजिटल वित्तीय प्रणाली की स्थिति युग का उदय

डिजिटल क्रांति की लहर पिछले एक दशक से पृथ्वी के समस्त महाद्वीपों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा अन्य वर्गों के क्रियाकलापों को परिणतकरती जा रही है।

इस क्रांति का श्रेय कुछ वर्षों पूर्व तक पश्चिम के देशों के खाते में ही जाता था अधिकांश डिजिटल उत्पादों के आविष्कार एवं विशेषाधिकार इन्हीं के पास होते थे। किन्तु समय के साथ कुछ एशियाई देशों ने डिजिटल क्रांति के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के तकनीकी आविष्कार में अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल कर रहे हैं। इनमें हमारा प्यारा भारत देश भी नए चमकते हुवे सितारे की भांति इस क्रांति को अपनी अभूतपूर्व छमता से नए नए अप्रतिशयित आयामों तक ले जाने में क्रियाशील है। उदाहरण के लिए जिस प्रकार से भारत के रियल टाइम पेमेंट एप न्च, तन्चलने ख्याती प्राप्त करी है और सिंगापुर, फ्रांस, यू.ए.ई तथा कई अन्य देशों ने इन डिजिटल प्रोडक्ट्स की खूबियों को देखते हुए इन्हें इस्तेमाल करने की इच्छा प्रकट की है, यह अपने आप में भारत के लिए एक गौरव पूर्ण उपलब्धि है क्योंकि इस क्षेत्र में केवल पश्चिमी देशों के कुछ एक कंपनियों का ही पूरी तरीके से एकाधिकार था।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने नोट बंदी के समय भारत को डिजिटल इकोनमी बनाने का संकल्प देश के समक्ष रखा था तो सायद ही किसी ने ये कल्पना की होगी के मात्र छै वर्षों के भीतर भारत डिजिटल वित्तीय लेनदेन करने वाले देशों में प्रथम स्थान हासिल कर लेगा।

आज डिजिटल पेमेंट सिस्टम का इस्तेमाल चाहे सरकारी हो या गैर सरकारी सभी तरह के संस्थानों द्वारा खूब होता है, आम जन मानस भी डिजिटल पेमेंट सिस्टम के सहूलियतों को देखते हुए डिजिटल वित्तीय लेनदेन को वरीयता देने में कोई कसर नहीं रख रहे हैं।

आज डिजिटल पेमेंट सिस्टम के इस्तेमाल में जबरदस्त उछाल के साथ-साथ डिजिटल वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में भी अप्रत्याशित बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। इन वित्तीय धोखाधड़ियों से बचने के लिए जनमानस को जागरूक करने हेतु भारत सरकार की तमाम वित्तीय संस्थानों द्वारा अलग अलग माध्यमों से जागरूकता अभियान लगातार चलाये जा रहे हैं। जिनको हम सभी को भली भांति पढ़ने, समझने और अभ्यास करके खुद को सुरक्षित और दूसरों को भी सावधान रखने की आवश्यकता है।

डिजिटल वित्तीय लेनदेन सुरक्षित रहे इसके लिए साइबर विशेषज्ञों द्वारा बताये गए कुछ मुख्य और आसान बिंदु इस प्रकार हैं-

1. अपने पिन और पासवर्ड किसी से भी शेयर ना करें और इनका इस्तेमाल करते समय कोई और न देख पाए। 2. कभी भी डिजिटल पेमेंट ट्रांजैक्शन हड़बड़ी में ना करें प्रत्येक पेमेंट इंस्ट्रक्शन को भलीभांति पढ़ और समझ कर पेमेंट ट्रांजैक्शन करें यदि कोई इंस्ट्रक्शन समाज में न अये या कोई शंका प्रतीत हो तो तुरंत पेमेंट ट्रांजैक्शन रद्द कर दे। 3. अपने मोबाइल, लैपटॉप या आईपैड जिनसे आप अक्सर वित्तीय लेनदेन करते हो वे सदैव पासवर्ड प्रोटेक्टेड रखें, अनावश्यक वेबसाइटों पर सर्फ न करें, अनावश्यक ऐप्स इंस्टॉल न करें तथा भली भांति सॉफ्टवेयर अपडेटेड रखें।

अंत में मेरा आप सभी पाठक गणों से यही विनम्र निवेदन है कि कृपया हर प्रकार के अपने छोटी या बड़ी वित्तीय लेनदेन हेतु डिजिटल पेमेंट माध्यम को पहली वर्थिता दे और देश की वित्तीय प्रणाली को शसक्त बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दे धन्यवाद।

सुनील कुमार
(आई.टी. सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर)

धर्म क्या है

धर्म शब्द संस्कृत की 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है धारण करना। परमात्मा की सृष्टि को धारण करने या बनाये रखने के लिए जो कर्म और कर्तव्य आवश्यक हैं वही मूलतः धर्म के अंग या लक्षण हैं। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं –

धृतिः क्षमा दमो स्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः । श्रीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥

विपत्ति में धीरज रखना, अपराधी को क्षमा करना, भीतरी और बाहरी सफाई, बुद्धि विचारों में लगाना, सम्यक ज्ञान का अर्जन, सत्य का पालन ये छरू उत्तम कर्म हैं और मन को बुरे कामों में प्रवृत्त न करना, चोरी न करना, इन्द्रिय लोलुपता से बचना, क्रोध न करना ये चार उत्तम अकर्म हैं।

अहिंसा परमो धर्मः सर्वप्राणभृतां वरः । तस्मात् प्राणभृतः सर्वान् न हिंस्यान्मानुषः कृचित् ॥

अहिंसा सबसे उत्तम धर्म है, इसलिए मनुष्य को कभी भी, कहीं भी, किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए।

न हि प्राणात् प्रियतरं लोके किञ्चन विद्यते । तस्माद् दयां नरः कुर्यात् यथात्मनि तथा परे ।

जगत् में अपने प्राण से प्यारी दूसरी कोई वस्तु नहीं है। इसीलिए मनुष्य जैसे अपने ऊपर दया चाहता है, उसी तरह दूसरों पर भी दया करे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरित मानस में धर्म और अधर्म को परिभाषित करते हुए लिखते हैं:—

परहित सरिस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहि अधमाई

किसी की भी मनसा वाचा कर्मणा मदद करना ही धर्म है और इसके विपरीत मनसा वाचा कर्मणा उसे सताना ही अधर्म है।

जिस परिवार एवं समाज में एकता है, सुमति है, वहाँ शान्ति है, समृद्धि है, सुख है, और जहाँ स्वार्थ की प्रधानता है वहाँ कलह है, संघर्ष है, बिखराव है, दुरुख है, तृष्णा है।

धर्म उचित और अनुचित का भेद बताता है। उचित क्या है और अनुचित क्या है यह देश, काल और परिस्थिति पर निर्भर करता है। हमें जीवनयापन के लिए आर्थिक क्रिया करना है या कामना की पूर्ति करना है तो इसके लिए धर्मसम्मत मार्ग या उचित तरीका ही अपनाया जाना चाहिए। सनातन धर्म के अनुसार—

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतरू । नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ।

यह शरीर नश्वर है, वैभव अथवा धन भी टिकने वाला नहीं है, एक दिन मृत्यु का होना ही निश्चित है, इसलिए धर्मसंग्रह ही परम कर्तव्य है।

— एस.बी. तिवारी
सहायक परिचालन अधिकारी

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी

इगुआ गान

इगुआ महान है।
उड्डयन की शान है।
हर हवाबाज़ का, यह
दिल है और जान है।
यह हमारा ध्येय हो,
कि कुछ नहीं अजेय हो।
हम उड़ें कुछ इस तरह
गगन पे भी विजय हो।
अध्ययन के कक्ष में, हों
या कि फिर उड़ान में,
हर उड़ान की सुरक्षा,
हो हमारे ध्यान में।
आओ लें शपथ कि, यूँ
आकाश में मडरायेंगे,
पक्षी भी हमारी दक्षता
के गीत गायेंगे।
नागरिक उड्डयन के
क्षेत्र में ऐलान है।
इगुआ महान है।
इगुआ महान है।

— कैप्टन जे.पी. शर्मा



निदेशक, सी.एफ.आई व गेस्ट वरिष्ठ महिला पायलटों के साथ पायलट अनुदेशकगण।





नागर विमानन सचिव
श्री राजीव बंसल
व
श्री पी.के. ठाकुर
उप महानिदेशक मोका
के साथ निरीक्षण करते हुए
निदेशक इगुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता



नागर विमानन सचिव
श्री राजीव बंसल
व
श्री पी.के. ठाकुर
उप महानिदेशक मोका
के साथ निरीक्षण करते हुए
निदेशक इग्रुआ श्री कृष्णन्दु गुप्ता



निदेशक के साथ अभियन्ता एवं पायलट गण



सुरक्षा अधिकारी व सुरक्षा गार्ड



इयुआ-जी.एम.आर. और राजीव गांधी नेशनल एविएशन यूनीवर्सिटी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित फायर फाइटर्स कोर्स के सभी कैडेट्स के साथ अनुदेशक





इयुआ जी.एम.आर. और एविएशन यूनिवर्सिटी के सम्मिलित उपक्रम में ट्रेनिंग पाने वाले फॉयर आपरेटर व अन्य फॉयर स्टॉफ



हेंगर में वायुयान पर अचानक निरीक्षण करते निदेशक



सलाहकार सिमुलेटर अभियंता व आई.टी. सिस्टम एडमिन



कैम के साथ
स्टॉफ



कैम के साथ
एम.एम. और
अभियन्तागण
व स्टॉफ



अतीत के झरोखे से



गणतंत्र दिवस पर भाषण
देते
निदेशक

थल अनुदेशक गण।



गणतंत्र दिवस के अवसर पर
एकत्रित जन



एविएशन फ्यूल स्टेशन कार्मिक (इण्डियन ऑयल द्वारा संचालित)



वायुयान की मार्शलिंग करता हुआ कर्मचारी



राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा जागरूकता माह अक्टूबर 2022 के अवसर पर सम्बोधित करते निदेशक इगुआ



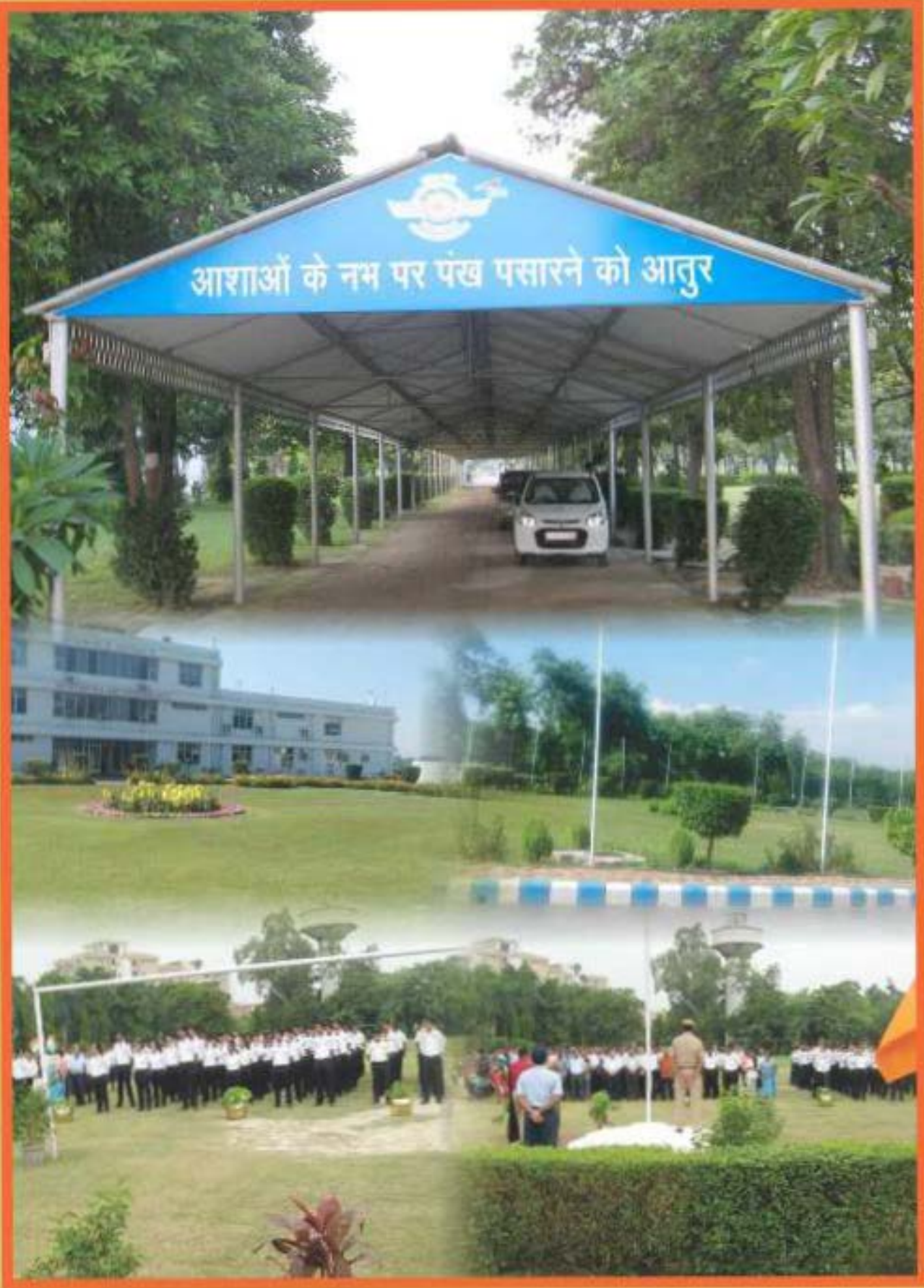
राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा जागरूकता माह अक्टूबर 2022 के अवसर एकत्रित जन



सहायक प्रशासनिक अधिकारी, वरिष्ठ सहायक और कनिष्ठ अनुवादक



इगुआ वायुयान बेड़ा





आज़ादी का अमृत महोत्सव

आशाओं के नभ पर पंख पसारने को आतुर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी

फुसतगंज - अगोठी